(A) डी.एड.पाठ्यक्रम के उद्देश्यों में निहित सिद्धांत

सिद्धांत– 1

छात्राध्यापक विषयों में निहित अवधारणाओं, जानकारी प्राप्त करने के तरीकों और उनकी संरचना को समझेंगे। वे सीखने के अनुभवों को इस प्रकार तैयार करेंगे कि विषय सीखना बच्चों के लिए अर्थपूर्ण गतिविधि होगा।

छात्राध्यापक बच्चों को सिखाए जाने वाले विषयों की मुख्य अवधारणाओं, मान्यताओं, विषय वस्तु के पक्ष एवं विपक्ष में प्रस्तुत किए जा सकने वाले तर्क से संबंधित जानकारी प्राप्त करने की विधियों एवं तरीकों के विषय में बच्चों की समझ बनाने में अपनी भूमिका समझ सकेंगे।

बच्चों की विषय संबंधी अवधारणात्मक समझ और गलत धारणाएँ ज्ञान के सीखने को कैसे प्रभावित करती है, छात्राध्यापक यह समझेंगे। छात्राध्यापक उनके विषय ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्र से जोड़ सकेंगे।

सिद्धांत– 2

छात्राध्यापक समझेंगे कि बच्चों का विकास कैसे होता हैं और वे कैसे सीखते हैं तथा बच्चों को सीखने के कैसे–कैसे मौके दिए जा सकते हैं जो उनके बौद्धिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास में मदद कर सकें।

छात्राध्यापक सीखना कैसे होता है, बच्चा ज्ञान का निर्माण कैसे करता है, कौशल कैसे अर्जित करता है और दिमागी आदतें कैसे विकसित होती हैं, यह समझेंगे साथ ही यह भी जानेंगे कि बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के निर्देश उपयोगी हैं। छात्राध्यापक बच्चों के सीखने की क्षमता पर प्रभाव डालने वाले शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक विकास को भी समझेंगे।

छात्राध्यापक अपेक्षित विकास की प्रक्रिया और शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक क्षेत्रों में वैयक्तिक अंतर की सीमा या फैलाव, से परिचित होंगे। वे सीखने की तैयारी का स्तर जान सकेंगे एवं एक क्षेत्र में विकास का दूसरे क्षेत्रों के प्रदर्शन या उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को समझ सकेंगे।

सिद्धांत– 3

छात्राध्यापक बच्चों के सीखने के अलग–अलग तरीकों को समझेंगे और सीखने की विभिन्नता को ध्यान में रखकर सीखने के अवसर तैयार कर सकेंगे। छात्राध्यापक ऐसे अपवादात्मक क्षेत्रों, जैसे सीखने में अक्षम, इंद्रियों द्वारा जानने में असमर्थ और शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर,बच्चों की समस्याओं से परिचित होंगे।

सिद्धांत– 4

छात्राध्यापक विभिन्न अनुदेशात्मक प्रविधियों को समझेंगे तथा उनका उपयोग छात्रों में समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान तथा उपलब्धि क्षमता/कौशल का विकास करने में सफल हो सकेंगे।

छात्राध्यापक सीखने से संबंधित विभिन्न संज्ञानात्मक संक्रियाओं को समझेंगे। (उदाहरण के लिए समालोचनात्मक और सृजनात्मक सोच, समस्या का स्वरूप तथा समस्या समाधान, अन्वेषण तथा प्रत्यास्मरण) और कैसे इन संक्रियाओं/प्रक्रियाओं से सीखने के लिये परिस्थितियाँ निर्मित की जा सकती है, समझेंगे।

सिद्धांत– 5

छात्राध्यापक शैक्षिक (सीखने के लिए) वातावरण निर्माण के लिए वैयक्तिक तथा सामूहिक प्रोत्साहन की समझ का उपयोग कर सकेंगे। जो सकारात्मक सामाजिक अंतःक्रिया, सीखने में सक्रिय भागीदारी तथा स्वप्रोत्साहन को बढ़ावा देगा।

छात्राध्यापक मनोविज्ञान, मानव विकास तथा समाज शास्त्र में निहित मानव प्रोत्साहन तथा व्यवहार संबंधित ज्ञान का प्रयोग ऐसी प्रविधियों के निर्माण में कर सकेंगे जो संगठन तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्य में सहायक हो।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार से समुदाय समूह में कार्य करता है तथा व्यक्तियों को प्रभावित करता है और यह भी समझेंगे कि कैसे व्यक्ति, समूह को प्रभावित करता है।

छात्राध्यापक जानेंगे कि कैसे जटिल सामुदायिक संरचना में व्यक्ति की सहायता करें जिससे वे एक–दूसरे के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य करें।

सिद्धांत– 6

छात्राध्यापक प्रभावशाली शाब्दिक, अशाब्दिक संवाद के ज्ञान का उपयोग कक्षा में छात्रों को सक्रिय खोजपरक, सहयोगात्मक तथा सामूहिक अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए करेंगे।

छात्राध्यापक संवाद (Communication) के सिद्धांत, भाषा विकास तथा सीखने में भाषा की भूमिका को समझेंगे। छात्राध्यापक समझेंगे कि कैसे संस्कृति और लिंगभेद कक्षा में बातचीत (Communication) को प्रभावित करते हैं। छात्राध्यापक शाब्दिक तथा अशाब्दिक संवाद के महत्व को जानेंगे।

सिद्धांत– 7

छात्राध्यापक सीखने–सिखाने की योजना का निर्माण, विषयवस्तु के ज्ञान, छात्र, समुदाय और पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के आधार पर करेंगे।

छात्राध्यापक में सीखने के सिद्धांतों, विषयवस्तु, पाठ्यचर्या निर्माण, ज्ञान के सृजन की समझ स्पष्ट होगी। साथ ही छात्राध्यापक यह भी जानेगे कि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस ज्ञान का उपयोग अधिगम योजना निर्माण में किस प्रकार कर सकते हैं।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार बच्चों की व्यक्तिगत रुचि, आवश्यकता, अभिवृत्ति और सामुदायिक संसाधन का उपयोग शिक्षण योजना निर्माण में किया जाए ताकि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों एवं बच्चों के अनुभवों के मध्य प्रभावशाली सेतु का निर्माण हो।

सिद्धांत– 8

छात्राध्यापक सीखने वाले के सामाजिक एवं शारीरिक विकास और निरंतर बौद्धिक विकास को सुनिश्चित एवं मूल्यांकित करने हेतु औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन प्रविधियों को समझेंगे और उपयोग करेंगे।

छात्राध्यापक बच्चे किस प्रकार सीखते हैं, का मूल्यांकन, वे क्या जानते हैं ? और क्या कर सकते हैं ? किस प्रकार के अनुभव उनके आगे के विकास एवं वृद्धि के लिए सहायक होंगे के आकलन के गुण ,उपयोग, लाभ और सीमाओं को समझेंगे।

सिद्धांत–9

छात्राध्यापक कला के बुनियादी सिद्धान्तों से परिचित होंगे। जिससे उन्हें अपनी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारने में मदद् मिलेगी। वे महानतम धरोहरों से परिचित होंगे ताकि अपने परिवेश की उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन कर सकें।

(B) प्रवेश पात्रता

स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर दिनांक 31 जनवरी 2008 की अधिसूचना क्रमांक एफ 6–2/08/20 राज्य शासन एतद् द्वारा प्रवेश में डाईट/बी.टी.आई. /महाविद्यालयों /संस्थाओं में द्विवर्षीय डी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए नियम (छत्तीसगढ़ राजपत्र)।

(C) प्रशिक्षण अवधि

प्रशिक्षण अवधि दो शैक्षणिक वर्षों की होगी। दोनों सत्र 1 जुलाई से 30 जून तक के होंगे। प्रत्येक सत्र के कार्यों के दिनों की संख्या कम से कम 240 होगी जिसमें प्रथम वर्ष 60 कार्य दिवस (तथा 40 दिवस शालानुभव की तैयारी हेतु 120 दिसव सैद्धांतिक पढ़ाई तथा शेष दिवस प्रायोजना कार्य करने एवं परीक्षा हेतु) एवं द्वितीय वर्ष 65 कार्य दिवस शाला अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राध्यापक चयनित शाला में संलग्न होंगे। संस्था में अध्यापन का समय प्रति दिवस पूर्वान्ह 10 बजे से अपरान्ह 6 बजे तक का होगा जिसमें 1 घण्टा भोजन अवकाश एवं 15–15 मिनट के दो लघु अवकाशों का प्रावधान होगा। अध्यापन हेतु व्याख्यान विधि का उपयोग न्यूनतम होगा। छात्राध्यापक स्वयं अध्ययन कर तथ्यों को जाँचेंगे एवं समूह चर्चा द्वारा स्वयं के लिए निष्कर्ष निकालेंगे। ग्रंथालय का उपयोग अधिक होगा छात्राध्यापक आवश्यकता अनुरूप इंटरनेट का भी उपयोग करेगे।

(D) मूल्यांकन योजना–

डी.एड. नवीन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक मूल्यांकन एवं सैद्धांतिक परीक्षा की योजना निम्नानुसार होगी –

डी.एड. प्रथम वर्ष

क्र	विवरण		अंक
1.	व्यावहारिक, मूल्यांकन –		
	1.1.शाला अनुभव कार्यक्रम	आंतरिक मूल्यांकन	100 अंक
		बाह्य मूल्यांकन	100 अंक
		कुल	***200 अंक***
	1.2 कम्प्यूटर ज्ञान आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	50 अंक
		बाह्य मूल्यांकन	50 अंक
		कुल	***100 अंक***
2.	सैद्धांतिक परीक्षा कुल प्रश्न पत्र .6		
	प्रत्येक प्रश्नपत्र के अंक 80 – (6 X 80)		480 अंक
	प्रत्येक प्रश्न पत्र में आंतरिक मूल्यांकन अंक 20 (6 X 20)		120 अंक
			600 अंक
महायोग			**900 अंक**

डी.एड. द्वितीय वर्ष

क्र.	विवरण		अंक
1.	व्यावहारिक, मूल्यांकन –		
	1.1.शाला अनुभव कार्यक्रम	आंतरिक मूल्यांकन	100 अंक
		बाह्य मूल्यांकन	100 अंक
		कुल	***200 अंक***
	1.2 कम्प्यूटर ज्ञान आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	50 अंक
		बाह्य मूल्यांकन	50 अंक
		कुल	***100 अंक***
2.	सैद्धांतिक परीक्षा कुल प्रश्न पत्र .6		
	प्रत्येक प्रश्नपत्र के अंक 80 – (6 X 80)		480 अंक
	प्रत्येक प्रश्न पत्र में आंतरिक मूल्यांकन अंक 20 (6 X 20)		120 अंक
			600 अंक
महायोग			**900 अंक**

2. सैद्धांतिक परीक्षा

डी.एड.प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	आंतरिक मूल्यांकन	न्यूनतम उत्तीर्णांक	सैद्धांतिक परीक्षा	न्यूनतम उत्तीर्णांक	योग	विशेष
पहला	ज्ञान,शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र	20	10	80	40	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा ।
दूसरा	बाल विकास और सीखना	20	10	80	40	100	
तीसरा	शाला व समुदाय	20	10	80	40	100	
चौथा	कला शिक्षण	20	10	80	40	100	
पांचवां	गणित व गणित शिक्षण	20	10	80	40	100	
छठवां	भाषा व भाषा शिक्षण	20	10	80	40	100	
योग		**120**	**60**	**480**	**240**	**600**	

डी.एड.द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	आंतरिक मूल्यांकन	न्यूनतम उत्तीर्णांक	सैद्धांतिक परीक्षा	न्यूनतम उत्तीर्णांक	योग	विशेष
सातवां	गणित व गणित शिक्षण	20	10	80	40	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
आठवां	शिक्षा दर्शन –व्यक्ति सीखना व शिक्षा	20	10	80	40	100	
नवम्	भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण	20	10	80	40	100	
दसवां भाग 1	भाषा (द्वितीय भाषा अंग्रेजी) व भाषा शिक्षण	10	05	40	20	50	
दसवां भाग 2	भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत) व भाषा शक्षण	10	05	40	20	50	
ग्यारहवां	पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान शिक्षण	20	10	80	40	100	
बारहवां	आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा	20	10	80	40	100	
योग		**120**	**60**	**480**	**240**	**600**	

1. सैद्धांतिक विषयों की मुख्य परीक्षा मण्डल द्वारा प्रत्येक सत्र के अन्त में होगी। मण्डल द्वारा प्रत्येक मुख्य परीक्षा के परिणाम के बाद उसी सत्र के लिए एक अनुगामी परीक्षा होगी।
2. प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्न पत्र में आंतरिक मूल्यांकन हेतु 20 अंक एवं बाह्य मूल्यांकन (मण्डल द्वारा) में प्रति विषय 80 अंक होंगे। बाह्य मूल्यांकन के अंतर्गत प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 घण्टे का होगा।
3. सैद्धान्तिक विषयों में आन्तरिक मूल्यांकन के पीछे दृष्टि यह है कि छात्राध्यापक दी गई विषयवस्तु और पठन सामग्री के आधार पर अपने अनुभवों को मिलाकर सोचने के लिए तैयार हो। स्वयं सोचने लगे। समस्याओं पर अपनी दृष्टि और विचार विकसित कर सके। इन आन्तरिक मूल्यांकन को लेकर कुछ बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।

- कुछ प्रायोजनाएँ नमूना मात्र हैं। हम ऐसा मानते हैं कि आन्तरिक मूल्यांकन के लिए प्रत्येक छात्राध्यापक को स्वयं इन इकाइयों की विषयवस्तु पर आधारित आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजना खुद बनानी होगी।
- आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजना प्रत्येक छात्राध्यापक की अलग–अलग हो सकती है। यानी किसी एक डाइट में पढ़ाने वाले छात्राध्यापक की प्रायोजना उसके या किसी दूसरे डाइट में पढ़ाने वाले से भिन्न हो सकती है अर्थात् प्रत्येक छात्राध्यापक को भी स्वविवेक से भी प्रायोजना बनानी है।
- डी.एड़. के पाठ्यक्रम में इन आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजनाओं का प्रत्येक वर्ष में एक ही होना अनिवार्य नहीं है। हर वर्ष ये अलग–अलग हो सकती हैं अर्थात ऐसा नहीं माना जाए कि इस वर्ष में प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को जो प्रायोजना दी गई है। वही अगले वर्ष प्रवेश लेने वाले प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को भी दी जाए।

- प्रत्येक छात्राध्यापक अपने कोर्स के दौरान अपने तरीके से इनके बारे में सोचे प्रायोजना ऐसी हों जो कि अध्याय की विषयवस्तु के आधार पर सोचकर जबाव देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करे न कि अध्याय की विषयवस्तु रटकर। सिर्फ ऐसे सवाल ही नहीं हों जिनके जबाव सिर्फ अध्याय की विषयवस्तु को पढ़कर दिए जा सकें। अर्थात् अध्याय से विकसित दृष्टि और अपने अनुभव के आधार पर जबाव देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करे।
- प्रत्येक प्रायोजना छात्राध्यापक लगभग 1000 शब्दों में तैयार करे।

परीक्षा में श्रेणियां निम्नांकित आधार पर दी जाएंगी–

1. **व्यावहारिक परीक्षाः** विशेष योग्यता – 80 प्रतिशत या उससे अधिक।
   प्रथम श्रेणी – 70 तथा 70 प्रतिशत से अधिक ।
   द्वितीय श्रेणी – 50 तथा 50 प्रतिशत से अधिक तथा 70 से कम।

2. **सैद्धांतिक परीक्षा :** विशेष योग्यता – 80 प्रतिशत या उससे अधिक।
   प्रथम श्रेणी – 70 तथा 70 प्रतिशत से अधिक ।
   द्वितीय श्रेणी – 50 तथा 50 प्रतिशत से अधिक तथा 70 से कम।

सैद्धांतिक, व्यावहारिक एवं प्रायोगिक विषयों में अनुत्तीर्ण होने की दशा में –

1. सैद्धांतिक परीक्षा के भाग का महायोग 50 प्रतिशत से कम होने पर प्रशिक्षणार्थी को उन सभी प्रश्न पत्रों में जिनमें प्राप्तांक 50 प्रतिशत से कम होंगे पुनः परीक्षा देनी होगी। पुनः उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक विषय में 50 प्रतिशत अंक पृथक–पृथक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
2. पुनः परीक्षा में प्रशिक्षणार्थी **केवल स्वाध्यायी छात्र की हैसियत से** प्रविष्ट हो सकेगा और पूर्व में नियमित प्रशिक्षणार्थी के रूप में प्राप्त आन्तरिक मूल्यांकन का लाभ उसे उन विषयों में मिल सकेगा।

व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होने की दशा में–

1. यदि कोई प्रशिक्षणार्थी प्रथम वर्ष के प्रथम अवसर के व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होता है तो उसे द्वितीय अवसर में पुनः व्यावहारिक मूल्यांकन की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सम्मिलित होना पड़ेगा।

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप (सैद्धांतिक परीक्षा)
पूर्णांक – 80 समय –3 घण्टा

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	तर्क /कारण से संबंधित प्रश्न	8	6	कम से कम 50 शब्दों में	3	18
ब	समझ से संबंधित प्रश्न	10	6	कम से कम 150 शब्दों में	5	30
स	विश्लेषणात्मक प्रश्न	7	4	कम से कम 250 शब्दों में	8	32
योग		**25**	**16**		**16**	**80**

1. व्यावहारिक मूल्यांकन – दो समूहों में विभक्त किया गया है–

1.1. शाला अनुभव कार्यक्रम – आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा)

1.2. कम्प्यूटर ज्ञान आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा)

1.3. एक दिन में एक बाह्य परीक्षक द्वारा 20 छात्राध्यपकों की परीक्षा ली जाएगी।

1.1 शाला अनुभव कार्यक्रम

क्र.		विषय	अंक	आंतरिक / बाह्य मूल्यांकन
अ	1.	**1. प्रधान अध्यापक द्वारा मूल्यांकन** :– 10 दिवसीय कार्यक्रम, छात्राध्यापकों के व्यवहार तथा छात्राध्यापकों के 50 दिवसों के कार्यों के आधार पर।	25	आंतरिक मूल्यांकन
	2.	**2. डाइट पर्यवेक्षक द्वारा मूल्यांकन** (शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान)– छात्राध्यापकों के द्वारा प्रथम 10 दिनों के दौरान किए गए अवलोकन के प्रस्तुतीकरण। 50 दिनों के शिक्षण कार्य तथा बच्चों के साथ अंतः क्रिया के आधार पर।	25	आंतरिक मूल्यांकन
	3	**3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर मूल्यांकन** :– :– प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रथम एवं द्वितीय शाला अनुभव कार्यक्रम में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण। अभ्यास शाला में किए गए शिक्षणकार्य, अवलोकन कार्य, खेलकूद संचालन, मध्यान्ह भोजन तथा अन्य कार्य।	50	आंतरिक मूल्यांकन
ब	1	10 दिवसीय शाला अवलोकन एवं 50 दिवसीय शिक्षण अनुभव के समय प्रशिक्षार्थी द्वारा भरे प्रपत्र एवं सत्र भर छात्राध्यापक द्वारा किए कार्यों के प्रस्तुतीकरण के आधार पर।	20	बाह्य मूल्यांकन
	2	प्रशिक्षार्थी द्वारा निर्मित दैनिक शिक्षण योजना व क्रियान्वयन डायरी पर चर्चा एवं सत्र भर छात्राध्यापक द्वारा किए कार्यों के प्रस्तुतीकरण के आधार पर।	60	बाह्य मूल्यांकन
	3	खण्ड अ के क्र. 1, 2, व 3 पर आधारित मौखिक परीक्षा	20	बाह्य मूल्यांकन
		कुल	**200**	

1.2 कम्प्यूटर ज्ञान आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन

कम्प्यूटर शिक्षा डी.एड. प्रथम वर्ष

कम्प्यूटर शिक्षा प्रथम वर्ष		
इकाई	विषयवस्तु/पाठ के नाम	(अंक 50) एवं कालखण्ड 35
1	कम्प्यूटर का परिचय	**(कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो. 05 अंक) कालखण्ड 05**
	कम्प्यूटर का परिचय, कम्प्यूटर के उपयोग,कम्प्यूटर के प्रमुख भाग, हार्ड डिस्क, सी.डी. /डी.वी.डी. पेन ड्राइव का सामान्य परिचय, प्रिंटर का सामान्य परिचय, कम्प्यूटर परिचय, कम्प्यूटर आपरेटिंग सिस्टम का सामान्य परिचय।	
2	वर्ड प्रोसेसर	**(कुल 10 अंक सैद्धान्तिक 05 एवं प्रायोगिक 05 अंक) कालखण्ड 05**
	खोलना, लेटर लिखना, टेक्स्ट को सलेक्ट/कापी/डिलीट/बोल्ड/अंडरलाइन/ इटालिक करना वर्ड को प्रारंभ करना, नया डाक्यूमेंट बनाना एवं सेव करना, पहले से सेव किए गए डाक्यूमेन्ट को, फॉन्ट बदलना, अन्डू करना, साधारण टेबल बनाना	
3	प्रजेंटेशन	**(कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो.05 अंक) कालखण्ड 05**
	प्रजेंटेशन को प्रारंभ करना, नया प्रजेंटेशन बनाना, डिजाइन टेम्पलेट उपयोग करना, बुलेट एवं नंबरिग, नया स्लाइड जोड़ना, स्लाइड डिलीट करना, बीच में स्लाइड जोड़ना, स्लाइड में इमेज का उपयोग करना, प्रजेंटेशन विधि तरीके से प्रिंट करना।	
4	स्प्रीडशीट	**(कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो.05 अंक) कालखण्ड 10**
	स्प्रीडशीट की विशेषताएँ, स्प्रीडशीट को प्रारंभ करना, संख्या को फार्मेटिंग करना, सेल को कापी/ पेस्ट करना, फोंट बदलना, सार्ट करना, रो इंसर्ट करना, कॉलम इंसर्ट करना, रो/सेल डिलीट करना।	
5	इन्टरनेट, ई–मेल एवं विविध	**(कुल 10 अंक सैद्धान्तिक 05 एवं प्रायोगिक 05 अंक) कालखण्ड 10**
	इन्टरनेट का संक्षिप्त परिचय, इंटनेट ब्राउज करना। इंटरनेट का शैक्षिक उपकरण के रूप में, इंटरनेट का उपयोग दैनिक जीवन में (न्यूज पेपर, रेलवे टाइमटेबल आदि..) ई–मेल आईडी बनाना (याहू एवं जी–मेल), ई–मेल में अटैचमेंट भेजना एवं ई–मेल से अटैचमेंट डाउनलोड करना।	

कम्प्यूटर शिक्षा डी.एड. द्वितीय वर्ष

कम्प्यूटर शिक्षा द्वितीय वर्ष		
इकाई	विषयवस्तु / पाठ के नाम	(अंक 50) एवं कालखण्ड 35
1	मल्टीमीडिया एवं शैक्षिक सी.डी.	**(कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो.05 अंक) कालखण्ड 05**
	माइक्रोसाफ्ट पेंट में नया फाईल बनाना, चित्रों के कलर, कोण, साईज, कट , कापी पेस्ट करना। कम्प्यूटर के स्क्रीन का स्कीन शाट लेना। प्रोजेक्ट कार्य – इसकी सहायता से शैक्षिक सहायक सामग्री बनाना। मल्टीमीडिया सी.डी. का इंस्टालेशन, डेक्कटाप पर प्रोग्राम का शार्टकट बनाना एवं विभिन्न विषयों से संबंधित सी.डी. को चलाना, प्रोजेक्ट कार्य – लर्निंग स्टेशन विधि से चयनित विषयों से संबंधित पाठ्यपुस्तकों में से प्रत्येक के एक–एक अध्याय का मल्टीमीडिया सी.डी. के साथ मैपिंग तथा इसके आधार पर पाठ प्रदर्शन।	
2	**वर्ड प्रोसेसर**	**(कुल 06 अंक सैद्धा. 03 एवं प्रायो.03 अंक) कालखण्ड 05**
	जिगसॉ विधि द्वारा वर्ड प्रोसेसर के एडिट एवं इंसर्ट, फार्मेट एवं टेबल के विभिन्न अवयवों का अध्ययन एवं अभ्यास करना। मेल मर्ज, स्पेलिंग एवं ग्रामर, डाक्यूमेंट को पासवर्ड के द्वारा सुरक्षित करना, आटो ठेक्स्ट, आटो करेक्ट एवं थैसारस का उपयोग करना, आटो शेप्स एवं वर्ड–आर्ट का उपयोग । प्रोजेक्ट कार्य डी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत किये जाने वाले प्रोजेक्ट वर्क को वर्ड प्रोसेसर में उपरोक्त विशेषताओं का उपयोग करते हुये आकर्षक बनायेगे।	
3	**प्रजेंटेशन**	**(कुल 06 अंक सैद्धा. 03 एवं प्रायो.03 अंक) कालखण्ड 05**
	जिगसॉ विधि द्वारा प्रजेंटेशन के एडिट एवं इंसर्ट , फार्मेट एवं स्लाइड शो के विभिन्न अवयवों का अध्ययन एवं अभ्यास करना। स्लाइड में चित्रों, विडियो एवं हाइपरलिंक का उपयोग करना। प्रोजेक्ट कार्य – विषय में निहित अवधारणाओं के विकास हेतु आकर्षक प्रजेंटेशन तैयार करना।	
4	**स्प्रेडशीट**	**(कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो.05 अंक) कालखण्ड 05**
	स्प्रेड शीट में गणितीय, तार्किक, एवं सांखिकीय फार्मूला का उपयोग करना, कालम के आधार पर डाटा सार्ट करना, फिल्टर, पिवोट टेबल,सब टोटल, रो एवं कालम को रोटेट करना, पेस्ट स्पेशल का उपयोग। जिगसॉ विधि द्वारा स्प्रेड शीट के एडिट एवं इंसर्ट, फार्मेट एवं डाटा के विभिन्न अवयवों का अध्ययन एवं अभ्यास करना । प्रोजेक्ट कार्य : 1. अभ्यास शाला के बच्चों का प्रारंभिक रिकार्ड बनाना (छात्र का नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, प्रवेश क्रमांक, कक्षा) 2. अभ्यास शाला के विद्यार्थियों का प्रत्येक अथ्यास पाठ के बाद ग्रेडिग कर रिकार्ड तैयार करना।	

5	**इंटरनेट ई–मेल एवं विविध (कुल 10 अंक सैद्धा. 05 एवं प्रायो.05 अंक) कालखण्ड 05**
	शैक्षिक उपकरण के रूप में टीचरट्यूब, यू–ट्यूब, विकी–पीडीया का उपयोग करना। शैक्षिक सामग्रियों का इंटरनेट से डाउनलोड करना। IGNOU, NCERT, NEUPA, VYAPAM, SCERT, CGBSE, TBC, APF, CIEFL, VIPNET, BARC, TIFR, RIE, NCTE, UNESCO, JNU,DEP-SSA, EKLAVYA, DIGANTAR, PRATHAM, OXFORD, CAMBRIDGE के वेबसाईट को सर्च करना, सामान्य परिचय प्राप्त करना, एवं आवश्यकतानुसार सामग्री डाउनलोड करना। डाईस की सहायता से अपने स्कूल का रिपोर्ट कार्ड निकालना। प्रोजेक्ट कार्य : 1. गूगल की सहायता से किसी अंग्रेजी सामग्री का अनुवाद करना। 2. प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिये संदर्भ सामग्रियों का संकलन तैयार करना। 3. अपना ई – मेल से संस्था के ई–मेल में अटैचमेंट भेजना तथा अपने ई–मेल में
6	हार्डवेअर **(कुल 08 अंक सैद्धा. 04 एवं प्रायो.04 अंक) कालखण्ड 10**
	कम्प्यूटर के विभिन्न भागों (हार्ड डिस्क, रैम, मदर बोर्ड, बैटरी, एस एस पी एस एस, फैन, सीडी / डीव्हीडी ड्राइव) की पहचान करना तथा इनके कनेक्शन को समझना। कम्प्यूटर फॉर्मेट करना, पार्टीशन करना। विन्डो, ऑफिस, एन्टीवायरस तथा मल्टीमीडिया सॉफ्टवेअर को इंस्टॉल एवं अनइंस्टाल करना। प्रोजेक्ट कार्य – जिले के उच्च प्राथमिक शालाओं में स्थापित कम्प्यूटर केन्द्र में कम्प्यूटर्स का निरीक्षण तथा आवश्यक सॉफ्टवेअर इंस्टाल करना।

डी.एड.प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – प्रथम

ज्ञान, शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र

उद्देश्य –

1. ज्ञान और शिक्षा के संबंध के सवालों को समझने के लिए जिज्ञासा पैदा करना और उन पर समझ बनाना।
2. ज्ञान की प्रकृति को समझना । उनके सृजन, निर्माण ,जाँच और जीवन में स्थान के बारे में समझना।
3. ज्ञान,शिक्षाक्रम और शिक्षण शास्त्र के बारे में छात्रों के मन में कोई व्यवस्थित वैचारिक का बनाना जिससे वे इन सवालों पर अपना मत बना सकें ।

ज्ञान, शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र		
क्र.	पाठ / विषयवस्तु के नाम	कुल अंक 80 कालखण्ड 120
1	**विषय प्रवेश**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20**
	अपनी स्कूली शिक्षा पर विचार । आदर्शों को पढ़ना। अध्ययन सामग्री –तोतोचान ,समरहिल,दिवास्वप्न यात्स्नाया पोल्याना। ज्ञान व शिक्षा की एक झलक।	
2	**ज्ञान के प्रकार**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20**
	आम बोलचाल की भाषा में ज्ञान शब्द और उनके पीछे अवधारणा। कौशल व व्यावहारिक ज्ञान,परिचयात्मक ज्ञान,तथ्यात्मक ज्ञान ,वर्णनात्मक ज्ञान में अन्तर संबंध। कौशल (करने) को तथ्यात्मक ज्ञान मे तब्दील करने की सम्भावनाएँ/आवश्यकता /संबंध । ज्ञान के प्रकारों पर विमर्श का शिक्षा से संबंध।	
3	**ज्ञान और प्रमाण**	**(कुल 10 अंक) कालखण्ड 20**
	शिक्षा और ज्ञान। ज्ञान और प्रमाण। प्रत्यक्ष/अनुमान /उपमान/शब्द।	
4	**ज्ञान की शर्ते**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20**
	प्लेटो,दकार्त,जॉनलॉक,बर्कले,कांट । ज्ञान की शर्तें।	
5	**ज्ञान के स्वरूप**	**(कुल 10 अंक) कालखण्ड 20**
	गणित /विज्ञान/सा.विज्ञान/इतिहास/सौन्दर्यबोध /नैतिक समझ/दर्शन की प्रकृति । भाषा /कौशल । विद्यालय के विषय और ज्ञान का स्वरूप।	

6.	ज्ञान और शिक्षाक्रम	(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20
	शिक्षाक्रम की जरूरत। शिक्षाक्रम की अवधारणा। पाठ्यक्रम की अवधारणा। शिक्षाक्रम निर्माण की समस्याएं। शिक्षाक्रम के चुनाव के आधार।	

संदर्भ–

दिवास्वप्न – गिजू भाई
समरहिल – ए.एस.नील
लेव टॉल्सटॉय की शिक्षाशास्त्रीय रचनाएँ – टॉल्सटॉय
तोतोचान – तेत्सुको कुरोयानागी
ज्ञान मीमांसा –प्रो.दयाकृष्ण
द प्राब्लम्स ऑफ फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
दर्शन एक सरल परिचय –प्रो.राजेन्द्र स्वरूप भटनागर
भारतीय दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 – डॉ. राधाकृष्णन
पाश्चात्य दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 प्रो.दयाकृष्ण
भारतीय दर्शन एक परिचय – दत्त एवं चटर्जी
फिलॉसॉफी ऑफ वेस्टन फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
शिक्षा और समझ – रोहित धनकर
फिलॉसॉफी ऑफ प्रायमरी एज्युकेशन – आर.एफ.डियड्रेन
मेडीटेशन्स – देकार्त
अनुभववाद – राजेन्द्र प्रसाद
फिलॉसॉफी ऑफ हयूमन लर्निंग – क्रिस्टोफर
फिलॉसॉफी ऑफ पॉलिसी मेकिंग – क्रिस्टोफर

आतंरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

1. मान लीजिए, आप एक स्कूल आरम्भ करने जा रहे हैं। एक स्कूल कहलाने के लिए क्या–क्या होना अनिवार्य है ? क्या नहीं होने से वह स्कूल नहीं होगा ? अपने स्कूल की अवधारणा को तर्क सहित बताएँ।
2. अपने आसपास के समुदाय से कौशलात्मक ज्ञान के तीन उदाहरण चुनिए। उन कौशलों में निपुण एक–एक व्यक्ति के साथ बात करके पता लगाइए कि उन्होंने ये कौशल कैसे अर्जित किए ? उनके अर्जित करने के तरीके और अध्याय में वर्णित अर्जित करने के तरीकों का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए साथ ही यह भी देखिए कि वह व्यक्ति कौशल सीखने को कितनी बारीकी से बता पाता है और बताने में क्या छूट जाता है ?
3. यदि ज्ञान प्राप्त करने के साधनों में सिर्फ शब्द प्रमाण तक ही सीमित कर दिया जाए तो ज्ञान पर इसका क्या असर पड़ेगा ? हमारे स्कूलों में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं पर इसका क्या असर पड़ेगा ? ऐसा कौन सा ज्ञान है जो इसके अन्तर्गत नहीं आ पाएगा ?
4. यदि प्रत्येक व्यक्ति यह मानने लगे कि वह जिन चीजों को सत्य मानता है वही सत्य है, दूसरे चाहे कुछ भी मानते रहें। यदि ज्ञान को लेकर हरेक व्यक्ति ऐसा विचार रखने लगे तो इसकी क्या समस्याएँ होंगी ?
5. अपने रोजमर्रा के जीवन में हम जिन चीजों, विश्वासों, मान्यताओं, विचारों को सही मानते हैं उनकी सूची बनाएं । यदि संदेह की विधि को इन पर लागू करें तो कौन सी चीजें, विश्वास, मान्यताएँ और विचार ज्यादा टिकाऊ होंगं और कौन से ऐसे होंगे जिन्हें सत्य मानने में समस्या महसूस होगी?

प्रश्न पत्र –द्वितीय

बाल विकास और सीखना

उद्देश्य–छात्राध्यापक –

1. बच्चों व बचपन के बारे में आम धारणाओं की समीक्षा कर पायें।
2. बच्चों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक व बौद्धिक पहलुओं को समझें।
3. सीखना क्या है तथा हम कैसे सीखते हैं, इस पर विचार करें ।
4. बच्चों में सोचने की क्षमता का विकास कैसे होता है– सोचने की प्रक्रिया समझें ।
5. बालविकास से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों से परिचय पायें और शिक्षण कार्य में उनकी प्रासंगिकता को देख पायें।
6. बच्चों का अध्ययन कैसे किया जाता है इसके तरीकों से पहचान बनायें।
7. विभिन्न क्षमता व अभिरूचि वाले बच्चों के लिए कक्षा में कैसे जगह बनाएं यह समझें।

बाल विकास और सीखना				
क	पाठ / विषयवस्तु	कुल अंक 80 कालखण्ड 120		
1	**बच्चों एवं बचपन के बारे में हमारी धारणाओं की समीक्षा**	हमारे विचार, बच्चों के साथ काम करने वाले विद्वानों के विचार– गिजुभाई, जॉन होल्ट, ए.एस.नील आदि	9	14
		बच्चों के अधिकार बचपन के बारे में धारणाएं समाज में कैसे निर्मित होती हैं		
2	**बाल विकास परिचय**	विकास की अवधारणा विकास की अवस्थाए– गर्भावस्था, शैशवास्था, प्रारंभिक व उत्तर बाल्यावस्था, किशोरावस्था	15	24
		शारीरिक, संज्ञानात्मक , सामाजिक , संवेगात्मक विकास		
		विकास को प्रभावित करने वाली बातें –प्रकृति एवं पोषण, निरंतरता व अनिरंतरता, प्रारंभिक एवं परवर्ती (बाद के) अनुभव		
		बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि		
		बच्चों का अध्ययन कुछ तरीकों से परिचय		
3.	विकास के पहलू– (क) **शारीरिक व गत्यात्मक विकास, शारीरिक नियंत्रण व समन्वयन का विकास** (ख) **संवेगात्मक एवं नैतिक विकास विकास**	कुछ सामान्य सिद्धांत	17	24
		शरीर के अंगों का अनुपात में बदलाव, ऊँचाई व वजन की वृद्धि, शारीरिक बनावट में बदलाव		
		नियंत्रण का विकास (स्थूल एवं सूक्ष्म)		
		शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाली बातें – पोषण, पर्यावरण के साथ क्रिया		
		संवेगात्मक विकास		
		नैतिक विकास (विद्यालय एवं गृह निर्माण वातावरण, मित्र समूह एवं वयस्कों के साथ संबंध बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्तित्व का विकास एवं समाजीकरण		

4.	**सीखना एवं संज्ञान का विकास**	सीखना क्या है और बच्चे कैसे सीखते हैं? विविध धारणाओं की समीक्षा – व्यवहारवादी, संरचनावादी, सामाजिक संकल्पनाएं संज्ञान क्या है? बच्चों की सोच पर जीन पियाजे के विचार ज्ञान का निर्माण के तरीके स्कीमा Schema, सम्मिलन Assimilation, समायोजन Accomodation व्यवस्थापन Organization संतुलनीकरण Equilibration वयस्क व्यक्ति की सोच के लक्षण (What is mental operation) शैशव अवस्था में किशोरावस्था तक सोच का विकास व उसकी कड़ियाँ सेसरी ,मोटर ,प्री आपरेशन , क्रांकीट आपरेशन, फार्मल आपरेशन पियाजे के सिद्धातों का शैक्षणिक महत्व लेव वैगोत्सकी रचनावाद निकट विकास क्षेत्र (ॅच्क्द्ध स्केफोल्डिग शिक्षक की भूमिका	17	24
5.	**खेल तथा विकास में खेल का महत्व**	खेल की परिभाषा । खेल का मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण। वाय्गोट्सकी ढ़ांचे में खेल का स्थान। खेल का विकास मार्ग। खेल एक प्रमुख गतिविधि। खेल की समृद्धि। विकास में खेल की भूमिका।		
6.	**विशेष आवश्यकता वाले बच्चे**	विशिष्ट बच्चों से अभिप्राय। क्षति,अपंगता ,एवं अक्षमता। विभिन्नताओं में समानता। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कार्य ।	11	18

संदर्भ–

माता पिता के प्रश्न– गिजु भाई

दिवा स्वप्न– गिजु भाई

समरहिल – ए.एस.नील

अनारको के आठ दिन–सत्यु

पिप्पी लंबे मोजे–

तोत्तोचान–

बच्चे असफल कैसे होते हैं –जॉन होल्ट

DECE -I VOL-I I & III IGNOU-

Child development (11th edition) (अनुवादित)-John w Santrock

S.K. Mangal

Child development(6th edition) (अनुवादित)-Elizabeth B Hurlock, Tata Macgrow Hill Publication Co.ltd.2007

Child development 7th edition (अनुवादित)--Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
Educational- Psychology Santrock,
Child development 2nd edition (अनुवादित)-- Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
John W Santrock Child development Tata Mac Graw Hill Pub.Co.ltd. (अनुवादित)-
विकास में खेल का महत्व & IGNOU
DECE-3 बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम भाग 1 व 2, IGNOU

आतंरिक मूल्यांकन –20 अंक (कुछ उदाहरण)

1. कम से कम दो बच्चों का पारिवारिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर अध्ययन।
2. किसी एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामाजिक संयोजन का अध्ययन।
3. बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों में सहभागी बन विश्लेषण करें जिसमें गत्यात्मक कौशल, खेल के दौरान प्रयोग की गई भाषा ,समूह रचना तथा नियमों को बनाना, पालन करना, जेन्डर व्यवहार, खेल गीत का उल्लेख हो ?

प्रश्न पत्र –तृतीय
शाला और समुदाय

उद्देश्य –

1. राज्य में व्याप्त सामाजिक व्यवस्था को समझना और उसके संदर्भ में शिक्षा व शाला की भूमिका को देख पाना।
2. बहुलता व विविधता के संदर्भ में समावेशी शाला की भूमिका को समझना।
3. समाज में व्याप्त जाति, वर्ग व लिंग भेद के चलते संवैधानिक उद्देश्यों की पूर्ति में शाला की भूमिका को समझना।
4. शिक्षा व समाज में संबंध देख पाना।
5. विभिन्न समाजों में बच्चों की शिक्षा की विभिन्न व्यवस्थाएँ होती हैं इस बात को समझना ।
6. आधुनिक शाला का औद्योगिक व लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में भूमिका देख पाना।
7. आधुनिक शाला के समक्ष चुनौतियों को समझना।
8. क्या शाला समाज में व्याप्त भेदभावों को बरकरार रखने में मदद करता है?
9. क्या शाला बच्चों की स्वतंत्रता व सृजनशीलता को नष्ट करके एक आज्ञाकारी नागरिक बनाता है? इसे समझना ।
10. क्या शाला समुदाय की सांस्कृतिक विरासत को नकार कर एक कृत्रिम संस्कृति थोपता है?
11. वैकल्पिक शाला की कल्पना करना।
12. भारत में शाला का इतिहास व कल्पना ।
13. अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा की व्यवस्था समझना।
14. अंग्रेजों के समय की शाला समझना।
15. गांधी जी की बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) की अवधारणा को समझना।
16. कोठारी कमीशन की कल्पना को समझना।
17. वर्तमान शाला व्यवस्था में विविधता– शासकीय, निजी, प्रायोगिक शालाएँ और उनमें विभेद को समझना

18. शाला को समुदाय से जोड़ने के अनुभवों की समीक्षा करना।
19. पंचायती राज को जानना ।
20. पी.टी.ए. शाला विकास समिति आदि के अनुभव।
21. पालक किन शर्तों पर शाला से जुड़ेंगे ,समझना।
22. माताओं की विशेष भूमिका को समझना।

शाला और समुदाय		
कमांक	विषयवस्तु/पाठ के नाम	कुल अंक 80 एवं कालखण्ड 120
	समाज में विविधता , असमानता, व भेदभाव (जाति, लिंग व धर्म के आधार पर) **(कुल 18 अंक कालखण्ड 30)**	
1	प्रायोगिकः किसी भी स्कूली कक्षा में उपलब्ध विविधता का दस्तावेजीकरण और उससे शिक्षण कार्य में क्या समस्याएँ होंगी व क्या फायदे होंगे....किस तरह की विविधताएँ हैं – क्षमता, रुचि, जाति, धर्म, भाषा, लिंग, उम्र, आवास, वर्ग, शारीरिक बनावट, कुशलता आदि इनका कक्षा में तथा सीखने में क्या उपयोग है यह समझना (डी.एड. कक्षा के शिक्षकों व छात्रों में जो विविधता है उस पर केन्द्रित चर्चा)	
	संसाधन (जमीन, पूंजी आदि) तक पहुँच में असमानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, खाद्य सुरक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों में गहरी असमानता	
	लिंग के आधार पर भेदभाव लिंगभेद की अवधारणा – जन्मजात व समाज द्वारा निर्मित अंतर...	
	जातिगत आधार पर भेदभाव	
	आदिवासी समाज	
2.	**संवैधानिक उद्देश्य व असमानता व भेदभाव**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20**
	उद्देशिका का अध्ययन	
	मौलिक अधिकार सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका व महत्व	
	अ. समान अवसर व प्रतिष्ठा का अधिकार	
	ब. व्यक्तिगत स्वतंत्रता व विकास के मौके	
	स. निःशुल्क शिक्षा का अधिकार	
	द. लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी पर प्रभाव	
	य. इन दुष्प्रभावों को कम करने में सार्वभौमिक शिक्षा की भूमिका	
3.	**असमानता का शिक्षा पर प्रभाव**	**(कुल 18 अंक) कालखण्ड 30**

	पलायन : जीविका के लिए पलायन कौन करते हैं, कब व किस प्रकार करते हैं– बच्चों व उनकी शिक्षा पर उसका प्रभाव, प्रवासी बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था।	
	बाल श्रमिक : बाल श्रमिकों को शाला कैसे लाएँ, विभिन्न प्रयासों की समीक्षा	
	लड़कियों की शिक्षा के प्रति समुदाय का नजरिया, व्यावहारिक कठिनाइयाँ. व उन्हें दूर करने के प्रयास	
	दलित शिक्षा : भेदभाव की वास्तविकता	
	जनजातीय शिक्षा : भाषा व संस्कृति का अलगाव	
4.	**अंग्रेजी शासन काल में शिक्षा व्यवस्था** (कुल 13 अंक) कालखण्ड 20	
	देशज शिक्षा व्यवस्था किन लोगों के लिए उपलब्ध थी, किस तरह वहां पढ़ाई– लिखाई होती थी और स्कूली शिक्षा का पाठ्यक्रम कैसे निर्धारित होता था	
	ब्रिटिश शासन व्यवस्था के दोनों पक्षों को – शिक्षा के अवसरों की समानता के आधार पर विस्तार और साथ ही वफादार नागरिक बनाने और इसके जरिये उपनिवेशवादी शासन को बनाये रखने की नीयत की बात होगी।	
	मैकॉले मिनिटस्/वुडस डिस्पेच और उसका विश्लेषण	
5.	**वैकल्पिक सोच व प्रयोग** (कुल 8 अंक) कालखण्ड 10	
	टैगोर व कृष्णमूर्ति के विचार : मातृ भाषा शिक्षण, शिक्षा का सांस्कृतिक व दार्शनिक पक्ष	
	गांधी जी की बुनियादी शिक्षा : उत्पादक श्रम व	
6.	**शाला के कामकाज में समुदाय की भूमिका** (कुल 8 अंक) कालखण्ड 10	
	पालक समितियों का अनुभव	
	पालकों से अपेक्षा	
	पालक क्यों जुड़ें?	

संदर्भ–

एन.सी.ई.आर.टी., कक्षा 6–हमारा राजनैतिक व सामाजिक जीवन – अध्याय 1 विविधता की समझ , अध्याय 2 विविधता व भेदभाव

एन.सी.ई.आर.टी., कक्षा 12 समाजशास्त्र अध्याय 5 सामाजिक विषमता व बहिष्कार के स्वरूप

भला ये जेंडर क्या है ? – कमला भसीन

भारतीय समाज (एस.सी. दुबे), एन.बी.टी. का अध्याय वर्ण व जाति

भारतीय इतिहास के स्रोत (शीरीन रत्नागर) का अध्याय – काडर

संविधान की प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी., भारत का संविधान : सिद्धांत और व्यवहार, भारतीय संविधान में अधिकार , अध्याय 2 एवं 3

भारत – विकास की दिशाएं अमर्त्य सेन

छत्तीसगढ़ में मौसमी उत्प्रवास – वाय.जी.जोशी की अध्ययन रपट

दलित आदिवासी और स्कूल समावेश का रपट

शिक्षा कार्य और अधिकार–विमला रामचन्द्रन

सोश्यल इम्पलीकेशन्स ऑफ स्कूल, पृष्ठ 72–88 – अविजीत पाठक

स्टडीज इन हिस्ट्री ऑफ एज्युकेशन, समानता, गुणवत्ता विस्तार : दुराग्रही त्रिकोण – जे. पी. नाईक

गुलामी की शिक्षा और राष्ट्रवाद – कृष्णकुमार

टैगोर व कृष्णमूर्ति के विचार

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा

जॉन होल्ट के विचार – शिक्षा के बजाए

राज, समाज और शिक्षा – कृष्णकुमार

कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन स्कूल्स– आर. गोविंदा एवं रश्मि दीवान

आंतरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

1. अपने गाँव /मोहल्ला/नगर के भौगोलिक कारकों का शाला के शिक्षण कार्यो पर प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
2. समुदाय के शाला से प्रत्यक्षतः जुड़ने से शैक्षिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव पर विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
3. शाला के शैक्षिक गुणवत्ता के विकास में पंचायत प्रतिनिधियों की भूमिका का शाला प्रबंधन के संदर्भ में अध्ययन ।
4. कक्षा मूल्यांकन समिति का विद्याथियों के मूल्यांकन कार्य में प्रत्यक्ष सहभागिता से बच्चों में परीक्षा के भय के प्रभाव का अध्ययन।
5. शिक्षक पालक समिति की नियमित बैठक से शाला प्रबंधन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
6. बच्चों में पढ़ाई के प्रति लगाव उत्पन्न करने में माता –पिता की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन।
7. कम से कम 5 पालकों से (महिला व पुरुष से अलग–अलग बातचीत करके) शिक्षा से उनकी अपेक्षा समझना, उनके बच्चों की खास बातें व कमजोरियों को समझना।

प्रश्न पत्र –चतुर्थ

कला व कला शिक्षा

उद्देश्य –

1. छात्राध्यापको को कला शिक्षण के कुछ बुनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना ताकि वह अपने छात्र–छात्राओं में कलात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे सकें।
2. छात्राध्यापकों की अपनी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारना ताकि कला की विभिन्न विधाओं के प्रति उसकी झिझक टूटे। चित्रकला, नाटक, मूर्तिकला– इनमें से किसी एक विधा में विशेष हुनर हासिल करें।
3. छात्राध्यापकों को भारत तथा विश्व की कलात्मक धरोहरों से प्रारंभिक परिचय कराना ताकि वह उत्कृष्ठ कलाकृतियों का रसास्वादन कर सके।
4. छात्राध्यापकों को अपने ही परिवेश की सांस्कृतिक व सौन्दर्य की धरोहरों को पहचानने व रसास्वादन में मदद करना।
5. छात्राध्यापकों की सृजनशीलता को नए आयाम देना– ताकि कबाड़ या कचरे से सुन्दर चीजें बनाने, कक्षा या शाला को सौन्दर्यबोध के साथ सजाने आदि की ओर प्रेरित हों।

कला व कला शिक्षा			
क	पाठ के नाम /विषयवस्तु	कुल अंक 80 एवं कालखण्ड 120	
1	**कला क्या है – कला शिक्षण का उद्देश्य क्या है**	**(कुल 13 अंक कालखण्ड 20)**	
	कला क्या है ।		
	कला शिक्षण क्यों		
2	**प्रारंभिक अभ्यास**	**(कुल 10)अंक कालखण्ड 15**	
	गीत गाना ,अभिनय करना, चित्र बनाना व मूर्तिगढ़ना –प्रारंभिक अभ्यास		
3	**कबाड़ से सुन्दर चीजें बनाने का अभ्यास**	**(कुल 10 अंक), कालखण्ड 15**	
	स्थानीय सामग्री से खिलौने बनाना। (आरेगामी, मिट्टी ,बाँस,घास आदि के खिलौने)		
4	**बच्चों में चित्रकला का विकास**	**(कुल 13 अंक,) कालखण्ड 20**	
	बच्चों में चित्र कला का विकास		
5	**नाटक व कठपुतली**	**(कुल 13 अंक)कालखण्ड 20**	
	नाटक		
	नाटक एवं कठपुतली नर्तन		
	बाल नाटकों का मंचन व समीक्षा		
	कठपुतली		
6	**भारतीय कला – लोक कला व व्यावसायिक कला**	**(कुल 13अंक)कालखण्ड 20**	
	लोककला व व्यावसायिक कला		
	भारतीय कला		
	लोक कला व व्यावसायिक कला		
	भारत व विश्व की सांस्कृतिक धरोहरों से परिचय		
7	**रिपोर्ट तैयार करना**	**(कुल 08 अंक) कालखण्ड 10**	
	स्थानीय वास्तुशिल्प ,चित्रकला ,लोक गीत ,नाटक,प्राकृतिक सौन्दर्य से परिचय		
प्रोजेक्ट : अपनी कक्षा व शाला को साफ व सुन्दर बनाना, खुद से छात्र–छात्राओं की मदद से ।			

संदर्भ–

- रवीन्द्रनाथ टैगोर
- शिक्षा का वाहन कला देवी प्रसाद अध्याय 1 और 2
- कला का सार .प्राण नाथ मागो एक परिपेक्ष्य(एन.बी.टी.दिल्ली)
- बालकों की सृजनात्मक क्षमता की हत्या गिजुभाई अध्याय 1
- गिजूभाई ,प्राथमिक... अध्याय 3 तथा फैजडल अलकाजी, रंगबिरंगा –रंगमंच(एन.बी.टी.दिल्ली)
- कबाड़ से जुगाड़, गुरूजी विष्णु चिंचालकर के लेख
- शिक्षा का वाहन –देवी प्रसाद अध्याय 3,4 और 5 गिजु भाई ,प्राथमिक..अध्याय 2.
- आओ चित्र बनाए–कैरन हैडाक
- ड्रामा विथ चिल्डन–सारा फिलिप्स,शिक्षा में सृजनात्मक नाटक एवं कठपुतली नर्तन (एन.बी.टी.दिल्ली) हमारा नाटक– हरिकृष्ण देवसरे (एन.बी.टी.दिल्ली)
- चित्र लक्षण –मुल्कराज आन्न्द (सी.सी.आर.टी.)
- भारत की समकालीन कला –प्राणनाथ मागो अध्याय 2 और 5
- दी पैंटेड वर्लड ऑफ वर्लीज यशोधरा डाल्मिया अंमित अध्याय जिव्या ललित कला अकादमिक दिल्ली
- 10 उत्कृष्ट फिल्मों का अवलोकन व उनकी समीक्षा भारत व विश्व के सांस्कृतिक धरोहरों (सी.सी. आर.टी.)
- स्थानीय वास्तुशिल्प ,चित्रकला, लोक गीत नाटक,प्राकृतिक सौन्दर्य से परिचय तथा उनका आनंद लेना।

आतंरिक मूल्यांकन – 20 अंक **कुछ उदाहरण**

स्थानीय सामग्री से खिलौना बनाना। (मिट्टी ,बांस,घास आदि के खिलौने)

आरेगामी की प्रोजेक्ट फाइल बनाना।

स्थानीय कलाओं की जानकारी एकत्र करना तथा उसके ऐतिहासिक संदर्भ को लिपिबद्ध करना।

स्थानीय समस्या पर नाटक बनाकर प्रस्तुत करना ।

स्थानीय कला कृतियों का निर्माण ।

प्रश्न पत्र –पाँचवाँ

गणित एवं गणित शिक्षण

उद्देश्य

1. यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को सेवा पूर्ण प्रशिक्षण में गणित की प्रकृति समझने तथा दैनिक जीवन में गणित की महत्ता एवं विशेषताओं को समझना।
2. गणितीय अवधारणाओं की समझ कैसे विकसित होती है यह समझना।
3. पाठ्यक्रम को पूरा करते समय शिक्षक किसी बच्चे को तथा उसके शैक्षिक विकास के चरणों को समझ सकेंगे तथा यह तय कर पाएँगे कि प्राथमिक गणित की विभिन्न अवधारणाओं को किस स्तर पर, किस तरह पढ़ाया जाए। इसे समझना।
4. बच्चे कैसे सीखते हैं तथा उनकी गणितीय सोच को विकसित करने के लिए कैसे उनकी मदद की जा सकती है, इसे समझना।
5. गणित सीखने में खेलों की भूमिका तथा सीखने में मदद करने वाले अन्य वैकल्पिक तरीकों को समझना। अवधारणाओं को सीखने की उपयुक्त रणनीति के साथ, संख्या की अवधारणा, स्थानीय मान, गणितीय संक्रियाएँ तथा स्थान संबंधी अवधारणाओं की विस्तृत चर्चा की गई है तथा अवधारणाओं को सीखते समय हम जिन समस्याओं से जूझते हैं उन्हें समझने तथा उनके उपचार के तरीकों को समझना।

	गणित एवं गणित शिक्षण	
	कुल 120 **कालखण्ड एवं 10 दिवस परियोजना कार्य** के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम	
क.	**विषयवस्तु / पाठ के नाम**	**(कुल अंक 80 एवं कालखण्ड 120)**
1	**बेकसूर गणित**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 24**
	गणित क्या है, कहाँ से आया है? : चारों ओर गणित – क्या हमारी सभी गतिविधियों में गणित शामिल है? – मनोरंजन के लिए गणित एवं वैदिक गणित।	
	सीखने वालों को पहचानें : बच्चों की सोच – बच्चे कैसे सीखते हैं? गणित सीखना – अपना–अपना तरीका – गणित की भाषा – अपने पर भरोसा – लगातार विकास – संक्रियात्मक अवस्थाएँ – हर बच्चा अनूठा।	
	सीखने वालों के बारे में विचार : सीखने वालों के बारे में विचार – क्या बच्चे बड़ों की नकल करके सीखते हैं? – क्या बच्चे खाली स्लेट हैं? – क्या बच्चे सीखने को उत्सुक हैं? – कुछ और उदाहरण भारतीय गणितज्ञ	
2	**जड़ में है : गिनती**	**(कुल 12 अंक) कालखण्ड 16**
	गिनना कैसे सिखायें? : गिनती का मतलब – अनुभव से अवधारणा तक गिनती।	
	इकाई, दहाई और आगे ..... : बुनियादी समझ – संक्रियाएँ लगाने में दिक्कतें – स्थानीय मान क्या है?	
3	**पहला और आखिरी गणित**	**(कुल 14 अंक) कालखण्ड 22**
	जोड़ना और घटाना : जोड़ने का मतलब – घटाने की समझ– जोड़ने और घटाने का संबंध – एल्गोरिदम का इस्तेमाल – अंदाज लगाना	
	गुणा और भाग करना : परिचय–गुणा करने से पहले गुणा की समझ– पहाड़े या तोता रटंत? – गुणा का एल्गोरिदम – भाग का मतलब– भाग का एल्गोरिदम	

4	**टुकड़े या पूरे** (कुल 15 अंक) कालखण्ड 26	
	किस पूर्ण के हिस्से? : परिचय – आधारित यानि कितना ? पूर्ण और पूर्ण के टुकड़े	
	भिन्न की किस्में : परिचय–भिन्न की तस्वीर बनाना– भिन्नों का मापन एवं भिन्नों का पैमाना – जटिल भिन्न	
	दशमलव : परिचय– भिन्नों के लिए दस का पैमाना– दशमलवों का गणित	
5	**जगह की समझ** (कुल 14 अंक) कालखण्ड 20	
	जगह की समझ : बन्द आकृतियाँ – सममतल सतह – सम आकृतियाँ–सममित आकृतियाँ	
	कोण नापना : कोण क्या होता है? – कोण मापना	
	मापन की शुरूआत : लम्बाई मापना– गैर मानक और मानक इकाइयाँ – मानक इकाइयाँ – उप–इकाइयाँ और मिश्रित इकाइयाँ – क्षेत्रफल का अर्थ क्या है – क्षेत्रफल मापना	
6	**बच्चे और गणित** (कुल 10 अंक) कालखण्ड 12	
	बच्चों की गणित सीखने में मदद : परिचय – बच्चे की पृष्ठभूमि के आधार पर आगे बढ़िए – संबंध जोड़ना – अ–भा–चि–प्र – खेल–खेल में सीखना – सीखने में मददगार अन्य तरीकें – जरूरी नहीं कि दोहराव उबाऊ हो – बच्चे एक दूसरे से सीखते हैं – ग़लतियाँ उपयोगी होती हैं	
	कक्षा का कामकाज : परिचय – गणित सीखना : आइए, थोड़ा दोहराएँ – शिक्षण योजना – योजना क्यों बनाएँ? – योजना कैसे बनाएँ? – अलग–अलग स्तरों की योजना – साल की योजना – इकाई की योजना – पाठ की योजना – सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का मूल्यांकन	

संदर्भ–

- इग्नू की शिक्षक संदर्शिका –AMT-01 खण्ड 1
  - AMT-DI
  - LMT खण्ड 6
  - NCF 2005
  - AMT-01 खण्ड 1
  - AMT-01 खण्ड 2
  - AMT-01 खण्ड 2 ,ईकाई 7 एवं 8
  - LMT-01 खण्ड 2 ईकाई 07
  - AMT-01 खण्ड 4 ईकाई 12,
  - AMT-01 खण्ड 5 ईकाई 16
  - LMT-01 खण्ड 3 ईकाई 08
  - LMT-01 खण्ड 1 ईकाई 04

आंतरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

(1) दृश्य एवं अन्तःक्रियात्मक उपकरण/ स्क्रेप बुक (खेल, पजल्स, पहेलियाँ) तैयार करना।

(2) प्रश्न–पत्र बनाना, परीक्षा लेना तथा मूल्यांकन करना, बच्चों द्वारा की गई गलतियों का विश्लेषण उनकी समझ को जानने के लिए करना।

(3) प्राथमिक कक्षाओं की किसी एक गणित पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करना।

(4) Activity sheets तैयार करना।

(5) अपने स्कूल परिसर का नक्सा बनाना, आस –पास के चीजों को संकेतों से व्यक्त करना।

प्रश्न पत्र –छठवां

भाषा एवं भाषा शिक्षण

उद्देश्य

1. भाषा की इंसान के जीवन में भूमिका को समझ पाना।
2. बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? सीखने की प्रक्रिया को कौन–कौन से घटक प्रभावित करते हैं? भाषा सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका क्या है? इन बिन्दुओं पर समझ बनाना।
3. भाषा के सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं को समझना, यह समझना कि क्या–क्या इनके निहितार्थ हैं।
4. भाषा में मूल्यांकन का उद्देश्य क्या होना चाहिए और मूल्यांकन करने का क्या तरीका होना चाहिए इस पर अपनी समझ बनाना।

भाषा एवं भाषा शिक्षण		
क्र.	विषयवस्तु / पाठ के नाम	कुल अंक 80 एवं कालखण्ड 120
1	**भाषा एवं मानव का संबंध**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 25**
	जीव विज्ञानी – इंसान और जानवर की भाषा में फर्क / कारक, क्यों है? सामाजिक –इंसानी विचार की संरचना में भाषा की भूमिका –;पद्धभाषा एवं विचार;पपद्धभाषा एवं ज्ञान;पपपद्धभाषा एवं अस्तित्व	
2	**बच्चों की भाषाई विकास की प्रक्रियाः–**	**(कुल 12 अंक)कालखण्ड 15**
	भाषा विकास के चरण । बच्चे स्कूल आने से पहले क्या–क्या सीख कर आते हैं। बच्चे भाष कैसे सीखते हैं। स्कूल आने वाले बच्चों में भाषा सीखने की प्रक्रिया के गुण । बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता ।	
3	**भाषा का सामाजिक एवं राजनैतिक संबंधः–**	**(कुल 12 अंक) कालखण्ड 15**
	बहुभाषिता व अस्मिता। भाषा एवं बोली । मानक भाषा।	
4	**बच्चों में भाषाई क्षमता एवं उनका विकासः–**	**(कुल 08 अंक) कालखण्ड 10**
	पढना क्या है ? अर्थ निकालने की प्रकिया। भाषा अर्थ ग्रहण करना एवं अर्थ निर्माण । भाषा सुनना,बोलना,पढ़ना,लिखना और इसका अंतः संबंध ।	
5	**कक्षा में पढ़ना सीखनाः–**	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 20**
	पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में बातचीत एवं उसका महत्व। पढ़ने में इस्तेमाल होने वाली प्रक्रियाएँ एवं कुशलताएँ। –पूर्व पठन एवं पश्च पठन (गतिविधियाँ) –अंदाज लगाना। –सचित्र किताबों से पढ़ना। –पढ़ने के विभिन्न तरीके क्या हैं? –क्या किताब पढ़ना एक दक्षता है? –क्या समझना एक दक्षता है?–अक्षर ध्वनि विधि, समग्र भाषा विधि, संप्रेषण विधि –पूर्व भाषाई ज्ञान को नये ज्ञान से जोड़ना।	

6	**कक्षा में लिखना सीखना**	**(कुल 10 अंक कालखण्ड 20)**
	अभिव्यक्ति, कल्पना, तर्क की क्षमता का विकास लिखना एवं पढ़ना कैसे संबंधित हैं। लिखने एवं बोलने में अंतर। लिखना सिखाने के अभ्यास। बाल साहित्य का पढ़ने, लिखने, सीखने में योगदान लोक कथा, कहानी व कविता का पढ़ना लिखना सीखने में महत्व।	
7	**मूल्यांकनः–**	**(कुल 08 अंक कालखण्ड 15)**
	भाषा में मूल्यांकन क्यों? एवं उसकी प्रकृति बच्चों में भाषा क्षमता के आकलन के संभावित तरीके भाषा सीखने, लिखने व पढ़ने की प्रक्रियाओं में गलतियों की भूमिका।	

संदर्भ–

एन्थ्रोपोलॉजी (fifth edition) (1) पापुलर आइडिया एबाउट लग्वैज

भाषाई अस्मिता व हिन्दी Language and Identity रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव

बच्चे की भाषा और अध्यापक –श्री कृष्ण कुमार अध्याय 1 भाषा और अधिगम , जेम्स ब्रिटेन

भाषा और ज्ञान का निर्माण आर.सी.शर्मा

(i) Psychology Essentials Articulate Mammal Santrock Jean Aichision

(ii) भाषा व अधिगम जेम्स ब्रिटन रिर्पोट कार्यशाला

भाषा व अधिगम – जेम्स ब्रिटन

ज्ञान का निर्माण की प्रोसीडिंग –आर.अमृतवल्ली Articulate Mannual जीन एचिनसन

बहुभाषिता व हिन्दी – रमाकांत अग्निहोत्री

भाषाई अस्मिता व हिन्दी – आर एन श्रीवास्तव

Language and identity David Crystal

भारतीय भाषाएं विकासशील समाज में पहचान का माध्यम– अंजनी सिन्हा

हिन्दी का सामाजिक संदर्भ (बोली भाषा एवं मानकीकरण)

Reading of meaning (The Identification fo Meaning – frank Smith)

पठन सामग्री (ज्ञान की संरचना) Sonika Kawh.K 28-54]

What is Reading ? Richard C.Andesson & all Reading for Meaning

The Teaching of reading .BrianThompson)

पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका (लता पांडे)

NCERT 9–14 पढ़ाई पहली कक्षा की (अक्षय कुमार दीक्षित) पढ़ना सिखाने की शुरूआत 9–14

पढ़ना सिखाने की शुरूआत (NCERT Edi लता पांडे 1–4 पढ़ना

बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते Frank Smith अनुवाद : सुशील जोशी

Writing: from chap 11 learning cognistion in the content areas

Educational Psychology Jhon W. Santrock IInd Edition 49-61 348-354

बोलना व लिखना (वाल्स चेफ) CTE 05 – Block 4 Unit 15,16 IGNOU , Emerging trends in teaching writing(unit 12)

भाषा शिक्षा – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

1.पढ़ने सीखने की शुरूआत

पढ़ने का आकलन कैसे करें (शरद कुमारी)

लता पांडे 27–37

Reading for meaning (Reading –A Psychoti agaritic guming game- Kenneth S. Goodman 1&13

आतंरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

1. एक से पांच वर्ष के बच्चे भाषा कैसे सीखते है का अध्ययन ।
2. अपने क्षेत्र की स्थानीय कहानियों /गीतों /कविताओं का संकलन कर बच्चों की भाषायी क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन।
3. कक्षा में बच्चों के बीच को लिपिबद्ध कर उनका अध्ययन करना।

4 हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण निम्न आधार पर–

पढ़ना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके ।

लिखना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके ।

भाषायी क्षमता बढ़ाने के लिए पुस्तक में दी गयी गतिविधियाँ।

कक्षा एक से पांच तक गतिविधियाँ बनाना। जैसे – क्या होता है लाल लाल ।

डी.एड.द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र सातवाँ – गणित व गणित शिक्षण

उद्देश्य –

1. गणित की प्रकृति के बारे में समझना।
2. विभिन्न गणितीय अवधारणाओं यथा भिन्न की संक्रियाएँ दशमलव ,आंकड़ों का विश्लेषण, आयतन, धारिता, ऋणात्मक संख्याएँ इत्यादि के बारे में समझना।
3. गणित व भाषा का संबंध, गणित सीखने में भाषा की भूमिका के बारे में समझना।
4. कक्षा कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर समझ तथा एक अच्छी गतिविधि के गुणों को समझना।
5. संभावना (प्रायिकता) के बारे में समझ।
6. नई गतिविधियों का निर्माण करना।

गणित व गणित शिक्षण		
क्र	पाठ / विषयवस्तु के नाम	कुल अंक 80 कालखण्ड 120
1	**गणित की प्रकृति**	**(अंक 8) कालखण्ड 12**
पाठ 1 गणित का स्वरूप	• गणितीय विचार किस तरह विकसित होते हैं ? • गणित का स्वरूप • गणितीय तरीके से सोचना	
पाठ 2 (गणित के तत्व)	• अमूर्तीकरण • विशिष्टीकरण और व्यापकीकरण • उपपत्ति क्या होती है ?	
2	**भिन्नात्मक संख्याएँ**	**(अंक 15) कालखण्ड 30**
पाठ 3 भिन्न की संक्रियाएं	• जोड़ और घटाने की समझ को विकसित करना • गुणा व भाग की समझ को विकसित करना	
पाठ 4 भिन्नों पर चर्चा	• सूत्र विधियों पर एक बारीक नजर • भिन्न संबंधी सूत्र– विधियाँ • अनुमान	
पाठ 5 दशमलव भिन्नों पर चर्चा	• दशमलव भिन्न मुश्किल क्यों है ? • जोड़ना और घटाना • गुणा और भाग • दशमलव भिन्नों का अनुमान	
3	**गणित में गतिविधि व आयतन**	**(अंक 8) कालखण्ड 11**
पाठ 6 आयतन	• आयतन नापना • धारिता बनाम आयतन	

पाठ 7 गतिविधियों से सीखना	• ंकिस तरह की गतिविधि से सीख सकते हैं। • कौन सा 'करना' गतिविधि नहीं होता • गतिविधि आधारित गणित की कक्षा ।	
4	**गणित सीखना–सिखाना व आकलन** (कुल 16 अंक	) कालखण्ड 20
पाठ 8 सीखने की प्रक्रिया पर विभिन्न विचार पाठ 9 शिक्षण की प्रचलित प्रथाएं पाठ 10 निरूपण	• सीखने का मॉडल बनाना • सीखना यानी रटना (बैंकिग मॉडल) • सीखना यानी प्रोग्रामिंग • सीखना यानी समझ का निर्माण • शिक्षण की प्रचलित प्रथाएँ • कक्षा में रचनावाद • आकलन • अमूर्त सोच का विकास • अवधारणात्मक व प्रक्रियात्मक ज्ञान	
5	**आँकड़ों का उपयोग व निरूपण** (कुल 16 अंक	) कालखण्ड 24
पाठ 11 आंकड़ों का इस्तेमाल पाठ 12 आँकड़ों से निष्कर्ष निकालना कैसे सिखाएं पाठ 13 संभावनाओं के बारे में सीखना	• ऑकड़े का अर्थ • बच्चे और आँकड़े • आँकड़ों को दर्ज करना • आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण • आँकडों से निष्कर्ष निकालना • आँकड़ों को निरूपित करने वाले मान • संभावना के बारे में बच्चों की धारणाएँ • क्यों सिखाऍ बच्चों को संभावना की बातें • बच्चों के लिये गतिविधियाँ	
6	**संख्याओं का वृहद स्वरूप** (कुल 16 अंक	) कालखण्ड 24
पाठ 14 ऋणात्मक संख्याएं. पाठ 15 अंकगणित से बीज गणित की ओर पाठ 16 वैदिक गणित की कुछ विधियाँ	• ऋणात्मक संख्या क्या हैं? • सचिह्न संख्याओं पर संक्रियाएँ • बीजगणित क्यों सीखें? • बीजगणित कैसे सीखें ? • चर का इस्तेमाल • वर्ग, वर्गमूल तथा धन और धनाफल ज्ञात करने की विधिया	
7.	**गणित सीखने का भाषा से संबंध** (अंक 8) कालखण्ड	10
पाठ 17 भाषा का विकास एवं कुछ भारतीय गणितज्ञ	• गणित समझाने में भाषा की भूमिका • इबारती सवाल • गणित की भाषा सीखना • भारतीय गणितज्ञ	

संदर्भ–

- LMT खण्ड –1, इकाई –1, इकाई –2
- LMT खण्ड –2, इकाई –4, इकाई –5, इकाई –6, इकाई –7
- LMT खण्ड –3, इकाई –8, इकाई –9, इकाई –10
- LMT खण्ड –5, इकाई –14, इकाई –15
- LMT खण्ड –6, इकाई –17
- AMT खण्ड –2, इकाई –10
- AMT खण्ड –3, इकाई –9, इकाई –11
- AMT खण्ड –4, इकाई –14
- AMT खण्ड –5, इकाई –17
- NCERT class 6th Text book

आतंरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

1. किसी कक्षा के विद्यार्थियों की ऊँचाई का आंकड़ा एकत्रित कीजिए व उसका विश्लेषण कीजिए।
2. भिन्न पर आधारित प्रश्न–पत्र बनाइए तथा बच्चों द्वारा दिये गये जवाबों का विश्लेषण कीजिए (क्या आता है ? क्या नहीं आता है ? क्या सीखाने की जरूरत है ?)
3. गणित की किसी अवधारणा को तीनों मॉडलों (बैंकिग, प्रोग्रामिंग, रचनावाद मॉडल) की सहायता से समझाने के लिए किसी कक्षा की शिक्षण योजना का निर्माण।
4. दो गणितज्ञों का परिचय एवं उनकी उपलब्धियां के बारे में जानकारी संकलित करना ।
5. भाग की संक्रिया में बच्चों को होने वाली कठिनाईयां (भिन्न–भिन्न प्रश्नों के संदर्भ में) एवं उनका विश्लेषण
6. संभावना के बारे में बच्चों की धारणा को जानने के लिए आंकड़े एकत्रित करें।
7. आप जिस बच्चे को पढ़ा रहे हैं, उसकी गणित पाठ्यपुस्तक के किसी अध्याय का भाषा की दृष्टि से मूल्याकंन कीजिए।

प्रश्न पत्र आठवां – शिक्षा दर्शन : व्यक्ति, सीखना और शिक्षा
(शिक्षण योग्यता कार्यक्रम के दूसरे वर्ष के लिए अध्ययन का विषय)

उद्देश्य :

शिक्षा दर्शन दो : 'व्यक्ति , सीखना और शिक्षा' के अध्ययन क्षेत्र के उद्देश्य नीचे लिखे अनुसार होंगे :

1. छात्राध्यापक शिक्षा से संबंधित मूल दार्शनिक प्रश्नों को पहचानना सीखें, ।
2. मूल दार्शनिक प्रश्नों में उनकी रुचि जागृत हो ।
3. मूल दार्शनिक प्रश्नों पर आत्म–विश्वास के साथ विचार करना सीखें।
4. प्रारंभिक शिक्षा में सुविचारित निर्णय लेने के लिए वैचारिक आधार विकसित करने में मदद करना
5. शिक्षा पर विवेचनात्मक (critical) नजरिया विकसित करना।
6. शिक्षा दर्शन के दायरे की आरंभिक समझ बनाना और उसके कुछ विचारों से परिचय करवाना।

प्रश्न पत्र का नाम – शिक्षा दर्शन : व्यक्ति , सीखना और शिक्षा			
क्र.	पाठ / विषयवस्तु के नाम	कुल अंक 80	कालखण्ड 120
इकाई–1 : शिक्षा में मूल मान्यताएं	1. भारत की शिक्षा नीति संबंधी कुछ दस्तावेजों के चुनिंदा अंशों का अध्ययन। इस अध्ययन में व्यक्ति समाज, शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षाक्रम और शिक्षण–प्रक्रिया से संबंधित मूल मान्यताओं की पहचान और विवेचना। (दस्तावेज जिनसे पठन सामग्री चुनी जा सकती है : 1986 (1992 में संशोधित) की शिक्षा नीति, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 और योजना आयोग की जन–सहभागिता योजना) :''शिक्षा का अधिकार'' कानून 2. इस बात को पहचानना कि ऐसी नीतियों और योजनाओं के पीछे, समाज, राज्य, अच्छा नागरिक नैतिकता, सौंदर्यबोध, ज्ञान आदि से संबंधित मान्यताएं होती हैं, उन मान्यताओं को पहचानना सीखना। 3. शिक्षा दर्शन ऐसी ही मान्यताओं का अध्ययन करता है और उनके आधार पर शिक्षा के बारे में विचार करने के लिए कोई वैचारिक ढांचे बनाता है।	अंक 20	31
इकाई–2 : दार्शनिक विचार के तरीके और उपकरण	1. चिंतन और विवेचना। 2. तर्क : तर्क (argument), में मान्यताएं (premises) और निष्कर्ष, तर्क में अनभिव्यक्त मान्यताएं, तक बनाना, तर्क की जांच करना, भ्रान्तियों (fallacies) को पहचानना , पंच तर्क संयोजक (ये तर्क संयोजक निम्न हैं–और (and) , या (or), निषेध (negation) , यदि ... तो (if…then..), यदि और केवल यदि (if and only if); के बारे में समझ विकसित करना। विवेक एवं विवेकसम्मत निष्कर्ष, विवेक के आधार।	अंक 16	22
इकाई–3 : व्यक्ति और समाज	1. व्यक्ति की प्रकृति के बारे में विभिन्न अवधारणाओं को पांच आयामों में समझना– विशिष्टता पहचानना (यदि है तो), जगत (universe) में व्यक्ति का स्थान, व्यक्ति को कैसा जीवन जीना चाहिए, क्या समस्याएं हैं और इनका समाधान क्या है। मानव प्रकृति को समझने के लिए इस वैचारिक ढांचे (framework) को समझना।	अंक 20	33

	2. मानव प्रकृति– उपनिषदों एवं भगवद्गीता में व्यक्ति की धारणा, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन में व्यक्ति की धारणा, बाईबल में व्यक्ति की धारणा, कुरान में व्यक्ति की धारणा, भौतिकवाद में व्यक्ति की धारणा, इम्मेनुअल कांट के दर्शन में (प्रबोधन काल, के प्रर्वतक के रूप में) व्यक्ति की धारणा। उपरोक्त धारणाओं का अध्ययन। इन धारणाओं के अनुसार समाज की रचना, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण सामग्री के लिए दिशा–निर्देश, शिक्षण प्रक्रिया के लिए दिशा–निर्देश; को समझना।		
इकाई– 4 : **भारतीय शिक्षा चिंतक**	रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवकानंद, महात्मा गांधी, श्री अरबिन्दो – व्यक्ति की धारणा, समाज की संकल्पना, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा की सामग्री, शिक्षा प्रक्रिया के संदर्भ में।	**अंक** **14**	**17**
इकाई– 5 : **पाश्चात्य** **शिक्षा चिन्तक**	**कुछ और शिक्षा चिंतक** प्लेटो, अल गजाली, रूसो, जॉन डिवी, के चिंतन में व्यक्ति की धारणा, समाज की संकल्पना, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा की सामग्री, शिक्षा की प्रक्रिया के संदर्भ में।	**अंक** **10**	**17**

संदर्भ–

1. 1986 (1992 में संशोधित) की शिक्षा नीति, दस्तावेज
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 और दस्तावेज
3. योजना आयोग की जन–सहभागिता योजना) दस्तावेज
4. ''शिक्षा का अधिकार'' कानून
5. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ. लक्ष्मीलाल के ओड़
7. शिक्षा सिद्धांत – डॉ. एस.एस. माथुर
8. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत – पी.डी. पाठक एवं त्यागी
9. शिक्षा – स्वामी विवेकानंद (रामकृष्ण मठ नागपुर द्वारा प्रकाशित)
10. गांधी की नई तालीमः कृष्ण कुमार; यूनेस्कोः अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, वोल्यूम 23, 1993
11. माहात्मा गांधीः अहिंसा का आग्रह, नंद किशोर आचार्य, पृ. 85;शिक्षा का सत्याग्रह, 2009)
12. हिंद स्वराज, गिरिराज किशोर, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
13. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथाः मोहन दास करमचंद गांधी, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
14.महात्मा गांधी की संक्षिप्त जीवनी, विंसेंट शीन

आतंरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

1. समुदाय (या परिवार) से बातचीत के आधार पर हमारी शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार प्रभावित होती है अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. शिक्षा संबंधी समाज में व्याप्त अनकही मान्यताओं के बारे में अपने विचार दीजिए।
3. प्रतिभाशाली बच्चों एवं कमजोर बच्चों के सम्बन्ध में दस्तावेजों में किस प्रकार की बातें उल्लेखित की गई है विवरण दीजिए।
4. शिक्षा में सौंदर्यबोध और कला के महत्व पर चर्चा करते हुए बताए कि किस तरह दोनों एक –दूसरे के पूरक है?
5. प्लेटो तथा अल–गजाली दोनों ने समाज और व्यक्ति में से किसे महत्वपूर्ण माना है? तथा आप किसे महत्वपूर्ण मानना चाहेंगे ? और क्यों ?अपने विचार व्यक्त किजिए।

प्रश्न पत्र नवम् – भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण

उद्देश्य –

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाओं में –

1. हिन्दी भाषा की संरचना के विभिन्न पहलूओं की समझ बनाना।
2. सोचने और मौलिक चिंतन की प्रवृत्ति का विकास एवं उन विचारों को आत्मविश्वास पूर्वक अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
3. कल्पनाशक्ति, विस्मयबोध, कोतूहल, जिज्ञासा, तर्क एवं सृजनशीलता का विकास करना।
4. आनन्द व उत्साह पूर्वक अध्ययन–अध्यापन की प्रवृत्ति का विकास करना।
5. बाल साहित्य पढ़ने व उसके विभिन्न पहलूओं को समझ पाने के लिए प्ररित करना।
6. साहित्य एवं साहित्यिक विधाओं से परिचय एवं समझ विकसित करना।
7. भाषा एवं विचार के सम्बन्ध को समझना।
8. कक्षा–कक्ष में भाषा सीखने–सिखाने के महत्व को समझना।
9. पुस्तक–केन्द्रित व रटन्त प्रणाली से हटकर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।

भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण		
क्र	पाठ / विषयवस्तु के नाम	कुल अंक 80 कालखण्ड 120
इकाई	**बाल साहित्य एवं पुस्तकालय**	(कुल अंक 20) कालखण्ड 24
1	परिचय पुस्तकालय का परिचय / अर्थ कक्षा में अन्य पुस्तकें कहानी कथन कौशल बाल साहित्य–एक परिचय संकलित बाल साहित्य एवं गतिविधियाँ	
इकाई	**साहित्य की अनुभूति**	(कुल अंक 15) कालखण्ड 26
2	परिचय एक टोकरी भर मिट्‌टी–(कहानी) उदात्त संगीत – मुक्तक (कविता) पिस्ते बादाम (कहानी) तोंबा (कहानी) दूंगी फूल कनेर के (कविता) प्रायश्चित्त (कहानी) गुलेलबाज लड़का (कहानी) पापा खो गये (एकांकी) दादाजी (कविता) जो बीत गई (कविता) छोटा जादूगर (कहानी) पिता के पत्र पुत्री के नाम (पत्र) चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय (एकांकी) नमक का दरोगा (कहानी) छात्र की परीक्षा (एकांकी) तू जिन्दा है तो.......(कविता)	

इकाई	विषय	
इकाई 3	**बच्चों में भाषा विकास**	**(कुल अंक 18) कालखण्ड 26**
	• भाषा शिक्षण के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण • बालक की मातृभाषा व भाषाई क्षमता • भाषा शिक्षण के उद्देश्य • भाषा की कक्षा कैसी हो ? कुछ उदाहरण • सार्थक और सक्रिय लिखित माहौल विकसित करने के प्रयास	
इकाई 4	**भाषा व विचार – व्यक्तित्व विकास में भाषा की भूमिका**	**(कुल अंक 12) कालखण्ड 20**
	• भाषा और विचार का संबंध • भाषा व्यक्ति के लिए क्यों आवश्यक है? • भाषा का सीखने सिखाने से संबंध	
इकाई 5	**हिन्दी भाषा की संरचना के पहलू**	**(कुल अंक 15) कालखण्ड 24**
	• व्याकरण का अर्थ व महत्व • व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य • व्याकरण शिक्षा किस प्रकार दी जाए • विभिन्न स्रोत पर व्याकरण शिक्षण • व्याकरण शिक्षण की प्रणालियाँ • सहायक शिक्षण सामग्री	

संदर्भ –

- एक टोकरी भर मिट्टी–(कहानी) प. माधवराव सप्रे
- उदात्त संगीत –मुक्तक – डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र
- पुस्तक के मायने डॉ. हृदयकांत दीवान
- कक्षा में दीगर किताबें –शहनाज. डी.के.(खोजबीन अंक 5)
- कहानी सुनाने का हुनर प्रो. कृष्णकुमार
- कुछ कहानियॉ कविताऍ, पहेलियॉ व उन पर गतिविधियॉ (आकलन स्त्रोत पुस्तिका, एन.सी.ई.आर.टी व एकलव्य प्रकाशन)
- पिस्ते बादाम इंदिरा वासवानी, अनुवाद मोतीलाल जोतवाणी
- तोंबा शिजगुममयुम अनुवाद नीलवीर शास्त्री
- दूंगी फूल कनेर के – गंगा प्रसाद
- प्रायश्चित्त – भगवती शरण वर्मा
- गुलेलबाज लड़का – भीष्म साहनी
- पापा खो गए बसंत कक्षा 7 हिन्दी एन.सी.ई.आर.टी की पाठ्यपुस्तक
- दादाजी संकलित
- जो बीत गई – हरिवंश राय बच्चन
- छोटा जादूगर –जयशंकर प्रसाद
- पिता के पत्र पुत्री के नाम – जवाहर लाल नेहरू
- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय –हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा……… छत्तीसगढ़

- नमक का दारोगा– मुंशी प्रेमचंद
- छात्र की परीक्षा रविन्द्रनाथ टैगोर का बाल साहित्य
- तू जिन्दा है तो............ जवाब दर सवाल, एकलव्य
- विद्यार्थी की आत्मकथा ((नए निबंध,) श्यामजी गोकुल वर्मा विद्या विहार,नई दिल्ली
- प्रोपेगैंडा (आधुनिक युग का शक्तिशाली अस्त्र) बाबू गुलाबराय (किताबघर)
- भाषा शिक्षण के प्रति शिक्षकों का नजरिया –रजनी द्विवेदी, शोभा शंकर नागदा
- बच्चों की भाषा क्षमता –हृदयकान्त दीवान विद्याभवन सोसायटी
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य –एन.सी.ई.आर.टी
- भाषा की कक्षा के कुछ उदाहरण

1. सक्रिय लिखित माहौल विकसित करना कीर्ति जयराम (संदर्भ एकलव्य)
2. मुझे क्या मालूम हुआ (लक्ष्मी नारायण संदर्भ एकलव्य)

- भाषा और विचार भाग 1 – अनुवादित (सुनीता मिश्रा)
- भाषा और विचार भाग 2 – अनुवादित (पुष्पराज राणावत)
- भाषा इंसानों के लिए क्यों जरूरी है और इसका विकास कैसे होता है ? वी.बी. ई. आर.सी उदयपुर, (राजस्थान)
- भाषा व समझ भाग 1 व 2 – रोहित धनकर
- हिन्दी शिक्षण – रमण बिहारी लाल
- हिन्दी शिक्षण – डॉ. एन.आर. शर्मा
- स्वतंत्रोत्तर हिन्दी बाल साहित्य – डॉ. कामना सिंह
- वाक्य संरचना – बी.आर. साहू

आंतरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

(**निर्देश** :–शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान के संकाय सदस्य परियोजना के प्रतिवेदनों का संकलन भविष्य हेतु अपने संस्थान में अनिवार्य रूप से रखें।)

- प्राथमिक कक्षाओं में भाषा क्यों पढ़ाई जाती है? का अध्ययन। (टीप :– छात्राध्यापक अपने शिक्षकों, साथियों एवं प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों से चर्चा करें।)
- अपने क्षेत्र के स्थानीय बाल साहित्य/गीत/कविता/कहानियों/कथाओं का संकलन कर बच्चों की भाषाई क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन करें।
- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को कहानी और कविता क्यों पढ़ाते हैं इस पर प्राथमिक शिक्षकों से बातचीत कर विश्लेषण तैयार करना।
- चित्रों के माध्यम से प्राथमिक कक्षा के बच्चे से कहानी का निर्माण करवाकर उसका विश्लेषण कर प्रतिवेदन तैयार करें।
- प्राथमिक शाला के किसी एक कक्षा के बच्चों के साथ संवाद करने हेतु आप क्या–क्या करेंगे। इस पूरी प्रक्रिया को लिपिबद्ध कर प्रस्तुत करें।
- (टीप :– इकाई 3 के ''मुझे क्या मालूम हुआ'' लेख इसका एक उदाहरण है इसी तरह आप बच्चों के साथ कार्य करें।)
- विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, किताबों आदि में प्रकाशित बालकहानी/कविता/नाटक/चित्रों/ खेल/कथा का संकलन करें। इसका उपयोग अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने–सिखाने में कर इस पर प्रतिवेदन तैयार करें।

प्रश्न पत्र दसवां भाग एक –द्वितीय भाषा (अंग्रेजी) व भाषा शिक्षण

This curriculum is made for the students of Diploma in Education, a two years program run through DIETs. Students appearing in this program are basically 12th passed & selected through written exam.

The goal of this course is to build confidence in pupil teachers to use the language freely and develop strategies for young learners based on pedagogic principles. This course will help them experience, appreciate and build on principles of pedagogy of language as learners and as prospective teachers.

Thus, the emphasis is on inclusive pedagogy leading to continuous reflection and derivation of principles of Learning English language from classroom experiences.

उद्‌देश्य –

1. अंग्रेजी भाषा के राजनैतिक ,सामाजिक,आर्थिक ,ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझ सके।
2. छात्राध्यापक स्वयं अंग्रेजी भाषा पढ़ना,बोलना व लिखना सीख सकें व अपने दैनिक जीवन में अंग्रेजी का उपयोग कर पाएं।
3. द्वितीय भाषा शिक्षण कैसे हो इसके बारे में समझ बना सकें।
4. भाषा की संरचना, प्रकृति तथा कक्षा प्रक्रियाओं के बीच संबंध को समझे।
5. भाषा शिक्षण का मूल्यांकन कैसे हो यह समझ बना सकें।

In order to achieve the above objectives, view and practice the course in the desired spirit, it may be helpful to understand certain principles that the course developers have considered.

The guiding principles are:

- Learning language is a continuous process throughout the year
- Developing interest to learn a new language through interesting activities
- Providing learning experiences to teacher students similar to the pedagogy we expect them to use in classrooms
- Derive principles of learning and teaching from the D.Ed classroom experiences instead of didactic listing of rules and methods.
- Focus is on context-based and comprehensive approach to learning and teaching language and not on skill-based approach (LSRW)
- Project works & support materials are integral element of all units
- Our perspective on Errors – Errors to be treated as a step to learn and the learner should not be demoralized and given inferior status.

Content

S.no.	पाठ / विषयवस्तु के नाम	Period- 60 Marks- 40
1	**English in our Lives: No. of periods – 6 Marks – 6**	
	1.1 Words / Expressions around us that we use daily, Evidence of where and how they occur 1.2 The historical and political context of English in India 1.3 English : Its use and purpose today 1.4 Everyone can learn English	
2	**Learning English: No. of periods - 18 Marks - 10**	
	2.1 Use language freely – Language is learnt by use - Free articulation and conversation a) Let's start with recitation b) Expressing views on learning a new language c) Conversation and translation 2.2 Fun with words 2.3 Reading 2.4 Writing – descriptions, picture compositions, narrations, paragraph writing, note making 2.5 Projects: a) Role play and dramatization b) Making a presentation c) Reviewing a book d) diary writing	
3	**How can English be taught: No. of periods – 18 Marks - 10**	
	3.1 Introduction 3.2 a) How to encourage children to learn a new language? 3.2 b) Motivation 3.3 NCF 2005 and Teaching of English 3.4 Materials and activities to facilitate learning 3.5 How to teach with the help of a text book? 3.6 Using children's literature for teaching English 3.7 Role of a teacher	
4.	**Structure of English Language No. of periods – 8 Marks – 6**	
	4.1. Rules at sound level 4.2. Structure of Hindi and English sentences Arbitrariness of language 4.4. Teaching grammar to children 4.5. Standardization of English Language	
5.	**Teaching Plan and Continuous and Comprehensive Evaluation No. of periods – 10 Marks - 8**	
	5 A. Teaching Plan : *5A.1 Need of a Teaching Plan* *5A.2 Components of a teaching plan* *5A.3 Format of a teaching plan* *5A.4 Points to Remember*	

	5 B. Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) *5B.1 Meaning* *5B.2 Assessment of learning, for learning and as learning* *5B.3 Tools and techniques* *5B.4 Identifying and writing objectives.* *5B. 5 The art of asking questioning* *5B.6 Assessment and Evaluation: NCF-05* *5B.7 Plan learning, Plan assessment and expect the unexpected* *5B.8 Feedback*	

Reference:

Agnihotri R. K. and A.L.khanna, 1996 English grammar in context, Ratna sagar publication.

Adrian Doff, Teacher's workbook – Teach English-– Cambridge teacher training and development.

Das Gupta, J. 1970. Language conflict and national Development: Group politics and National language Policy in India, p.43-45)

George Yule, Second Language acquisition/learning – Pg no. 162 to 170 – The study of Language (Third edition)

J. C. Aggarwal, Principles, methods and techniques of teaching, Vikas Publishing House PVT LTD, Second Revised Edition.

*Jack C. Richards, Theodore S. Rodgers , Approaches and methods in language teaching: F*oundations of Bilingual education and bilingualism , Colin Baker.

Jim Trelease, When to begin read – The new read aloud Handbook

Lorna M. Earl, Assessment as Learning – Using classroom assessment to maximize student learning, Corwin Press, INC.

Mary Spratt., English for the teacher- A language development course-

Padhne ki samajh- Reading development Cell – NCERT

Reading for meaning – Reading development Cell – NCERT

Robert L. Linn, Norman E. Gronlund, Measurement and Assessment in Teaching, Eighth edition, Pearson Education, Inc.

Rungeen singh, Kitu goes on a holiday –-Vishv books

S. Nagarajan, 'the decline of English in india', college English, Vol. 43, No. 7, nov. 1981, pg 665

Susan B. Neuman and Kathleen Roskos, Nurturing knowledge.

Brad Decan and Tim Murphy, Kahani sunakar to dekho

IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, pg no. 25-26

IGNOU, CTE 01, Block 4, Unit 15, pg 24

Learning Curve – Language Issue – Azim Premji Foundation

NCF – 05

Prashant Agrawal, 'Leader Article: Myths about English', The times of India, Nov 17, 2007)

Samwad – Adhyayan samagree – May-June 2008

Sanjiv Kaura, 'Language Without barriers', The times of India, Mar 11, 2010

Time to rhyme –A CBT publication- Eklavya

Young India 1919-22, p.451

Weblinks:

http://www.uwsp.edu/education/lwilson/learning/quest2.htm

http://www.educationoasis.com/curriculum/LP/LP_resources/lesson_objectives.htm#avwww.cbse.nic.in

www.ncert.nic.in

http://www.improvespokenenglish.org/search/label/Conversation

http://www.mindmapart.com/energy-saving-mind-map-jane-genovese

https://www.msu.edu/~caplan/drama/tesol2005/situations.doc

http://www.scribd.com/doc/391505/Paragraph-Writing

http://www.teflgames.com/why.html- May 28, 2010

www.sendaiedu.com/effectiveuseofthetextbookhandouthung.doc

www.slideshare.net/wisdom/adaptingalanguagetextbook

en.wikipedia.org/wiki/Children's_literature

http://www.brighthub.com/education/k-12/articles/6211.aspx#ixzz0rUR6623j)

आतंरिक मूल्यांकन – 10 अंक कुछ उदाहरण

Each of the units has several activities. Teacher can select any one of them from each of the units for internal Evaluation. There are also projects (reviewing a book, presentation, role play etc) given at the end of unit 2.

प्रश्न पत्र दसवां (भाग दो) – संस्कृत भाषा शिक्षण

उद्देश्य –

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाओं में –

1. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा शिक्षण के महत्व को बताना।
2. भाषाई कौशलों का विकास करना।
3. संस्कृत में प्रश्नोत्तर एवं संस्कृत वाक्य रचना करने योग्य बनाना।
4. राष्ट्र के प्रति समादर एवं भावात्मक एकता का विकास करना।
5. भाषिक तत्वों की प्रयोगात्मक क्षमता का विकास करना।
6. नैतिक मूल्यों का विकास करना।
7. संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता का विकास करना।
8. रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम के अनुसार जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
9. अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित रोचक एवं ज्ञानात्मक क्षमता का विकास करना।
10. प्रश्न निर्माण करने की क्षमता का विकास करना।

भाषा (संस्कृत) व भाषा शिक्षण		
क्र.	**पाठ / विषयवस्तु के नाम**	**कुल अंक 40 कालखण्ड 60**
इकाई 1	**संस्कृत भाषा शिक्षण**	**(कुल अंक 05) कालखण्ड 08**
	संस्कृत भाषा शिक्षण की आवश्यकताएं संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्य संस्कृत भाषा शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य कौशल परक दक्षताएं संस्कृत भाषा शिक्षण की प्रविधियां संस्कृत भाषा की उपादेयता	
इकाई 2	**आधार पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु पर आधारित मनोरम संस्कृत कक्षा 8**	**(कुल अंक 07) कालखण्ड 10**
	मंगलाचरणम् छत्तीसगढ़स्य लोकगीतानि अनुशासनम् सुभाषितानि डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् प्राच्यनगरी सिरपुरम् गीतागड्.गोदकम् ग्राम्यजीवनम् षड्ऋतुवर्णनम् राष्ट्रियः सञ्चयः चतुरः वानरः	

	महर्षिः दधीचिः रामगिरिः रामगढम् नीतिनवनीतानि प्रकृतिवेदना मित्रं प्रति पत्रम् अन्तरिक्षज्ञानम् महाकविः कालिदासः सूक्तयः	
इकाई 3	**व्याकरणिक विधाएं**	**(कुल अंक 06) कालखण्ड 08**
	• उच्चारण • कारक • वचन • पुरूष • क्रिया • काल • लिड्.ग • वाच्य • अव्यय • उपसर्ग • कृदन्त • संधि • समास	
इकाई 4	**काव्य तत्व खण्ड अ**	**(कुल अंक 05) कालखण्ड 08**
	• छंद, अंलकार, रस • पर्यायवाची शब्द एवं विलोम शब्द • लोकोक्ति एवं मुहावरे	
	मूल्यांकन (पाठ्यवस्तु पर आधारित) खण्ड ब	**(कुल अंक 05) कालखण्ड 08**
	• मूल्यांकन का अभिप्राय • वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली • संस्कृत परीक्षण के प्रकार • हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद • संस्कृत अनुवाद के लिए महत्वपूर्ण क्रियाएं	

इकाई 5.	**संस्कृत की पाठ योजनाएँ**	**कुल अंक 06 कालखण्ड 10**
	• गद्य पाठयोजना • पद्य पाठयोजना • रचना पाठयोजना	
इकाई 6	**संस्कृत निबंध**	**कुल अंक 06 कालखण्ड 08**
	• परोपकारः • सत्सङ्.गतिः • विद्या • संस्कृत, भाषायाः महत्वम् • अस्माकं विद्यालयः • अनुशासनम् • ग्राम्यजीवनम् • पुस्तकम् • महाकविः कालिदासः • दीपावलिः	

संदर्भ –

आंतरिक मूल्यांकन – 10 अंक कुछ उदाहरण

सत्रगत कार्य (कोई . 05)

- पांच पद्य खण्ड का कण्ठस्थीकरण।
- दो संस्कृत गद्यों का संस्कृत में अनुवाद।
- वर्णमाला का चार्ट निर्माण।
- पठित 10–10 लोकोक्ति व मुहावरे छांटना
- संस्कृत के पांच कवियों के नाम

लिखना व उनकी रचना एवं वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालना।

- एक गद्य, पाठ्योजना तैयार करना
- पाठ्योजना हेतु सहायक सामग्री का निर्माण।
- संस्कृत में किसी विषय पर व्यावहारिक संवाद।
- संस्कृत में किसी विषय पर निंबंध लेखन

संस्कृत के व्यावहारिक शब्दों का संकलन (विद्यालय, घर, परिवेश पशु, पक्षी, फल शाकादि)

प्रश्न पत्र ग्यारहवां – पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य –

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका –

- पर्यावरण से क्या तात्पर्य है, समझ सकें।
- मानव / समाज और पर्यावरण की अन्तःक्रिया के महत्व को समझें।
- बच्चे की समझ पर्यावरण के बारे में क्या है ? समझ सकें तथा इसका उपयोग सीखने –सिखाने की प्रक्रिया हेतु करें।
- अवलोकन, पहचानना, जानकारी एकत्र करना, विभेदीकरण तुलना, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण आदि कौशलों के विकास की पर्यावरण अध्ययन तथा विज्ञान शिक्षण कार्य में कैसे जगह बनाएं ? यह समझ सकें।
- पर्यावरण की विविधता और विभिन्नता का सम्मान कर सकें, स्वयं तथा बच्चों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बना सकें।
- पर्यावरण अध्ययन हेतु विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी प्रासंगिकता को देख पाएं।

पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान शिक्षण		
क्र	पाठ / विषयवस्तु के नाम	कुल अंक 80 कालखण्ड 120
इकाई 1	**स्वयं के पर्यावरण को समझना**	(कुल 10 अंक) कालखण्ड 12
	• पर्यावरण क्या है? • पर्यावरण के घटक –सामाजिक ,आर्थिक,प्राकृतिक,सांस्कृतिक • पर्यावरण के घटकों की अंतःक्रियाएं • आज के संदर्भ में पर्यावरण के प्रमुख सरोकार • बच्चों के दृष्टिकोण से पर्यावरण की रोचकता	
इकाई 2	**पर्यावरण के बारे में बच्चों की समझ**	(कुल 11 अंक) कालखण्ड 20
	• बच्चे की समझ • बच्चे का दृष्टिकोण • 5 से 7 व 8 से 14 वर्ष के बच्चों की पर्यावरण के बारे में समझ • कैसे पता करें बच्चा पर्यावरण के बारे में क्या–क्या जानता है? • बच्चे कैसे सीखते हैं? • बच्चों की आवाज और अनुभव • सीखने में समाज और वयस्क की भूमिका	
इकाई 3	**पर्यावरण अध्ययन क्यों पढ़ाएं**	(कुल 16 अंक) कालखण्ड 20
	• पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम के सरोकार • अवधारणाओं का बनना • प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन की अवधारणाएं • कौशल क्या है? • कौशल का विकास	

इकाई 4	**पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम एक परिदृश्य** (कुल 11 अंक) कालखण्ड 20	
	• पर्यावरण अध्ययन का दृष्टिकोण • प्राशिका उपागम (दृष्टिकोण) • छत्तीसगढ़ उपागम (दृष्टिकोण) • एन.सी.ई.आर.टी (दृष्टिकोण)	
इकाई 5	**पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण शास्त्र** (कुल 16 अंक) कालखण्ड 24	
	• विज्ञान शिक्षण • सामाजिक अध्ययन शिक्षण • कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य – चित्रों का पढ़ना, बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को समझना ➢ दिन– रात और ऋतुओं को समझना ➢ समय नापना ➢ नक्शे पढ़ना और समझना	
इकाई 6.	**पर्यावरण अध्ययन व कक्षा कक्ष की गतिविधियां** (कुल 16 अंक) कालखण्ड 24	
	• गतिविधि क्या है ? • प्रयोग सामग्री का संकलन • कक्षा–कक्ष में गतिविधि का आयोजन और संगठन ➢ छोटे–छोटे प्रयोग ➢ चर्चाएं ➢ क्षेत्र भ्रमण ➢ सर्वे ➢ प्रोजेक्ट • पुस्तकालय– सीखने के संसाधन के रूप में • मूल्यांकन • अच्छी कक्षा	

संदर्भ–

- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3–एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- मूल्याकंन की संदर्भ पुस्तिका, –एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- पर्यावरण अध्ययन संगठन और क्रियान्वयन, –इग्नू
- खोजबीन, –विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- कुछ करें भाग 1–विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- प्राशिका– एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- संदर्भ –एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- ज्ञान–विज्ञान (अंक 18,दिसम्बर 2002)
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3 से 5 –एस.सी.ई.आर.टी, छत्तीसगढ़
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 से 8– एस.सी.ई.आर.टी, छत्तीसगढ़

आंतरिक मूल्यांकन – 20 अंक कुछ उदाहरण

निर्देश –पर्यावरण अध्ययन एवं विज्ञान व पर्यावरण शिक्षण के आंतरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित 20 अंकों के लिए एक प्रायोजना कार्य करवाया जाना है। जिसके लिए अधिकतम समय सीमा 3 माह निर्धारित की गई है।

प्रस्तावित प्रायोजनाओं की सूची निम्नानुसार है–

1. अपने क्षेत्र की मान्यताओं एवं उनके पीछे छिपे पौराणिक आधारों को संकलित करें।
2. ''विभिन्न ऋतुओं के खान–पान एवं उनके पीछे छिपे ''विज्ञान'' पर प्रायोजना कार्य करें।
3. अपने आसपास के क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिटिट्यों के नमूनों का संकलन कर उनकी विभिन्नताओं की पहचान करें एवं उनका महत्व बताएँ।
4. ''मौसम एवं स्वास्थ्य – कैसे करें बचाव'' इस विषय पर प्रायोजना तैयार करें।
5. किसी पर्यावरणीय तथ्य/विषय–वस्तु/समस्या पर मॉडल तैयार कीजिए।
6. अपने गांव/शहर की केस स्टडी निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर तैयार कीजिए–

   –जनसंख्या

   – आवास

   – जलवायु

   –मिट्टी

   –तापमान

   –कृषि

   –व्यवसाय

   –उद्योग

   –परिवहन एवं यातायात

   –वनस्पति

   –संचार

7. विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों का संकलन कर उसके भावों का वर्णन करें।
8. अपने डाइट परिसर में वनस्पति उद्यान का निर्माण कर उसमें लगे पौधों की विस्तृत जानकारी तथा प्रत्येक 15 दिन में परिवर्तन को नोट करें तथा उसकी चर्चा कक्षा में करें।
9. अपने गाँव व मुहल्ले का सर्वे कर पता करें कि पॉलीथीन का उपयोग किन –किन कार्यों के लिए किया जाता है। इनका उपयोग कम करने के उपाय सुझायें।

प्रश्न पत्र बारहवां – आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

उद्देश्य–

1. आधुनिक विश्व की तीन प्रमुख प्रक्रियायें जिन्होंने सार्वजनिक शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित किया है –कृषि, औद्योगीकरण, राज्य एवं राष्ट्र की स्थापना व लोकतंत्र। इन अवधारणाओं और शिक्षा पर उनके प्रभाव को समझना।
2. शाला का संस्थागत स्वरूप शाला प्रबंधन और शिक्षकों को उनके महत्व को समझने में समर्थ बनाना।
3. आधुनिक शालाओं के वास्तविक रूप ने सामाजिक असमानता को किस हद तक दूर किया ? बच्चों की सृजनात्मकता का विकास तथा मानवीय व लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा दे पाने की योग्यता की समीक्षा करना।
4. स्वतंत्र भारत में शिक्षा की चुनौतियां, इनका सामना करने के लिए संसाधन व तरीकों तथा प्रयासों व उपलब्धियों की समीक्षा करना। (इस संदर्भ में अपनाई गई विभिन्न नीतियों व कार्यक्रमों की समीक्षा करना)
5. भारत में अपनाए गये वैकल्पिक शैक्षणिक प्रयोगों की समीक्षा करना।

आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा			
इकाई क्र.	इकाई	अध्याय (पठन सामग्री)	कुल अंक एवं का लखण्ड
1	**शिक्षा के सामाजिक आधार :** 1. सामाजिक विकास 2. राष्ट्रीय विकास – राज्य एवं राष्ट्रीय भावना, एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहने वालों को एक साथ लाना, उन्हें सक्रिय करना, किन्हीं खास उद्देश्यों के लिए राज्य स्थापित करना– इसके लिए नागरिकता का विकास करना– राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में शाला का योगदान 3. शिक्षा और आर्थिक विकास – कृषि, औद्योगीकरण, तथा वैश्वीकरण 4. शिक्षा से वैज्ञाानिक एवं तकनीकी विकास 5. शिक्षा की भूमिका– सामाजिक विकास में, आर्थिक विकास में तथा राष्ट्रीय विकास में उपरोक्त के लिए खास तरीके की शिक्षा की आवश्यकता	1. 'सामाजिक विकास' से सम्बंधित पठन सामग्री पूर्व प्रचलित पाठ्यक्रम से अर्थात 'विकासोन्मुख समाज में शिक्षा' से लेना है । 2. राष्ट्रवाद 3. आधुनिक विश्व और शालेय शिक्षा 4. वैश्वीकरण और शिक्षा	**(कुल अंक 20) काल खण्ड 30**
2	**आधुनिक विश्व और शाला का स्वरूपः** 1. लोकतंत्रः आधुनिक युग में लोकतंत्र की जरूरत तथा लोकतंत्र के लिए सार्वभौमिक शिक्षा की जरूरत 2. राष्ट्रीय इतिहास, राष्ट्र–भाषा, राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण के लिए विद्यालयीन पाठ्यक्रम 3. व्यक्तिवादी सोच व समालोचनात्मकता के लिए शिक्षा 4. सामाजिक उन्नयन का एक माध्यम–शिक्षा	5. लोकतंत्र क्या? लोकतंत्र क्यों? 6. लोकतांत्रिक विद्यालय क्या है? 7. सबके लिए शिक्षा–कैसी शिक्षा? 8. शिक्षा और सामाजिक बदलाव	**(कुल 15 अंक) कालखण्ड 22**

	5. शिक्षा का लोकव्यापीकरण, नीति एवं क्रियान्वयन, अर्थ एवं उद्देश्य ; शाला पहुँच, प्रवेश ठहराव तथा गुणवत्ता विकास हेतु रणनीति		
3	**स्वतंत्र भारत में शिक्षा** 1. चुनौतियां व संसाधन 2. संवैधानिक प्रावधान (नीति निर्देशक तत्व, समवर्ती सूची, पंचायती राज) 3. बुनियादी शिक्षा आंदोलन 4. कोठारी आयोग और नई दिशा 5. 1986 की शिक्षा नीति का आंकलन व दृष्टि (सुझाव के परिपेक्ष्य में) 6. डीपीईपी (जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम) व सर्व शिक्षा अभियान का आंकलन 7. बाल शिक्षा का अधिकार कानून 2009	9. शिक्षा आयोग और उसके बाद 10. बुनियादी शिक्षा (नयी तालीम का सुव्यवस्थित स्वरूप–योजना एवं पाठ्यक्रम की रूपरेखा) 11. बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता	**(कुल 15 अंक)** **कालखण्ड 22**
4	**आधुनिक समाज में शिक्षा से अपेक्षाऍं** 1. राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता के विकास के लिए 2. अंतर्राष्ट्रीय सदभावना के लिए 3. मानवीय मूल्यों के विकास के लिए 4. लोकतंत्र की सफलता के लिए	12. 'विकासोन्मुखी भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका : पुराने पाठ्यक्रम से पढ़े।	**(कुल 15 अंक)** **कालखण्ड 22**
5	**वैकल्पिक सोच व प्रयोग** शासकीय तंत्र में विभिन्न प्रयोग 1. प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की नवीन अवधारणाऍं 2. वैकल्पिक शाला कार्यक्रम, सेतु पाठ्यक्रम, पोटाकेबिन 3. एम जी एम एल (बहुकक्षा–बहुस्तरीय शिक्षण) 4. शिशु शिक्षा कार्यक्रम–एन.सी.एफ 2005 के परिपेक्ष्य में 5. लोक जुम्बिश शैक्षिक योजना– शासकीय तंत्र के बाहर प्रयोग–	13. प्राशिका (प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम) 14. लोक जुम्बिश– शैक्षिक योजना 15. सीखने की जगह–कनवू (क्र. .2, 3 एवं 4 पुराने पाठ्यक्रम की सामग्री से पढ़े)	**(कुल 10 अंक)** **कालखण्ड 15**
6	**शाला का संस्थागत स्वरूप** • शाला तंत्र की व्यवस्था • तंत्र में नेतृत्व व समायोजना का काम • तंत्र में उद्देश्यों के प्रति समझ और पहल करने की प्रवृत्ति तंत्र में निर्णय लेने की प्रकिया और निर्णयों का संचार • तंत्र में वैधता व न्याय के स्रोत • संस्थागत संसाधन • संस्थागत संस्कृति	16. कक्षा का ढॉचा (कृष्ण कुमार)	(कुल 05 अंक) कालखण्ड 09

आंतरिक मूल्यांकन– 20 अंक

सुझावात्मक परियोजनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. अनौपचारिक क्षेत्र में नियोजित बच्चों का सर्वेक्षण कर उनके नियोक्ताओं, बच्चों और उनके माता–पिता के अनुभवों का एक दस्तावेज तैयार करना।
2. रोजगार के कुछ अनौपचारिक क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर उनकी शिक्षा की जरूरतों की पहचान कर एक नोट तैयार करना।
3. कुछ नियमित कारखानों / ग्रामोद्योग / कुटीर उद्योग का भ्रमण करें और उसके उत्पादन प्रक्रिया, वहाँ काम करने वाले कर्मचारी, बाज़ार कच्चा माल की आपूर्ति पर विस्तार से एक रिपोर्ट तैयार करना।
4. सूचना के अधिकार के तहत आपके क्षेत्र में चल रहे The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) के बारे में कुछ सूचनाएँ एकत्र करने का प्रयास कर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना जैसे– आपने क्या प्रश्न पूछा? सूचनाएँ प्राप्त करनें में आपने किन समस्याओं का सामना किया? क्या आपकों प्रश्नों के उत्तर मिले? उत्तर क्या था? क्या ये उत्तर प्रश्न से सम्बंधित थे? आदि।
5. सूचना के अधिकार के तहत आपके शाला की ग्राम पंचायत / नगर पंचायत / नगरपालिका की शैक्षिक कार्यों में सक्रियता तथा उनके अनुभव को विस्तार से लिखना।
6. राज्य में संचालित कुछ प्रयोगात्मक विद्यालयों का भ्रमण कर एक रिपोर्ट तैयार करना।
7. किसी ऐसे शिक्षक से मिलें जो नवाचारी शिक्षण करते हों, उनके काम का दस्तावेज तैयार करना।
8. इन्टरनेट में सर्च कर भारत में संचालित वैकल्पिक / नवाचारी शालाओं की जानकारी तैयार करें यह भी बताएँ कि वे किस प्रकार के नवाचार कर रहें हैं?
9. ऐसे 10 छात्रों का साक्षात्कार कर उनके अनुभवों का दस्तावेज तैयार करें ,जो कक्षा 10वीं या 12वीं की परीक्षा में फेल हो गए हों।
10. सेवानिवृत्त शिक्षकों से भेंट कर शिक्षा में /शाला में उनके अनुभवों व सुझावों के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार करना।

संदर्भ सूची –

आधुनिक विश्व के सन्दर्भ में भारतीय शिक्षा

1- राजनैतिक सिद्धान्त, कक्षा 11वीं–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली

2- लोकतांत्रिक राजनीति कक्षा 9–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली

3- लोकतांत्रिक विद्यालय (मूल पुस्तक– डेमोक्रेटिक स्कूल)–सम्पादन डब्ल्यू. एपल व जेम्स ए. वीन, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (म.प्र.)

4- 'शिक्षा का समाजशास्त्रीय संदर्भ, (ए.आर.कामथ का लेख)–सम्पादक–सुरेश शुक्ल और कृष्ण कुमार ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली

5- 'भारत की शिक्षा व्यवस्था–विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

6- 'समग्र नई तालीम/सम्पादन–शेखर–दत्त प्रकाशक– नयी तालीम समिति, आश्रम सेवाग्राम वर्धा (महाराष्ट्र) एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट नई दिल्ली

7- 'शिक्षा विमर्श' (त्रैमासिक पत्रिका) अंक–मई 98, प्रकाशन–दिगन्तर खेलकूद समिति, जयपुर (राजस्थान)

8- 'भारत का राजपत्र' असाधारण, भाग – 2, खण्ड 1 प्राधिकार से प्रकाशित नई दिल्ली वृहस्पतिवार, अगस्त 27, 2009/भाद्र 5, 1931, विधि एवं न्याय मंत्रालय, बच्चों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

9- 'प्राशिका/एकलव्य का प्राथमिक शिक्षा में अभिनव प्रयोग–रत्न सागर प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित।

10-राज समाज और शिक्षा–कृष्णकुमार, राजकमल प्रकाशन 2006, नई दिल्ली

11-'खतरा स्कूल' (मूल पुस्तक–डेंजर स्कूल)–विनोद रैना, प्रकाशक–भारत ज्ञान विज्ञान समिति

12-Education com and after, J.P.Naik

13-Short history of education in India, J.P.Naik

14-समरहिल–ए. एस. नील., एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)

15-असफल स्कूल, जॉन होल्ट, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)

16-रविन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन–ग्रंथ शिल्पी, प्रा. लि. नई दिल्ली

शाला अनुभव कार्यक्रम मार्गदर्शिका

(प्रथम वर्ष)

शाला अनुभव कार्यक्रम (प्रथम वर्ष)
मार्गदर्शिका

1. शाला अनुभव कार्यक्रम से आशय :–

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के विचार को साकार रूप देने के लिए ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम एवं अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जो शिक्षकों में बच्चों की समझ, शिक्षा की समझ, समस्याओं को पहचानने तथा विभिन्न समकालीन चुनौतियों पर चिंतन कर उन पर विजय प्राप्त कर सकने में मदद कर सके । इससे विद्यालयों में बच्चों के लिए न केवल विकास की परिस्थितियाँ निर्मित होंगी बल्कि बच्चे सीखने में आत्मनिर्भर बनेंगे। डी.एड. नवीन पाठ्यक्रम में शिक्षकों की समझ एवं आवश्यक क्षमताओं को इसी दिशा में विकसित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों की आवश्यकता नवीनतम् शिक्षा सिद्धांतों एवं बहुआयामी विकास कार्यक्रमों की समझ बढ़ाने हेतु प्रयोग एवं अभ्यास के अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। समझ की स्पष्टता के लिए छात्राध्यापक विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों में एक पूर्णकालिक शिक्षक की भाँति शिक्षण अनुभव प्राप्त करेंगे।

द्विवर्षीय डी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत् शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों तथा शिक्षण कार्य को एक दूसरे की पृष्ठभूमि में समझा जाएगा। यह कार्य प्रथम वर्ष 60 कार्य दिवसों (लगभग 2 माह) में संपन्न किया जाएगा। कार्यक्रम दो चरणों में सम्पन्न होगा।

2. परिप्रेक्ष्यः

शाला अनुभव कार्यक्रम की संकल्पना स्कूल के समग्र अनुभव की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से की गई है। एन.सी.टी.ई. (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद्)/एन.सी.ई.आर.टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्) के दस्तावेजों व शिक्षक–शिक्षा पर हो रही चर्चाओं में इस बात पर अधिक जोर दिया जा रहा है कि शाला अनुभव कार्यक्रम का उद्देश्य केवल एक विषय के पाठों की, पाठ योजना बना कर प्रदर्शन के लिए नहीं होना चाहिए अपितु इसमें छात्राध्यापकों को सम्पूर्ण शाला के साथ कार्य करके उसके विभिन्न पहलुओं यथाः बच्चे, कक्षा, कक्षाकक्ष प्रक्रिया बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम आदि को समझने का अवसर मिलना चाहिए यह शाला अनुभव योजना, 40 स्वतंत्र पाठ योजनाओं से कई अर्थों में अलग है। इसमें शिक्षण क्रिया पर ध्यान दिए जाने की अपेक्षा सीखने–सिखाने में बच्चों की भूमिका पर ध्यान दिया जाएगा। पहले दिन किए गए कार्य का अगले दिन से प्रभाव देखा जाएगा। साथ ही जो भी विषय पढ़ाया गया है उसका बाद में पढ़ाई गई सामग्री व प्रक्रिया से संबंध स्थापित किया जाएगा। यह अपेक्षा है कि छात्राध्यापक 50 दिवसीय शाला अनुभव कार्यक्रम में कुछ लक्ष्य उदाहरणार्थः जोड़ की अवधारणा पर काम, गुणा, पढ़ना–लिखना सिखाना, कहानी के साथ काम करना और यह देखना कि भाषा सीखने में कहानी बच्चों की कैसे मदद करती है और ऐसे ही अन्य विषय पर कार्य करें। सम्बन्धित विषयों पर कार्य करते हुए वे सिर्फ यह ही नहीं देखेंगे कि बच्चे ली गई अवधारणाओं को कितना सीखे हैं वरन् इस दौरान जैसा कि ऊपर भी कहा गया है; वे बच्चे कैसे सीखते हैं, सीखने के दौरान बच्चों को कहाँ–कहाँ किस तरह की कठिनाइयाँ

आती है व क्यों आती है तथा उसके लिए क्या किया जा सकता है इन पर लेकर जाएँगे नियमित विचार कर उसका सतत् आकलन करते हुए आगे बढ़ेंगे। शालानुभव कार्यक्रम में दो–दो प्रशिक्षुओं की टीम एक साथ काम करेगी ताकि प्रशिक्षु एक–दूसरे से विभिन्न विषयों पर अपनी समझ को बाँट सके, उस पर चर्चा कर सके व सीख सके।

3. शाला अनुभव कार्यक्रम की रूपरेखा :–

डी.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों हेतु शाला अनुभव कार्यक्रम का आयोजन निम्नांकित चरण/क्रम में सम्पन्न होगा :–

सारणी क्रमांक 01

क्रम/चरण	कार्यक्रम/गतिविधियाँ	दिवस
1	अभ्यास हेतु डाइट द्वारा शालाओं का चयन	–
2	चयनित शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों के साथ चर्चा (दो दिवसीय उन्मुखीकरण)	2 दिन
3	10 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम के लिए छात्राध्यापकों की डाइट में 10 दिवसीय तैयारी	10 दिन
4	चयनित शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा 10 दिवसीय शाला अवलोकन।	10 दिन
5	50 दिवसीय शाला शिक्षण अनुभव के लिए छात्राध्यापकों की डाइट में 30 दिवसीय तैयारी	30 दिवस
6	छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में 50 दिवसीय शाला शिक्षण अनुभव।	50 दिवस
7	छात्राध्यापकों का मूल्यांकन	

4. शाला अनुभव कार्यक्रम के उद्देश्यः–

शाला अनुभव कार्यक्रम के निम्नांकित उद्देश्य हैं :–

1. शाला में कार्य करते हुए शाला को तथा उसमें कार्य करने के तरीको को समग्र रूप से समझने हेतु अवसर प्रदान करना।
2. वास्तविक परिस्थितियों में प्रभावी शिक्षण के लिए सैद्धांतिक समझ का व्यवहार में उपयोग और चिंतन क्षमता का विकास करना।
3. विद्यालय संबंधी विभिन्न कार्यों को करने के अवसर उपलब्ध करना ताकि वे प्रत्येक समस्या एवं चुनौती को पहचान कर, हल कर पाने की क्षमता स्वयं विकसित कर सकें।
4. बच्चों की समझ के अनुरूप प्रभावी शिक्षण कार्य के लिए स्वयं को तैयार करना।

5. छात्राध्यापकों में विषय वस्तु पर पूरे अधिकार और विश्वास के साथ अध्यापन करने की क्षमता का विकास करना।

6. शाला अनुभव के दौरान शाला प्रबंधन, समुदाय के साथ कार्य, बच्चों को समझना तथा पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को समझना एवं प्रभावी शिक्षण हेतु इनकी आवश्यकता को महसूस करने का अवसर देना जिससे विद्यालय, समुदाय तथा बच्चों के बीच आपसी संबंध की समझ विकसित हो सके।

5. शाला अनुभव कार्यक्रम के चरण :–

5.1 प्रथम चरणः अभ्यास हेतु शालाओं (Practicing School) का चयनः–

❖ डाइट द्वारा अभ्यास हेतु उन प्राथमिक शालाओ का चयन किया जाएगा जो 8 कि.मी. की परिधि में हो। यद्यपि छात्राध्यापकों को ग्रामीण क्षेत्रों में 8 कि.मी. से अधिक दूर की शालाओं के चयन की छूट होगी किन्तु य़ात्रा भत्ता की पात्रता नहीं होगी। किसी भी स्थिति में एक शिक्षकीय शाला का चयन नहीं किया जाएगा।

❖ 8 कि.मी. की परिधि में यदि सभी छात्राध्यापकों के लिए विद्यालय उपलब्ध नहीं हो पाते हैं तो 10–12 कि.मी. के अंदर की शालाओं का भी चयन किया जा सकेगा।

❖ चयनित समस्त स्कूलों का डाइट द्वारा आकलन कर सूची तैयार की जाएगी कि वहाँ क्या–क्या भौतिक एवं मानवीय संसाधन उपलब्ध हैं, बच्चों की दर्ज संख्या, शिक्षकों की स्थिति, गांव – मोहल्लों का सहयोग, विद्यालय में शिक्षण का स्तर इत्यादि।

❖ दर्ज संख्या को ध्यान में रखकर 50 तक की दर्ज संख्या वाली प्राथमिक शालाओं में दो समूह **(एक समूह में दो छात्राध्यापक)** 50 से 100 तक की दर्ज संख्या वाली शालाओं में तीन समूह **(छः छात्राध्यापक)** तथा 100 से अधिक दर्ज संख्या वाले प्राथमिक शालाओं में चार समूह में छात्राध्यापकों को भेजा जा सकेगा। किसी भी शाला में चार से अधिक समूह नहीं भेजे जाएँगे।

❖ शाला आबंटन के समय छात्राध्यापकों से शालाओं के चयन के संबंध में उनकी रूचि जान ली जाएगी।

❖ यदि किसी शाला में कुल दर्ज संख्या 50 से कम हो, तो शाला का चयन नहीं किया जाएगा।

नोटः– शालाओं का चयन डाइट प्राचार्य के मार्गदर्शन में प्रभारी अपने सभी संकाय सदस्यों के साथ मिलकर करेंगे।

5.2 दूसरा चरणः चयनित शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों के साथ चर्चा (दो दिवसीय उन्मुखीकरण) :–

प्राथमिक शालाओं के चयन पश्चात् उन शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं एक शिक्षक के लिए डाइट में दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नांकित हैं–

- प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों को शाला अनुभव कार्यक्रम से परिचित कराना तथा बदलाव की आवश्यकता पर ध्यान आकृष्ट कर कार्यक्रम के महत्व को समझने में मदद करना।
- 10 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम एवं 50 दिवसीय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम के दौरान प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करना।
- 10 दिवसीय शाला अवलोकन एवं 50 दिवसीय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम की कार्ययोजना तैयार कराना।

उन्मुखीकरण कार्यक्रम में चर्चा 60 दिवसीय शाला अनुभव कार्यक्रम के समय शाला के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों की भूमिका क्या होगी इस पर केन्द्रित होगी। कार्यक्रम में शिक्षकों व प्रधान शिक्षकों की निम्न भूमिका अपेक्षित है।

- छात्राध्यापकों से शाला तथा शाला में होने वाली विभिन्न गतिविधियों का परिचय देना।
- शाला में शिक्षक तथा प्रधान शिक्षक की भूमिका के बारे में बातचीत करना।
- शाला के विभिन्न अभिलेखों, पंजियों से अवगत कराना तथा उनकी जरूरत व उनके संधारण के उद्देश्य व तरीकों को समझने में मदद करना।
- शाला की विभिन्न समितियों के बारे में परिचय तथा समितियों की आवश्यकता तथा उनके कार्य को समझने में मदद करना।
- शाला के बच्चों (प्रत्येक छात्र–छात्रां) का व्यक्तिगत परिचय (उनकी विशेषताओं सहित) कराएँगे जिससे छात्रों को समझने में छात्राध्यापकों को आसानी होगी।
- छात्रों के पालकों का परिचय भी छात्राध्यापकों से कराएँगे ताकि छात्राध्यापक को बच्चों की पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति से अवगत होने में मदद मिले।
- शाला की समस्त समितियों से छात्राध्यापकों को परिचित कराएँगे।
- उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य छात्राध्यापकों को शालेय वास्तविकता से परिचित होने में मदद करना है ताकि वे अपनी 50 दिन की कार्ययोजना इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए बना सकें।
- छात्राध्यापक को यदि कोई समस्या है तो उसका समाधान वह स्वयं ढूंढ़ सके, इस हेतु प्रेरित करें ।
- 10 दिवसीय शाला अवलोकन के दौरान प्रधान शिक्षक व शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि छात्र अध्यापक अवलोकन का काम ठीक से कर पाएँ। अतः इस दौरान उन्हें शाला के अन्य कार्यों से न जोड़ा जाएँ इन 10 दिनों के दौरान छात्राध्यापक केवल अवलोकन करेंगे उन्हें पढ़ाने के लिए बाध्य न किया जाए, इस बात पर अवश्य चर्चा की जाएँ

❖ इस प्रक्रिया का लक्ष्य छात्राध्यापकों को यह समझने में मदद करना है कि विभिन्न शालेय गतिविधियाँ किस प्रकार संचालित होती है, एवं इन गतिविधियों के संचालन में एक शिक्षक की भूमिका क्या होती है।

❖ प्रत्येक छात्राध्यापक को यह समझने में मदद करें कि उन्हें आगामी 50 दिनों में किस कक्षा में कार्य करना है और उस दौरान वह बच्चों के साथ किन विषयों, अवधारणाओं पर कार्य करेंगे तथा कैसे करेंगे?

नोटः– डाइट प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि उपरोक्त उन्मुखीकरण में च्ब्ज्म् प्रकोष्ठ के सभी सदस्य अनिवार्य रुप से सहभागिता करें।

डाइट की सुविधा हेतु दो दिवसीय उन्मुखीकरण की समय सारणी **परिशिष्ट क्रमांक–1** में दी गई है जिसे आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।

5.3 तीसरा चरणः 10 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम के लिए छात्राध्यापकों की डाइट में 10 दिवसीय तैयारी

5.3.1 शाला अवलोकन हेतु भेजने से पूर्व छात्राध्यापकों से 10 दिनों तक डाइट में चर्चा कर अवलोकन के उद्देश्यों, निर्देशों एवं अवलोकन के समय ध्यान दी जाने वाली बातों के बारे में स्पष्ट समझा दिया जाएँ इस अवधि में निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा अपेक्षित है –

- ❖ अवलोकन के उद्देश्य
- ❖ अवलोकन संबंधी प्रपत्रों के बारे में विस्तृत चर्चा तथा स्पष्टीकरण, छात्राध्यापकों की शंकाओं का समाधान।
- ❖ नियमित अवलोकन का लेखन ।
- ❖ सूक्ष्म अवलोकन करने के तरीके।

डाइट की सुविधा हेतु 10 दिवसीय कार्यक्रम की समय सारणी (रूपरेखा) **परिशिष्ट क्रमांक – 2** में दी गई है जिसमें आवश्यकतानुसार संशोधन किया जा सकेगा।

5.3.2 10 दिवसीय कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण–

प्रथम दिवस – प्रथम दिवस सभी छात्राध्यापकों से उनके **स्कूली जीवन के अनुभवों** को ध्यानपूर्वक सुनें तथा इस पर बात करें कि उन अनुभवों में ऐसा क्या हैं जिस वजह से अभी तक यह अनुभव उनको याद है। उन्होंने अपने स्कूली जीवन में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया होगा उस पर भी चर्चा करें। स्वाध्याय के महत्व पर समझ बनाने का प्रयास करें। इसके बाद **शिक्षक क्यों बनना चाहते हैं?** पर चर्चा करें। साथ ही स्कूल में पढ़ाने के अनुभव की आवश्यकता पर बातचीत करें। उन्होंने अपने स्कूली जीवन में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया होगा उस पर भी चर्चा करें।

स्वाध्याय के महत्व पर समझ बनाने का प्रयास करें। प्रथम दिवस के समापन के समय उन्हें **'बच्चे, खेल और सीखना'** विषय पर आधारित पठन सामग्री वितरित करें तथा निर्देश दें कि कल उक्त विषय पर कक्षा में चर्चा की जाएगी।

दूसरा दिवस – पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा करें। कक्षा प्रबंधन के बारे में बताएँ। ये कार्य दोपहर पूर्व संपन्न कर लिया जाएँ दोपहर पश्चात् ***शाला अवलोकन एवं कक्षा अवलोकन*** के लिए तैयार प्रपत्रों *(प्रपत्र क्र. 1 एवं 2)* पर विस्तार से बातचीत की जाए एवं उन्हें बताया जाए कि प्रपत्रों को किस प्रकार भरा जाना होगा तथा उसका उपयोग प्रतिवेदन बनाने में किस प्रकार करना होगा। तीसरे दिवस हेतु पठन सामग्री **'बच्चे कैसे सीखते हैं'** का वितरण करें।

तीसरा दिवस – पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा करें। ध्यान रहे चर्चा में सभी छात्राध्यापकों की सहभागिता हो। चर्चा पश्चात् **'बच्चे बहुत कुछ जानते हैं'** विषय पर छात्राध्यापकों से उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बातचीत की जाएँ साथ ही शाला में बच्चों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दुओं पर भी चर्चा करें। द्वितीय सत्र में ***बच्चों से बातचीत के लिए तैयार*** प्रपत्र *(प्रपत्र क्र. 3 व 4)* पर विस्तार पूर्वक चर्चा करें। चौथे दिवस हेतु **'स्कूल और समाज'** विषय पर पठन सामग्री का वितरण करें।

चौथा दिवस – पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा उपरांत **समुदाय एवं सामुदायिक सहभागिता का शिक्षा में महत्व** पर चर्चा करें। ***समुदाय के साथ चर्चा एवं गाँव – मोहल्ला की जानकारी*** से सम्बन्धित प्रपत्रों *(प्रपत्र क्र. 6 एवं 7)* पर विस्तार पूर्वक चर्चा कर उनकी शंका का समाधान कर आगामी दिवस के लिए **भाषा सीखने से संबंधित (भाषा माने क्या)** पठन सामग्री का वितरण करें।

पाँचवाँ दिवस– पूर्व दिवस में वितरित पठन सामग्री तथा **भाषा और अध्यापन** के चुने हुए अंश पर चर्चा कर **कक्षा 1 से 5 की भाषा की पुस्तकों के प्राक्कथन** छात्राध्यापकों को पढ़ने के लिए दें एवं भाषा सीखने के दृष्टिकोण पर बातचीत करें तथा उनसे चर्चा करें कि बच्चों की भाषायी क्षमता का आकलन/अनुमान कैसे कर सकते हैं। आगामी दिवस के लिए **'क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है' तथा 'प्रारम्भिक गणित सीखने सीखाने का एक परिप्रेक्ष्य'** पठन सामग्री का वितरण करें।

छठवाँ दिवस – पूर्व दिवस में वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा उपरांत **गणित विषय को रुचिकर** बनाने हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों एवं उनकी आवश्यकता पर चर्चा करें। गतिविधियों को करवाने से पूर्व उसके चुनाव एवं तैयारी पर चर्चा कर **कक्षा एक से पाँच तक गणित की पुस्तकों के प्राक्कथन** छात्राध्यापकों को पढ़ने के लिए दें व उस पर बातचीत करें तथा उनसे चर्चा करें कि **बच्चों की गणितीय क्षमता** का आकलन/अनुमान कैसे कर सकते हैं। आगामी दिवस के लिए पठन सामग्री **'बच्चे क्यों नही पढ़ सकते' तथा 'सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ'** का वितरण करें।

सातवाँ दिवस–पिछले दिवस की पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा के बाद **बच्चों की रुचि एवं व्यक्तिगत क्षमता** की समझ पर चर्चा करें। छात्राध्यापक रिपोर्ट (प्रपत्र क्र. 5 व 8) किस प्रकार तैयार करेंगे, पर चर्चा करें। साथ ही उन्हें **शैक्षिक स्तर का अनुमान** लगाने/पता करने के विभिन्न तरीकों पर भी बातचीत करें। आगामी दिवस के लिए पठन सामग्री **बच्चे असफल कैसे होते हैं** का वितरण करें।

आठवाँ दिवस–पिछले दिवस की पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा के बाद गतिविधि के आयोजन पर चर्चा करें तथा ***शालेय अभिलेख*** के लिए तैयार *प्रपत्र क्र. 9,10 व 11* पर बातचीत करें। आगामी दिवस के लिए पठन सामग्री अपने **ज्ञान की संरचना तथा गतिविधि** का वितरण करें।

नौवाँ दिवस – छात्राध्यापकों द्वारा दस दिवसों में किये जाने वाले कार्यों के बारे में क्रमबद्ध तौर पर बातचीत कर उनसे 10 दिवसीय **अवलोकन कार्ययोजना** तैयार करवाएँ। उदाहरण के लिए शाला अवलोकन, कक्षा अवलोकन समुदाय से बातचीत, गाँव – मोहल्ला की जानकारी एकत्रित करना अभिभावकों से मिलना इत्यादि । छात्राध्यापकों को शाला आबंटन का कार्य इसी दिवस किया जाएँ **10 दिवसीय शाला अवलोकन एवं 50 दिवसीय शाला शिक्षण कार्य के लिए आबंटित शाला व कक्षा एक ही होगी।**

दसवाँ दिवस– छात्राध्यापकों की शंकाओं का निवारण तथा उन्हें निम्नांकित जानकारी अनिवार्य रूप से दी जाएँ –

1. उनके सहयोगी साथी कौन होंगे?
2. उनके डाइट पर्यवेक्षक कौन होंगे?
3. उनके सहयोगी साथी, डाइट पर्यवेक्षक तथा एस.सी.ई.आर.टी के जिला प्रभारी के मोबाइल नंबर (उपलब्ध होने पर) उपलब्ध कराएँ।
4. उन्हें कठिनाई होने पर किससे संपर्क करेंगे? यह भी बताएँ।
5. उस संस्था का नाम छात्राध्यापकों को बताएँ जहां उन्हें शाला अवलोकन अनुभव प्राप्त करना है।
6. 10 दिवसीय अवलोकन में छात्राध्यापकों द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र उपलब्ध कराएँ।
7. इन अवलोकन प्रपत्रों से विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करने के विषय में चर्चा करें।
8. छात्राध्यापकों के लिए तैयार निर्देश उपलब्ध कराएँ।

5.3.3 शाला अवलोकन हेतु जाने से पूर्व छात्राध्यापकों को दिए जाने वाले सामान्य निर्देशः–

10 दिवसीय शाला अवलोकन के समय छात्राध्यापकों से निम्नांकित **कार्यों की अपेक्षा** की जाती है –

❖ शाला लगने के निर्धारित समय से 10 मिनट पूर्व पहुँचें एवं प्रार्थना में अनिवार्य रूप से शामिल हों।

- ❖ शाला में रखी उपस्थिति पंजी पर नियमित हस्ताक्षर करें। यह विद्यालय की नियमित पंजी से अलग होगी तथा उसे शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात प्रधानपाठक द्वारा उपस्थिति प्रमाणित कर डाइट में जमा किया जाएगा।
- ❖ शाला के समस्त कार्यों का जिनका छात्राध्यापक को अवलोकन करना है, उनकी सूची बनाकर उन्हें सम्पन्न करने हेतु 10 दिनों का टाइम टेबल (प्रधान अध्यापक के सहयोग से) बनाएँ।
- ❖ टाइम टेबल में समुदाय (गाँव के कुछ लोगों से मिलना), अभिभावकों से मिलना, बच्चों से बातचीत करना, शालेय कार्यों में सहयोग करना आदि को भी शामिल करें।
- ❖ एक समूह के दोनों छात्राध्यापक एक ही कक्षा में जाकर कक्षा का अवलोकन करें तथा आपसी चर्चा कर अपने अनुभवों को व्यक्तिगत रूप से लिखें।
- ❖ अवलोकन प्रपत्र भरें व अवलोकन की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करें।
- ❖ डाइट के निर्धारित गणवेश में शाला में उपस्थिति दें।
- ❖ शाला अनुभव कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रत्येक छात्राध्यापक, प्रधानाध्यापक के परामर्श और हस्ताक्षर युक्त लिखित जानकारी लेकर आएगा कि उसे आगामी 50 दिनों में किस कक्षा में क्या कार्य करना है और बच्चों को सीखने में किस प्रकार मदद करनी है।
- ❖ छात्राध्यापक यह भी लिख कर लाएँगे कि वे बच्चों को जो सिखाना चाहते हैं उसमें से अभी मोटे तौर पर बच्चों को क्या—क्या आता है।
- ❖ छात्राध्यापक निर्धारित शाला से अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् नियत तिथि पर संबंधित डाइट में अपनी उपस्थिति देंगे।

5.4 चौथा चरण : चयनित शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा 10 दिवसीय शाला अवलोकन :—

जैसा कि पहले भी कहा गया है इस कार्यक्रम से यह अपेक्षा है कि छात्राध्यापक शाला को समझें तथा इसके विभिन्न घटकों से परिचित हों, कक्षा—कक्ष प्रक्रिया को समझें, विषयवस्तु के बारे में अपनी समझ बना पाएँ, कक्षा—कक्ष में व शाला में अध्यापक की भूमिका को समझे ताकि वे शाला में बच्चों एवं समाज के प्रतिनिधियों के साथ भविष्य में क्या कार्य किया जाना है यह तय करने में सक्षम हों।

5.5 पाँचवा चरणः 50 दिवसीय शाला अनुभव के लिए डाइट में 30 दिवसीय तैयारी :—

5.5.1 डाइट में 30 कार्य दिवसों में मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य किए जाएँ —

अ. छात्राध्यापकों द्वारा 10 दिवसीय अवलोकन के दौरान (प्रथम चरण) किये कार्यों का विश्लेषण।

ब. छात्राध्यापकों से शिक्षण अनुभव के लिए आवश्यक सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों के बारे में बातचीत करना तथा उनके विभिन्न पक्षों को समझने में मदद करना।

स. छात्राध्यापकों द्वारा अगले 50 दिवसों में शाला में किए जाने वाले कार्यों के बारे में चर्चा व तैयारी कराना।

द. डाइट के पर्यवेक्षकों के लिए दिशा निर्देश जारी करना जिससे कि वे छात्राध्यापकों को उचित मार्गदर्शन दे सकें।

अ. छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम चरण में किए कार्यों का विश्लेषण :–

सर्वप्रथम अपूर्ण प्रतिवेदन / विश्लेषणात्मक रिपोर्ट पूरा करने हेतु छात्राध्यापक को दो दिन का समय प्रदान करें। इसके पश्चात् सभी छात्राध्यापकों को 25–25 के समूह में बाँटकर उनके ***अनुभवों का प्रस्तुतीकरण कराएँ***। इसके लिए चार दिन का समय पर्याप्त होगा। प्रस्तुतीकरण में चर्चा के बिन्दु निम्न होंगे–

(अ) शाला परिचय
- (i) ग्रामीण / शहरी
- (ii) कुल बच्चे व शिक्षक
- (iii) भौतिक संसाधन (कमरे, खेल का मैदान इत्यादि)

(ब) शाला अनुभव
- (i) कार्यालयीन गतिविधियाँ
- (ii) खेलकूद संबंधी जानकारी
- (iii) पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप
- (iv) अन्य शालेय गतिविधियाँ
- (v) समुदाय व उसकी सहभागिता

(स) कक्षा–कक्ष प्रक्रिया
- (i) शिक्षक ने क्या किया
- (ii) बच्चों ने क्या किया
- (iii) पाठ पढ़ाने का तरीका
- (iv) कक्षा का समग्र वातावरण
- (v) बच्चों से बातचीत का अनुभव

इसके साथ–साथ छात्राध्यापकों में यह भी बातचीत की जाए कि पूरे अनुभव के दौरान उन्हें क्या–क्या बातें अच्छी लगी व ऐसी कौन सी थी जो अच्छी नहीं लगी व क्यों?

(डाइट के सदस्य प्रश्नावली बनाकर रखें, जिससे छात्राध्यापकों के अनुभवों को जानकर उनकी समस्त जानकारियों के बारे में समझ विकसित हो सके। प्रस्तुतीकरण के समय छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करें।)

छात्राध्यापकों के प्रस्तुतीकरण एवं शाला अवलोकन अनुभव के प्रतिवेदन के आधार पर डाइट पर्यवेक्षक (Mentor) कार्यों का विश्लेषण करेंगे।

ब. छात्राध्यापकों को शिक्षण अनुभव के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों की जानकारी देना:–

इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से छात्राध्यापकों को स्कूल में अध्यापन के समग्र चित्र के साथ–साथ भाषा (हिन्दी) एवं गणित विषयों के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों की जानकारी देना है। साथ ही

छात्राध्यापकों को शिक्षण अवलोकन एवं शिक्षण के लिए तैयार करना है। इसके अन्तर्गत निम्नांकित पक्ष सम्मिलित होगें –

- **I.** शिक्षण योजना की आवश्यकता, शिक्षण योजना में एक पूरे दृष्टिकोण क्या सिखाना चाहते है? व उस पर व कैसे बच्चों के साथ सीखने–सिखाने हेतु कार्य करेंगे इत्यादि को उभारना है। इसके लिए पूरे समय की साप्ताहिक योजना बनाना व लागू करने की अपेक्षा है।
- II. शिक्षण की परंपरागत विधियाँ
- III. वर्तमान प्रशिक्षण प्रक्रिया की जानकारी
- IV. बच्चों के साथ कार्य करने के अनुभव को समझना व बाँटना
- V. कक्षा 1 से 5 तक पाठ्यपुस्तकों (भाषा एवं गणित) की समझ
- VI. समग्र शिक्षण योजना निर्माण एवं दैनिक शिक्षण योजना भाषा (5 दिन)
- VII. समग्र शिक्षण योजना निर्माण एवं दैनिक शिक्षण योजना गणित (5 दिन)
- VIII. बाल मनोविज्ञान, शैक्षिक अधिगम सामग्री का निर्माण, संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन व चर्चा आदि (5 दिवस)।

30 दिवसीय तैयारी कार्यक्रम में छात्राध्यापकों से डाइट में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की जाएगीः–

- ❖ शाला के साथ व एक विशेष कक्षा के साथ कार्य करने की योजना बनाने में महत्वपूर्ण बिन्दुओं/गतिविधियों को समझ पाने में मदद करना। विषय वस्तु से संबंधित कठिनाइयों का सरलीकरण।
- ❖ प्राथमिक शाला में बच्चों को क्या सिखाने का प्रयास करना है और हर कक्षा में हिंदी, गणित तथा अन्य मुद्दे सीखने का अवसर कैसे बनाएँ, विषय वस्तुओं को पढ़ाने के विशिष्ट उद्देश्य क्या हैं तथा पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ये उद्देश्य किस प्रकार पूरे होते हैं।
- ❖ कक्षा में किस तरह की क्रियाएँ तथा गतिविधियाँ की जा सकती हैं उनका परिचय। इन सब पर व उन विषयों की महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर चर्चा की जाएँ
- ❖ बच्चों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने के संबंध मैं।
- ❖ बच्चों के साथ खेलों के आयोजन के संबंध में ।
- ❖ समग्र शिक्षण योजना का निर्माण दो–दो छात्राध्यापकों के समूहों द्वारा तैयार करना एवं उस पर चर्चा।
- ❖ कक्षा संचालन कैसे करें पर चर्चा।
- ❖ बच्चों से किए जाने वाले संभावित सवाल–जवाबों पर चर्चा।
- ❖ बच्चों के कक्षा कार्य तथा गृह कार्य की जाँच पर चर्चा।
- ❖ व्यक्तिगत डायरी/ प्रतिवेदन कैसे लिखें ?
- ❖ बच्चों व उनके व्यवहार की समझ।
- ❖ अनुपस्थित बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए किए जा सकने वाले प्रयासों पर बातचीत।
- ❖ स्कूल व्यवस्था की समझ विकसित करने हेतु पत्रों की जानकारियाँ प्रदान करना ।

जैसे – शाला में आने वाले पत्रों की जानकारी।

- ❖ बच्चों के साथ खेलों के आयोजन पर चर्चा (10 दिवसीय शाला अनुभव के समय छात्राध्यापक यह जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे कि शाला के बच्चे किस प्रकार के खेल खेलते हैं। 50 दिन में से 8 दिन बच्चों के साथ खेल संबंधी गतिविधियों का आयोजन कर उन्हें स्वयं भी बच्चों के साथ खेलना होगा। खेल लगातार या बीच–बीच में कराए जा सकते हैं। खेल बच्चों की रुचि के अनुरूप होने चाहिए)
- ❖ शाला में समुदाय की भागीदारी पर विस्तार से चर्चा करें।
- ❖ छात्राध्यापक का आकलन जिन बिन्दुओं पर होना है, डाइट के पर्यवेक्षक उन्हें बताएँगे।
- ❖ 60 दिनों (10+50) पर आधारित छात्राध्यापकों की मूल्यांकन प्रक्रिया पर चर्चा ताकि छात्राध्यापक 60 दिनों की प्रत्येक गतिविधि को पूरी गंभीरता और सतर्कता से सम्पन्न कर सकें।
- ❖ बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधियों के लिए अभ्यास शाला का उपयोग अवश्य करें।

स. छात्राध्यापकों को 50 दिवसों में उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य/भूमिका से अवगत कराना

- ❖ शाला में पहला छात्राध्यापक शाला योजना के आधार पर पढ़ाएगा, दूसरा उसका अवलोकन करेगा। शाला समय के दूसरे सत्र में दूसरा छात्राध्यापक अध्यापन कार्य करेगा तथा पहला छात्राध्यापक अवलोकन कार्य करेगा।
- ❖ छात्राध्यापक ध्यान रखेंगे कि शाला के शिक्षक उनके शिक्षण का अवलोकन करेंगे तथा प्रतिदिन रिपोर्ट भी लिखेंगे।
- ❖ कक्षा अवलोकन की रिपोर्ट दोनों मिलकर बनाएँगे जिसमें कक्षा में क्या ठीक हुआ इसका विवरण तो होगा ही पर साथ ही जो कार्य ठीक नहीं हुआ उसका विवरण भी सम्मिलित करना आवश्यक है, ताकि अगली कक्षा में उसे बेहतर किया जा सके। इसमें स्वमूल्यांकन पर भी चर्चा की जाएगी। जैसे– पढ़ाने वाला शिक्षक भी स्वयं के शिक्षण के बारे में लिखे ''मैं ऐसा करता तो और ज्यादा अच्छा होता''
- ❖ प्रति तीसरे दिन छात्राध्यापकों की शाला के अध्यापकों के साथ बैठक होगी। इसकी सूचना वे डाइट के पर्यवेक्षक को भी देंगे ताकि वे भी उसमें उपस्थित हो सकें। इस बैठक में छात्राध्यापक अपने कक्षा–कक्ष के अनुभव सभी के साथ बाँटेंगे तथा यदि कही कठिनाई आ रही है तो उस पर भी बातचीत की जाएगी। समीक्षा बैठक सप्ताह के कार्यों की रिपोर्ट के साथ, प्रति सप्ताह प्रधान अध्यापक के साथ एक बार आयोजित की जावेगी।
- ❖ छात्राध्यापक, प्रधान अध्यापक से अनुशासन संबंधी रिपोर्ट प्राप्त करेंगे, जिसमें उनकी उपस्थिति/अनुपस्थिति, शाला में समय पर उपस्थिति, शाला छोड़ने के समय की जानकारी, कार्य व्यवहार तथा कार्य कुशलता जैसे – कक्षा प्रबंधन, अध्यापन, टी. एल. एम. का उपयोग, बच्चों के साथ खेल, शालेय कार्यो में योगदान आदि का मुख्य रूप से उल्लेख होगा।

सहयोगी के रूप में छात्राध्यापक की भूमिका –

दोनो छात्राध्यापक एक समूह (टीम) के रूप में कार्य करेंगे, एक दूसरे के साथ सहयोग कर निम्नबिन्दुओं का ध्यान रखेंगे तथा एक दूसरे के कार्यों का विश्लेषण कर श्रेष्ठता की ओर बढ़ेंगे कार्य के दौरान :–

- सहयोगी, छात्राध्यापक के अध्यापन का ध्यान से अवलोकन करेंगे तथा कक्षा–कक्ष प्रक्रिया के बारे में विश्लेषणात्मक दृष्टि रखते हुए अपने अवलोकन कक्षा के पश्चात् अपने साथी को बताएँगे। यानि सिर्फ यह कहना काफी नहीं होगा कि यह अच्छा था बल्कि यह भी कि क्या अच्छा नहीं था और उसे ठीक करने के लिए क्या–क्या किया जाना चाहिएँ और फिर दोनों मिलकर कक्षा और बेहतर बनाने पर कार्य करें।

- दोनों छात्राध्यापक मिलकर स्कूल के बच्चों के साथ कार्य करेंगे व एक दूसरे को फीड बैक देंगे। विशेषकर निम्न तरह के अवलोकन होंगे जो रिकार्ड के रूप में भी रखेंगेः–
    - बच्चों को कितना मौका मिला?
    - किस तरह के सवाल पूछे?
    - समूह कार्य पर्याप्त् था कि नहीं?
    - सभी बच्चों को शामिल कर पाए कि नहीं?
    - बच्चों ने कैसे जवाब दिए?
    - और क्या–क्या करना चाहिए?

द. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अध्यापकों के लिए दिशा निर्देश जारी करना जिससे कि वे छात्राध्यापकों को उचित मार्गदर्शन दे सकें।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अध्यापकों के लिए दिशा निर्देशः–
प्रत्येक 10 छात्राध्यापकों के लिए डाइट का एक अध्यापक नियुक्त होगा, जिसके द्वारा कम से कम 3 बार प्रत्येक प्रशिक्षार्थी का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जाएगा। इस कार्य के लिए निम्नांकित कार्य योजना प्रस्तावित है–

I. पहली बार अवलोकन – प्रथम सप्ताह में
II. दूसरी बार अवलोकन – बीच में
III. तीसरी बार अवलोकन – अंतिम दो सप्ताह में
IV. आवश्यकतानुसार अवलोकन किया जा सकता है। सभी छात्राध्यापकों की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में शनिवार को बैठक आयोजित की जाए जिसमें शाला अनुभव पर फीड बैक प्राप्त किया जाए यह माह के तृतीय तथा पंचम सप्ताह के शनिवार हो सकते हैं।

V. पर्यवेक्षक के रुप में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षक अवलोकन के समय शाला में ही छात्राध्यापकों से चर्चा करें उनके अनुभवों, कठिनाइयों आदि को सुनें एवं उचित मार्गदर्शन दें। इस बैठक में मुख्य रूप से निम्नांकित बिन्दुओं को देखें–

- ❖ कार्य कैसा चल रहा है। छात्रों को मार्गदर्शन व सहयोग की आवश्यकता है?
- ❖ कैसा लिखा जा रहा है? शाला अनुभव कार्यक्रम के अन्त तक छात्राध्यापक एक रिफलेक्टिव प्रतिवेदन लिखने में सक्षम हो जाएँ, अतः प्रतिवेदन की रिपोर्ट पर भी उन्हें फीडबैक दें।
- ❖ स्कूल के साथ संवाद की गुणवत्ता व स्कूल से मिल रहे सहयोग का प्रकार ?
- ❖ प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति को बेहतर करना।

VI. 50 दिन बाद शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान आने पर छात्राध्यापकों को अपने सभी अभिलेख पूर्ण एवं व्यवस्थित करने हेतु एक सप्ताह का समय दिया जाएँ तत्पश्चात् आगे उल्लेखित तरीके से उनका समूहवार मूल्यांकन किया जाएँ।

VII. 50 दिनों के शाला अनुभव के बाद संबंधित शालाओं के प्रधानअध्यापक अपने भरे हुए प्रपत्रों को लेकर निर्धारित तिथि में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान कार्यालय आएँगे। इन प्रपत्रों पर डाइट के पर्यवेक्षक की सलाह के आधार पर 30 अंकों के लिए छात्राध्यापकों का मूल्यांकन किया जाएँ

VIII. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के सदस्य तथा प्रधानअध्यापक आंकलन के बिन्दुओं की समझाइश तो शुरू से ही दें, लेकिन अवलोकन के दौरान उसके अध्यापन में इनमें से पांच या छः गुणों के आधार पर ही करें। आशय यह है कि उपरोक्त आंकलन के बिन्दुओं में से कोई भी पाँच या छः विशेषताओं का अपने शिक्षण में विकास करने में छात्राध्यापक स्वतंत्र होगा। मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापक का शिक्षण कौशल बढ़ाना ही नहीं, अपितु यह है कि एक नया व्यक्ति, शिक्षक के रूप में स्वयं को कक्षा में भली प्रकार समायोजित एवं स्वयं को आत्मविश्वास पूर्वक शिक्षण कार्य के लिए प्रस्तुत कर सके।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के पर्यवेक्षक की प्रारंभिक, मध्य और अंतिम अवलोकन रिपोर्ट से भी इस तथ्य की पुष्टि होगी कि 50 दिनों के शाला– अनुभव द्वारा छात्राध्यापक में किन–किन गुणों का विकास हुआ है। डाइट पर्यवेक्षक भी अवलोकन प्रपत्र भरेंगे और इसका प्रारूप प्रधानाध्यापक के अवलोकन प्रपत्र के जैसा ही होगा।

5.6 छठवां चरणः छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में 50 दिवसीय शिक्षण अनुभवः–

50 दिवसों में छात्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले कार्य/भूमिका निम्नांकित होगी –

I. शिक्षण योजना बनाना व क्रियान्वित करना।

II. कक्षा संचालन – शिक्षण योजना बनाने के उपरांत आबंटित विद्यालय में जुड़ने के साथ–साथ 25 कार्यदिवस में हिन्दी एवं 25 कार्यदिवस में गणित शिक्षण का कार्य प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा। यह कार्य छात्राध्यापक द्वारा एक पूर्णकालिक शिक्षक के रूप में किया जाएगा। शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षण योजना के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास किया जायेगा तथा कक्षा की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण योजना में परिवर्तन किया जा सकेगा।

III. शिक्षक के रूप में पढ़ाने के अनुभव तथा स्वमूल्यांकन प्रपत्र भरना।

IV. छात्राध्यापक अपने साथी द्वारा किए जा रहे शिक्षण कार्य का अवलोकन भी करेगा। इस अवलोकनों के आधार पर अपनी योजना में बेहतरी के लिए परिवर्तन करेगाा तथा साथी शिक्षक को सुझाव भी देगा।

V. हर कक्षा में 2 छात्राध्यापक साथ मिल कर जाएँगे ताकि आपस में चर्चा कर सकें –
आधा दिन एक कार्य करेगा, दूसरा अवलोकन करेगा और आधा दिन दूसरा कार्य करेगा पहला अवलोकन करेगा । दूसरे दिन के लिए दोनों मिलकर योजना बनाएँगे।

VI. अवलोकनकर्ता (सहयोगी) के रूप में कक्षा अवलोकन करना एवं कक्षा अवलोकन प्रपत्र भरना। कक्षा अवलोकन का प्रतिवेदन हर रोज तैयार करना।

VII. स्थानीय खेलों की जानकारी प्राप्त कर बच्चों के साथ खेलना। (8 दिनों में प्राप्त खेलों के अनुभव रिपोर्ट के रूप में लिखेंगे)

VIII. सप्ताह के कार्यों पर प्रतिवेदन लिखना।

5.6.1 सहयोगी के शिक्षण अवलोकन के अंतर्गत् निम्न गतिविधियाँ एवं सूचनाएँ अपेक्षित हैं–

- ❖ क्या साथी छात्राध्यापक ने बच्चों से बातचीत की व उनके विचारों को सुना ?
- ❖ क्या छात्राध्यापक ने योजना उसी तरह लागू की, जैसा सोचा था ?
- ❖ कक्षा में क्या महत्वपूर्ण बिन्दु सामने आए ?
- ❖ छात्राध्यापक ने किन तरीकों (गतिविधियों, क्रियाकलापों समेत) के माध्यम से पढ़ाना तय किया था ?
- ❖ यदि योजना में बदलाव किया तो क्या और क्यों करना पड़ा।
- ❖ क्या कक्षा अवलोकन के बाद लगता है, कि गतिविधियां उपयुक्त थीं या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता थी ?
- ❖ सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी कैसी थी? सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में क्या भाषा बच्चों की समझ में आ रही थी।
- ❖ छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा का माहौल कैसा था? (कितने बच्चे भाग ले रहे थे, बोल रहे थे। कार्य के बारे में आपस में चर्चा कर रहे थे? कितने बच्चे सुन नहीं रहे थे।
- ❖ शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट का उपयोग हुआ हो तो किस तरह से?
- ❖ ऐसी स्थिति कितनी बार निर्मित हुई जब बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे? या नहीं समझ पा रहे थे?
- ❖ कोई विशेष तथ्य या घटना (उल्लेख करें)
- ❖ कक्षा में क्या महत्वपूर्ण बिन्दु सामने आए ?

उपरोक्त सभी जानकारियों को एकत्र करने के लिए छात्राध्यापकों के लिए प्रपत्र तैयार किया गया है (प्रपत्र क्र.11 कक्षा अवलोकन प्रपत्र सहयोगी के रूप में)

6. 50 दिवसीय कार्यक्रम के लिए छात्राध्यापक को दिए जाने वाले सामान्य निर्देश–

- अपने साथ समग्र शिक्षण योजना तथा आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री जो उस दिन के अध्यापन के लिए आवश्यक हो, साथ लेकर जाएँ। आवश्यकतानुसार शिक्षण योजना को संशोधित भी करें।
- विषय की पूरी तैयारी/पूर्व अध्ययन करके जाएँ।
- शाला में रखी उपस्थिति पंजी पर नियमित हस्ताक्षर करें यह विद्यालय की नियमित पंजी से अलग होगी तथा उसे शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात् डाइट में जमा करेंगे प्रधान अध्यापक उपस्थिति प्रमाणित कर डाइट में जमा की जाएगी।
- कक्षा में छात्रों को किसी प्रकार का दण्ड न दें।
- अपने साथी का अध्यापन अवलोकन करते समय विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से अभिमत लिखें। लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखे कि यह अभिमत उसकी अध्यापन शैली में बेहतरी के लिए व कक्षा–कक्ष प्रक्रिया को समझने में मदद करने वाले हों। जब एक छात्राध्यापक पढ़ा रहा हो तो दूसरा छात्राध्यापक कक्षा के सुचारु संचालन में अपना योगदान प्रदान करे।
- छात्रों के शैक्षिक स्तर विकास के लिए पालक/समुदाय से सम्पर्क करें एवं उसका विवरण अपने पास रखें।
- समग्र रिपोर्ट बनाने के पूर्व छात्राध्यापक आपस में चर्चा कर लें तब संपूर्ण रिपोर्ट डाइट में प्रस्तुत करें।
- अभिलेखों, अवलोकन रिपोर्ट और कार्य विवरण को साथ लेकर आएँ और पर्यवेक्षक को दिखाएँ। प्राप्त फीडबैक के आधार पर आगे का कार्यक्रम बेहतर बनेगा।

7. छात्राध्यापकों का मूल्यांकन :

शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु छात्राध्यापकों के मूल्यांकन की योजना निम्नानुसार होगीः–

मूल्यांकनकर्ता एवं आधार सामग्री	निर्धारित अंक
1. प्रधान अध्यापक की राय पर आधारित मूल्यांकन :– • 10 दिवसीय फीड बैक प्रपत्र, • छात्राध्यापकों के व्यवहार • छात्राध्यापकों के 50 दिवसों के कार्य का।	कुल अंक 30
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान पर्यवेक्षक द्वारा – • छात्राध्यापकों के द्वारा प्रथम 10 दिनों के दौरान किए गए अवलोकन के प्रस्तुतीकरण, • 50 दिनों के शिक्षण कार्य तथा बच्चों के साथ अंतः क्रिया के आधार पर	कुल अंक 20

3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर :– • प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रथम एवं द्वितीय चरण के शाला अनुभव कार्यक्रम में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण। • अभ्यास शाला में किए गए शिक्षण कार्य, खेलकूद संचालन तथा अन्य कार्य	कुल 50 अंक
कुल अंक	**कुल अंक–100**

8. मूल्यांकन कैसे करेंगे?

A) प्रधान अध्यापक/शाला शिक्षकों द्वारा दी गई राय पर आधारित 30 अंक –

डाइट में प्रधान अध्यापक/शिक्षक को बुलाकर उनके द्वारा भरे प्रपत्रों प्रपत्र क्रमांक – 5, 12, 13 के अनुसार मूल्यांकन हेतु बातचीत/चर्चा करके डाइट के अध्यापकों द्वारा अंक दिये जाएँगे।

प्रधान अध्यापक/शिक्षक किन–किन बिन्दुओं पर आकलन करेंगे–

1. अध्यापन कार्य
   - कक्षा में छात्रों की भागीदारी,
   - कितने प्रतिशत बच्चे कक्षा में पूरी तरह शामिल थे ?
   - भाषा का प्रयोग
   - विषयवस्तु के बारे में स्वयं की समझ
   - विषयवस्तु सीखने–सिखाने का तरीका
   - बच्चों से बातचीत का तरीका
   - छात्रों को फीड बैक देने का तरीका
   - छात्राध्यापक का कक्षा संचालन
   - उपलब्ध सामग्री का अध्यापन में प्रयोग कितना उपयुक्त है ?
   - कक्षा प्रबंधन (बैठक व्यवस्था) पाठ के अनुकूल है या नहीं ?
   - बच्चों को अध्यापन में मजा आ रहा है, या नहीं ?
   - शिक्षण विधि बच्चों के स्तर के अनुरूप थी या नहीं?
   - छात्राध्यापक की कक्षा में स्थानीय परिवेश और भाषा का प्रयोग हो रहा था या नहीं?
2. नियमितता
3. पूर्व तैयारी
4. तारतम्यतता/क्रमबद्धता
5. स्वच्छता में योगदान (परिसर, कक्षों, विद्यार्थियों आदि की)
6. छात्राध्यापक का समुदाय से संबंध।
7. अनुपस्थित बच्चों को पुनः शाला में लाने में उनके प्रयास।
8. बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षाकार्य की (नोट बुक या कॉपियों की) नियमित जाँच

मूल्यांकन पत्रक –1

प्रधानाध्यापक/शिक्षक द्वारा छात्राध्यापक का मूल्यांकन पत्रक

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक	छात्राध्यापक का नाम							
			1	2	3	4	5	6	7	8
1	छात्राध्यापक का शाला–कक्षा में समय पर एवं नियमित उपस्थिति	अधिकतम 3 अंक								
2	शिक्षण योजना की पूर्व तैयारी तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन	अधिकतम 3 अंक								
3	शिक्षण विधि तथा गतिविधियों का चुनाव–पूर्व दिवस के साथ तारतम्यता एवं क्रमबद्धता	अधिकतम 3 अंक								
4	पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण सामग्री का उपयोग	अधिकतम 3 अंक								
5	कक्षा में बच्चों की भागीदारी	अधिकतम 3 अंक								
6	स्वच्छता ;शाला वातावरण एवं कक्षा के वातावरण में योगदान	अधिकतम 3 अंक								
7	छात्राध्यापक का समुदाय से सम्बंध	अधिकतम 3 अंक								
8	शाला में अनुपस्थित – अनियमित बच्चों को नियमित करने में छात्राध्यापक का प्रयास	अधिकतम 3 अंक								
9.	कक्षा प्रबंधन विशेषकर बैठक व्यवस्था का कार्य के अनुरूप होना	अधिकतम 3 अंक								
10	बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षा कार्य की नियमित जाँच	अधिकतम 3 अंक								
योग		कुल अंक								

हस्ताक्षर प्रधान अध्यापक

हस्ताक्षर डाइट प्राचार्य

टीपः– प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम 3 अंक निर्धारित हैं। प्रधान पाठक/शिक्षक, छात्राध्यापक के समग्र क्रियाकलापों को देखकर इन क्षेत्रों में से 0 से लेकर अधिकतम 3 अंक प्रदान कर मूल्यांकन करेंगे।

B) डाइट के शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक द्वारा मूल्यांकन 20 अंक हेतु –

डाइट के शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक द्वारा छात्राध्यापक के क्रियाकलापों का अवलोकन कर मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जाएगा –

मूल्यांकन पत्रक –2

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक	छात्राध्यापकों का नाम					
			1	2	3	4	5	6
1	शाला अवलोकन कर छात्राध्यापक द्वारा प्रस्तुत किए प्रतिवेदन की रिपोर्ट के आधार पर	5						
2	छात्राध्यापक द्वारा तैयार समग्र शिक्षण योजना	5						
3	समग्र शिक्षण योजना के अनुरुप अध्यापन कार्य तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन	5						
4	कक्षा व शाला में छात्राध्यापक का व्यवहार एवं भागीदारी	5						
योग		20						

हस्ताक्षर

शिक्षक प्रशिक्षक / पर्यवेक्षक

हस्ताक्षर

पी.एस.टी.ई प्रभारी

C) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान **स्तर पर मूल्यांकन 50 अंकों के लिए**

यह मूल्यांकन **शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान** के प्राचार्य तथा उनके द्वारा गठित समूह निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करेंगे–

मूल्यांकन पत्रक–3

1. **छात्राध्यापक द्वारा अपने किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरणः कुल 20 अंक**
   - कार्य की समझ (छात्राध्यापक के शिक्षकीय कार्य) **5 अंक**
   - बच्चों के बारे में समझ **5 अंक**
   - बच्चों को सिखाने में शिक्षण योजना का महत्व **5 अंक**
   - विषय की स्पष्टता (भाषा एवं गणित विषय) **5 अंक**
2. 10 दिन का शाला अवलोकन प्रतिवेदन **10 अंक**
3. छात्राध्यापक द्वारा तैयार समग्र शिक्षण योजना एवं उसमें आवश्यकतानुसार किए गए परिवर्तन **5 अंक**
4. 50 शिक्षण दिवस का कार्य प्रतिवेदन **10 अंक**
5. छात्राध्यापक से सवाल–जवाब **5 अंक**

अवलोकन प्रपत्र

शाला अनुभव कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक, अभ्यास परक और अनुभव आधारित बनाने के प्रयास के तहत प्रत्येक स्तर पर हुए अनुभवों एवं क्रिया–कलापों की समुचित जानकारी एवं व्यवस्थित मूल्यांकन की दृष्टि से विभिन्न अवलोकन प्रपत्र विकसित किए गए हैं। जिनमें से कुछ छात्राध्यापकों द्वारा, कुछ डाइट के शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा और कुछ प्रधान पाठक अथवा स्कूल के शिक्षकों द्वारा भरे जाएंगे।

इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि छात्राध्यापकों के अवलोकन स्तर का विस्तार होगा। दृष्टि तीक्ष्ण और वृहद होगी और वह ऐसी अनेक छोटी–छोटी समस्याओं को भी देखना सीख सकेंगे, यह शिक्षण, शाला और छात्र तीनों के उन्नयन में सहायक होगा।

अवलोकन प्रपत्र निम्नलिखित बिन्दुओं से संबंधित होंगे –

1. शाला अवलोकन रिपोर्ट
2. दैनिक अवलोकन रिपोर्ट
3. कक्षा का अवलोकन
4. बच्चों व शिक्षक की आपसी बातचीत एवं व्यवहार
5. गाँव की (स्थानीय) जानकारी
6. समुदाय से चर्चा
7. शालेय अभिलेख
8. आत्मावलोकन (स्वमूल्यांकन)
9. कक्षा अवलोकन का प्रारूप (सहयोगी के रूप में)
10. शिक्षक/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र
11. प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट
12. स्थानीय खेलों की जानकारी हेतु प्रपत्र
13. दैनिक शिक्षण योजना का स्वरूप
14. प्रधान अध्यापक के लिए प्रपत्र (10 दिवसीय)

....

....

प्रपत्र 1 (दस दिवसीय)

शाला अवलोकन (10 दिवस)

1. शाला का नाम :–...
2. प्रधान पाठक का नाम :–...
3. शाला में कार्यरत शिक्षकों की संख्या :– ....
4. कक्षावार दर्ज संख्या :– ....

कक्षा	बालक	बालिका	अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.पि.वर्ग	सामान्य	गत माह बच्चों की औसत उपस्थिति
1							
2							
3							
4							
5							

5. शाला की समय सारिणी
6. बच्चों की पृष्ठभूमि जैसे–
   - कितने बच्चे श्रमिक परिवार से हैं ?
   - कितने बच्चे नौकरी पेशा वर्ग के हैं ?
   - कितने बच्चे व्यापारी वर्ग के हैं ?
   - कितने बच्चों के पालक पढ़े–लिखे हैं ?
7. शाला भवन :– कच्चा / पक्का
8. शाला में कमरे :– दो / तीन / अधिक
9.. शाला में खिड़की दरवाजे सही सलामत हैं या नहीं?
10. शाला के ब्लैक बोर्ड (संख्या / आकार एवं स्थिति) डस्टर एवं चॉक की उपलब्धता
11. बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर / टाटपट्टी
12. प्रधानाध्यापक का कमरा / स्टाफ रूम / ऑफिस

13. शिक्षकों हेतु कुर्सी टेबल की स्थिति
14. शाला में बिजली एवं पंखे की व्यवस्था।
15 पानी की व्यवस्था नल/बोरिंग या अन्य पानी पीने के व्यवस्था गिलास आदि।
16. शौचालय की स्थिति
17. मध्यान्ह भोजन बनाने हेतु अलग से कमरा।
18. मध्यान्ह भोजन बनाने हेतु आवश्यक बर्तन।
19. मध्यान्ह भोजन करने हेतु बर्तन ।
20. शालेय अभिलेखों हेतु पेटी/आलमारी।
21. शाला में उपलब्ध अभिलेखों की सूची।
22. शाला में बाउण्ड्रीवाल अथवा घेरा।
23. शाला में वृक्षारोपण, उद्यान।
24. शाला में खेल का मैदान एवं खेल सामग्री
25. शाला में सहायक शिक्षण सामग्री की स्थिति।
26. शाला में स्वच्छता, छात्रों के द्वारा या चपरासी की व्यवस्था।
27. शाला में बाल–पुस्तकालय की स्थिति एवं छात्रों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग
28. प्रार्थना एवं बाल–सभा के आयोजन पर टीप।
29. क्या अभिभावक/गाँव के लोग किसी उद्देश्य को लेकर शाला में आते हैं।
30. जब बच्चे पढ़ नहीं रहे होते हैं तो खाली समय का उपयोग कैसे करते हैं ?

हस्ताक्षर
प्रधान पाठक/प्रभारी

हस्ताक्षर
छात्राध्यापक

प्रपत्र–2 (दस दिवसीय)

कक्षा अवलोकन (10 दिवसीय)

1. दिनांक .... कक्षा .... शिक्षक ....
2. विषय / पाठ ....

छात्र अध्यापक निम्न बिन्दुओं के आधार पर कक्षा प्रारंभ से अंत तक का अवलोकन विवरण देंगेः–

1. शिक्षक ने कक्षा की शुरूआत कैसे की ?
2. क्या पढ़ाया?
3. कैसे पढ़ाया?
4. बच्चों की भागीदारी
5. बच्चे कब रुचि ले रहे थे, कब दूसरे काम करने लगे, अथवा कब शरारत करने लगे ?
6. शिक्षक ने बच्चों से क्या क्या पूछा / बातचीत की
7. बच्चों द्वारा दिए गए जवाब एवं पूछे गए प्रश्न
8. शिक्षक और बच्चे आपस में तथा बच्चे एक–दूसरे से किस भाषा में बात कर रहे थे?
9. श्यामपट का इस्तेमाल किस प्रकार हो रहा था?
10. कक्षा का समापन कैसे हुआ?

विशेष टीप :–

1. क्या–क्या बातें बच्चों को समझ नहीं आई ?
2. क्या कठिनाइयाँ आई (सिखाने में एवं सीखने में) ?
3. शिक्षक ने बच्चों की समझ को कैसे जाँचा ?
4. आपने अवलोकन द्वारा क्या सीखा ?

हस्ताक्षर
प्रधान पाठक / प्रभारी

हस्ताक्षर
छात्राध्यापक

प्रपत्र 3 (दस दिवसीय)

दैनिक अवलोकन रिपोर्ट

सुबह से शाम तक शालेय कार्यक्रम की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट छात्राध्यापक प्रतिदिन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर तैयार करेंगे–

- शाला का प्रारम्भ किस प्रकार हुआ ?
- प्रार्थना सभा
- शाला का खुलना एवं बच्चों का प्रवेश
- बच्चों ने कितना समय पढ़ने में, खेलने में तथा कितना समय अन्य गतिविधियों में लगाया ?
- मध्याह्न भोजन के समय शाला में शिक्षकों एवं बच्चों की क्या–क्या भूमिका रही ?
- सीखने–सिखाने में शिक्षकों एवं बच्चों की भागीदारी ?
- क्या बच्चे शिक्षक द्वारा बताए निर्देश समझ पा रहे थे ? उन्हें क्या कठिनाई हो रही थी ?

हस्ताक्षर
प्रधान पाठक/प्रभारी

हस्ताक्षर
छात्राध्यापक

प्रपत्र–4 (दस दिवसीय)

बच्चों से बातचीत

शाला लगने से पूर्व, अवकाश में एवं खेल के मैदान में बच्चों से विभिन्न बिंदुओं पर बातचीत की जा सकती है। जैसे–

1. बच्चों को शाला कैसी लगती है ?
2. क्या शाला में आना अच्छा लगता है? यदि हाँ/नहीं तो क्यों ?
3. उनके मनपसंद शिक्षक कौन हैं? और क्यों ?
4. उनकी कौन सी बातें अच्छी लगती हैं ?
5. गणवेश में आना पसंद है ?
6. उनकी मनपसंद पुस्तक कौन सी है? क्यों है ?
7. उनके मित्रों के विषय में पूछ सकते हैं।
8. उनके मनपसंद खेल के बारे में पूछ सकते हैं।
9. शाला से उनका घर कितनी दूर है? वे शाला कैसे आते हैं ?
10. भविष्य में वे क्या–क्या करना चाहते हैं ?

....

प्रपत्र–5 (दस दिवसीय)

प्रधान अध्यापक के क्रिया–कलापों का अवलोकन प्रपत्र

1. प्रधान अध्यापक का नाम :– ....
2. शैक्षणिक योग्यता :–..
3. प्रधान अध्यापक किस कक्षा में अध्यापन करते हैं?
4. प्रधान अध्यापक के द्वारा किए जाने वाले कार्यों का अवलोकन–
   - अ. संचालन विधिः– समय सारणी, शाला कैलेण्डर, बैठक आदि
   - ब. अभिलेखों की तैयारी एवं संधारण
   - स. विद्यालय की साज–सज्जा तथा सामग्रियों का रखरखाव
5. शिक्षकों के साथ संबंध
6. समाज के साथ व्यवहार
7. समाज या गाँव/मोहल्ला का प्रधान अध्यापक के साथ संबंध
8. बालकों के साथ व्यवहार
9. प्रधान अध्यापक की शाला विकास के लिए सोच या योजनाएँ।
10. प्रधान अध्यापक द्वारा दिया गया मार्गदर्शन।

हस्ताक्षर

छात्राध्यापक

प्रपत्र–6 (दस दिवसीय)

गाँव / मोहल्ला की सामान्य जानकारी

1. गाँव / मोहल्ला का नाम :– ....
2. विकासखण्ड का नाम :–..
3. जिले का नाम :– ....
4. गाँव / मोहल्ला की जनसंख्या :–..
5. गाँव / मोहल्ला में साक्षरता की स्थिति :–..
6. गाँव / मोहल्ला की सड़कों की स्थिति (आवागमन)
7. आवागमन का साधन
8. पेय जल की सुविधा
9. गाँव / मोहल्ला में रोजगार की स्थिति (कृषि / व्यवसाय इत्यादि)
10. अन्य आर्थिक संसाधन
11. गाँव / मोहल्ला में शाला की स्थिति, (प्राथ.,माध्य.हाईस्कूल, हायर सेकेण्डरी, आंगनबाड़ी)
12. गाँव / मोहल्ला में संचालित स्व–सहायता समूह एवं उनके कार्य
13. गाँव / मोहल्ला में ग्राम पंचायत की स्थिति (आश्रित)
14. सरपंच / नगर पंचायत अध्यक्ष का नाम
15. गाँव में चिकित्सा की सुविधा
16. गाँव / मोहल्ला में बाजार की स्थिति
17. गाँव / मोहल्ला में बिजली, दूर संचार की व्यवस्था
18. गाँव में धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों की स्थिति
19. ग्रामीण शौचालय की सुविधा
20. उचित मूल्य की दुकान
21. बाजार गाँव से दूर है या करीब
22. गाँव / मोहल्ला वालों की मद्यपान, गुड़ाखू, बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि सेवन की आदतें

हस्ताक्षर

छात्राध्यापक

....

प्रपत्र–7 (दस दिवसीय)

शाला एवं समुदाय का संबंध

1. शाला का नाम :–
2. विकासखण्ड का नाम :–
3. जिला :–
4. शिक्षक–पालक संघ के गठन का विवरण :–
5. शिक्षक पालक संघ की बैठकों का विवरण
6. शिक्षक पालक संघ की उल्लेखनीय गतिविधियाँ
7. शाला विकास हेतु समुदाय की सहभागिता/सहयोग संबंधी जानकारी
8. भवन विकास हेतु
9. खेलकूद सामग्री प्रदाय हेतु
10. शाला पुस्तकालय विकास हेतु
11. फर्नीचर हेतु
12. शाला में छात्रों के प्रवेश, उपस्थिति, एवं नियमित अध्यापन सुनिश्चित करने हेतु समाज/पालकों से प्राप्त सहयोग का विवरण
13. सांस्कृतिक/खेलकूद कार्यक्रमों के आयोजन में समाज की सहभागिता का विवरण।
14. साक्षरता/पर्यावरण अवचेतना संबंधी कार्यक्रमों का विवरण एवं उनमें समाज की सहभागिता की जानकारी
15. शैक्षिक गुणवत्ता/अनुशासन स्थापित करने हेतु समाज के व्यक्तियों के समय–समय पर शाला में आने का विवरण एवं उनके सुझाव की जानकारी।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर शाला एवं समुदाय के सम्बंधों पर अपने विचार लिखें।

....

प्रपत्र–8 (दस दिवसीय)

शालेय अभिलेख अवलोकन प्रपत्र

निम्नांकित पंजियों का अवलोकन पश्चात पंजियों में उल्लेखित जानकारियों पर टीप लिखें–

i. छात्र उपस्थिति पंजी का अवलोकन।
ii. शिक्षक उपस्थिति पंजी का अवलोकन।
iii. दाखिल खारिज पंजी का अवलोकन।
iv. स्वास्थ्य परीक्षण पंजी का अवलोकन।
v. मध्यान्ह भोजन पंजी का अवलोकन।
vi. स्थानान्तरण प्रमाण पत्र पंजी का अवलोकन।
vii. शिक्षक अनुदान ;ज्स्ड ळतंदजद्ध अभिलेख पंजी का अवलोकन।
viii. शाला अनुदान पंजी का अवलोकन।

ix. भवन मरम्मत पंजी का अवलोकन।
x. जनभागीदारी समिति पंजी का अवलोकन।
xi. बाल पुस्तकालय पंजी का अवलोकन।
xii. स्काउट गाइड पंजी का अवलोकन।
xiii. खेलकूद पंजी का अवलोकन।
xiv. परीक्षा फल पंजी का अवलोकन।
xv. बुक बैंक पंजी का अवलोकन।
xvi. गणवेश वितरण पंजी अवलोकन।
xvii. निरीक्षण पंजी का अवलोकन।
xviii. स्टाफ पंजी का अवलोकन।

....

प्रपत्र – 9 स्थानीय खेलों का उपयोग (पचास दिवसीय)

1. गाँवों के स्थानीय खेलों की सूची :

    i. :

    ii. :

2. बच्चों का आयु समूह तथा शाला में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर खेलों का चयन

    i. :

    ii. :

    iii. :

3. खेल सम्बंधित कार्य–योजना, समय सारणी में स्थान (आठ कार्य दिवस)

    i. :

    ii. :

    iii. :

4. खेलों के दौरान बच्चों की प्रतिक्रिया

5. खेल खिलाने की गतिविधि, बच्चों के साथ घुलने–मिलने में कितनी सहायक सिद्ध हुई?
6. क्या आप स्वयं भी बच्चों के साथ मिलकर खेले थे ?
7. खेल खिलवाने से बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में क्या फर्क दिखा ?

नोट :– खेल चयन करने के लिए अच्छा हो कि छात्राध्यापक कक्षा के बच्चों से ही पूछे कि वे क्या खेलना चाहते हैं ? वह खेल कैसे खेला जाता है?

....

प्रपत्र – 10 (पचास दिवसीय)

स्वमूल्यांकन प्रारूप (एक शिक्षक के रूप में)

छात्राध्यापक का नामः–...

विद्यालय का नाम :–..

कक्षा ....   विषय ....प्रकरण...........................

दिनांक ....

उपस्थिति   छात्र...छात्रायें..................

आकलन के बिन्दु–

1. क्या सिखाना चाहते थे? कौन सी अवधारणाएँ स्पष्ट करने की योजना थी (संक्षेप में लिखें)?
2. क्या तरीका सोचा था (संक्षेप में लिखें)?
3. कौन सी सामग्री व गतिविधियां आपकी योजना का हिस्सा थे (विवरण दें)।
4. विषय वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, जो छात्रों को कक्षा में करवाई गईं (विवरण दें)।
5. क्या सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा आपने सोचा था, यदि नहीं हुआ तो क्यों?
6. क्या बच्चों के सीखने की प्रगति से आप संतुष्ट हैं?
7. आप अपने अध्यापन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (।एठएब्एक एवं म क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब हैं)

हस्ताक्षर छात्राध्यापक

प्रपत्र – 11 (पचास दिवसीय)

कक्षा अवलोकन का प्रारूप (सहयोगी के रूप में)

छात्राध्यापक (अध्यापनकर्ता) का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा..........................विषय ....प्रकरण..............................दिनांक............

1. कक्षा की शुरुआत कैसे की?
2. कैसे? किन गतिविधियों, क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ाया गया?
3. क्या गतिविधियाँ उपयुक्त थीं या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता थी?
4. सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी कैसी थी?

5. शिक्षक के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया कैसी थी?
6. सिखाने की प्रक्रिया में प्रयुक्त भाषा कैसी थी?
7. छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा का माहौल कैसा था? (कितने बच्चे सीखने में शामिल थे?)
8. बच्चे कब रुचि ले रहे थे? कब दूसरे काम करने लगे? अथवा कब शरारत करने लगे?
9. शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट का उपयोग (हुआ हो तो किस तरह से?)
10. शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री क्या थी? कैसे उपयोग किया?
11. आपके विचार से बच्चों ने कितना सीखा?
12. और क्या किया जा सकता था।
13. ऐसी स्थिति कितनी बार निर्मित हुई जब बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे? या नहीं समझ पा रहे थे ?
14. कोई विशेष तथ्य या घटना जो आप बताना चाहते हैं।

हस्ताक्षर छात्राध्यापक

प्रपत्र – 12 (पचास दिवसीय)

शिक्षक / प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

छात्राध्यापक का नाम ....विद्यालय का नाम.....................................

कक्षा............ अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या छात्राध्यापक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?
2. क्या छात्राध्यापक कक्षा में शिक्षण योजना के अनुरूप तैयारी के साथ प्रवेश करता था?
3. क्या अध्यापन कार्य शिक्षण योजना के अनुरूप था? यदि नहीं तो वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?
4. कक्षा स्तर के अनुरुप अध्यापन कार्य था या नहीं?
5. शिक्षक ने छात्राध्यापक को कौन–कौन से सुझाव दिए?
6. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?
7. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?
8. क्या छात्राध्यापक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त थी?
9. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरुप थी या नहीं?
10. क्या समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?
11. 50 शिक्षण दिवसों में छात्राध्यापक की उपस्थिति..................... अनुपस्थिति............
12. समग्र अभिमत

हस्ताक्षर अध्यापक / प्रधानपाठक

प्रपत्र – 13 (पचास दिवसीय)

प्रधानाध्यापक के साथ साप्ताहिक समीक्षा बैठक की रिपोर्ट

1. छात्राध्यापक का नामः– ....
2. अध्यापित कक्षा :–..
3. कक्षा के बच्चों के साथ छात्राध्यापक के समायोजन की क्षमताः–.....................
4. छात्राध्यापक का कक्षा अध्यापन का तरीका, प्रयुक्त गतिविधियाँ दक्षता विकास में कितने सहायक रहे ?
5. छात्राध्यापक के शिक्षण से छात्र की रुचि एवं सीखने की क्षमता में क्या परिवर्तन आया?
6. क्या बच्चे छात्राध्यापक द्वारा दिए निर्देशों के अनुसार सक्रिय रहते थे?
7. छात्राध्यापक का अन्य शिक्षकों, बच्चों, पालकों (बच्चों के माता–पिता), गाँव वालों के साथ व्यवहार
8. छात्राध्यापक द्वारा शाला की अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में सहभागिता कैसी रही?
9. छात्राध्यापक के लिए प्रधानाध्यापक का अभिमत / धारणा

दिनांक

हस्ताक्षर प्रधानाध्यापक / शिक्षक

प्रपत्र – 14 (पचास दिवसीय)

दैनिक शिक्षण योजना का स्वरूप

शाला का नामः– .... प्रशिक्षार्थी का नाम ....

कक्षा :– .... विषय ....

शिक्षण के पूर्व					शिक्षण के समय		शिक्षण के पश्चात	
शिक्षण योजना क्रं.	दिनांक	क्या सिखाएँगे (कौशल जो विकसित किए) जायेंगे / उद्देश्य)	कैसे सिखाएँगे (गतिविधि / शिक्षण विधि)	सहायक सामग्री जो उपयोग करेंगे	बच्चे ने क्या सीखा	कितने बच्चों ने सीखा	कठिनाई	अगले दिन पाठयोजना में क्या परिवर्तन होगा।

हस्ताक्षर छात्राध्यापक

खेल की रिपोर्ट को छात्राध्यापक भरेंगे। इसके द्वारा छात्राध्यापक द्वारा कक्षा में स्थानीय खेल खिलवाये जाएँगे जिसके द्वारा छात्रों को अनौपचारिक माहौल मिल सकेगा तथा छात्राध्यापक एवं बच्चों को परस्पर एक–दूसरे को समझने में मदद मिलेगी।

खेल रिपोर्ट

दिनांक ....समय...

भागीदारी (बच्चों की संख्या)..

भागीदारी शिक्षकों की ....

खेल का नाम ....

खेल का चुनाव कैसे किया? (चुनाव के आधार).................................

किसने चुनाव में भागीदारी की? ....

खेल के अनुभव

खेल कैसे खेले?

खेल कितनी देर खेले?

खेल खेलने वालों का उत्साह

खेलने में आनंद

क्या खेल में कोई समस्या आई ? (आपसी विवाद/असहमति आदि)

असहमतियों को कैसे सुलझाया गया?

खेल की विशेषता क्या थी?

क्या आप को आनंद आया?

सामान्य निर्देश

A. छात्राध्यापकों के लिए

- ❖ शिक्षकों एवं प्रधान पाठकों से भेंट एवं परिचय।
- ❖ विद्यालय की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- ❖ समयसारिणी, बैठक व्यवस्था, मध्यान्ह भोजन, खेलकूद, विषयगत शिक्षण की जानकारी, पाठ्येत्तर क्रियाकलाप, रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ कार्यालयीन कार्य, संचालन की प्रक्रिया देखकर रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ बच्चों के विषय स्तर के बारे में अनुमान लगाना एवं रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ समग्र शिक्षण योजना बनाने के लिये 50 दिनों की कक्षावार विषयवस्तु नोट करके लाना।
- ❖ अवलोकित समग्र चीजों के बारे में निर्धारित प्रपत्र में रिपोर्ट बनाकर डाइट में प्रस्तुत करना।

B. **शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के लिए निर्देश :–**

- ❖ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान पर्यवेक्षक बार–बार छात्राध्यापकों को यह स्मरण कराता रहे कि वह अपना तथा अपने साथी की अवलोकन रिपोर्ट वास्तविकता पर आधारित ही बनाए। किसी भी गुण या दोष का उल्लेख करने में संकोच न करे।
- ❖ शिक्षक प्रशिक्षक (पर्यवेक्षक) एवं छात्राध्यापक के साथ की बैठक की जानकारी भी प्रपत्र में भरें।
- ❖ 50 दिन के बीच किसी भी पूर्व निर्धारित शनिवार को सभी छात्राध्यापकों को डाइट में बुलाएँ एवं उनके अनुभवों एवं परेशानियों को सुन कर सही रास्ता खोजें।

- कक्षा 1 से 5वीं तक की पुस्तकों के कम से कम 30 सेट छात्राध्यापकों के लिए उपलब्ध कराए जाएँ तथा छात्रों का समूह बनाकर उन्हें पाठ्यपुस्तकें पढ़ने का निर्देश दिया जाए।
- छात्राध्यापक एवं प्रधान पाठक/शिक्षक के बीच समीक्षा बैठकों की रिपोर्ट का अवलोकन डाइट के व्याख्याता द्वारा किया जाएगा।

C. **दो दिवसीय बैठक की तैयारी के लिये डाइट को निर्देश**

15 जुलाई तक प्रत्येक डाइट चयनित शालाओं के प्रधानपाठक एवं उसके एक सहयोगी शिक्षक की दो दिवसीय बैठक आयोजित करेगी। इसमें शालेय शिक्षण योजना संबंधी निम्न बिन्दु होंगे:–

- ❖ शालेय शिक्षण योजना से परिचय कराना एवं उद्देश्य बताना।
- ❖ प्रधानपाठकों की भूमिका एवं क्रियान्वयन स्पष्ट करना।
- ❖ कक्षाध्यापक की भूमिका एवं क्रियान्वयन।
- ❖ छात्राध्यापक को बालक को समझने में मदद संबंधी निर्देश।
- ❖ पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप संबंधी अभिलेख।
- ❖ सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग एवं रखरखाव।
- ❖ हिन्दी एवं भाषा शिक्षण अवलोकन के संबंध में निर्देश।
- ❖ गणित एवं गणित शिक्षण अवलोकन के संबंध में निर्देश।
- ❖ शिक्षण अनुभव में छात्राध्यापक एवं डाइट के बीच समन्वय की भूमिका को स्पष्ट करना।
- ❖ छात्राध्यापक के समग्र कार्यो का मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन निर्धारित प्रपत्र में अंकों/ग्रेडेशन सहित भर कर भेजना।
- ❖ छात्राध्यापक द्वारा पालकों/समुदाय से जुड़ाव संबंधी अभिमत

30 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान **की गतिविधियों हेतु निर्देश :–**

- ❖ संदर्भग्रंथों का चयन कर पुस्तकालय से प्राप्त करना तथा उनके संदर्भित अंशों को छात्रों को पढ़ने हेतु उपलब्ध कराना।

- ❖ उनके द्वारा पढ़े गए प्रमुख अंशों पर समीक्षात्मक चर्चा कक्षा में करना।
- ❖ समग्र शिक्षण योजना तैयार करने में छात्राध्यापकों की मदद करना।
- ❖ डाइट संकाय सदस्य द्वारा शिक्षण योजना अभ्यास शाला में प्रदर्शित कर छात्राध्यापकों को व्यावहारिक जानकारी देना एवं सुझावात्मक समीक्षा करना।
- ❖ सहायक शिक्षण सामग्री का संग्रह/चुनाव/निर्माण के बारे में पर्याप्त रूप से समझाना।
- ❖ सीखने की प्रक्रिया के बारे में समझ बनाना, इस संबंध में अपने अनुभव बताना तथा उनके (छात्राध्यापक) शालेय अनुभवों को सुनना।
- ❖ बाल मनोविज्ञान की सामान्य जानकारी देना।
- ❖ छात्राध्यापक द्वारा तैयार शिक्षण योजना अभ्यास के लिए जो गणित एवं भाषा विषय के लिए बनाए गए हैं उनके कौशलों की पहचान करना एवं अभ्यास के तौर पर कक्षा में उनका अध्यापन प्रदर्शन कराना।

50 दिनों के शिक्षण अनुभव कार्यक्रम हेतु डाइट *के लिए* निर्देश :–

- ❖ आबंटित शाला का 50 दिन के शिक्षण अवलोकन में से प्रथम सप्ताह में कम से कम एक बार अवलोकन पूरा करके प्रभारी के पास रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- ❖ प्रत्येक डाइट सदस्यों द्वारा छात्राध्यापक के कक्षा शिक्षण का कम से कम 3 बार या संभव हो तो इससे अधिक बार अवलोकन अवश्य किया जाए अवलोकन के दौरान पूरे दिवस उसके अध्यापन कार्य को देखकर मार्गदर्शन दिया जाए तथा साप्ताहिक रिपोर्ट डाइट प्राचार्य को प्रस्तुत की जाएँ
- ❖ समग्र शिक्षण योजना पर कार्य समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर सभी छात्राध्यापकों से समग्र रिपोर्ट डाइट में जमा कराई जाएगी।

<u>शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान प्राचार्य के लिए निर्देश :–</u>

- ❖ प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि शालेय शिक्षण योजना कार्यक्रम निर्धारित समयानुसार सुचारू रूप से संचालित हो रहे हों।
- ❖ बैठक/प्रपत्र आदि के लिए बजट व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।
- ❖ PSTE Cell के लिए 1+6 सदस्य (1 प्रभारी+6 विषय व्याख्याता) सुनिश्चित कर लिये जाएँ।
- ❖ प्रत्येक चरण (10 दिवसीय शाला अवलोकन तथा 50 दिवसीय शिक्षण अनुभव) के दौरान प्राचार्य द्वारा कम से कम 5 विभिन्न शालाओं का अवलोकन अवश्य किया जाए तथा अपना प्रतिवेदन चैज्म के साथ तैयार कर उचित माध्यम से ैब्त्ज शिक्षक शिक्षा प्रभाग को भी प्रेषित किया जाएँ ।
- ❖ शिक्षक प्रशिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। तथा शिक्षण योजना/पाठ्येतर क्रियाकलापों एवं अन्य गतिविधियों में भी डाइट के समस्त व्याख्याताओं की भागीदारी सुनिश्चित कराएँ।
- ❖ विद्यालय के प्रधान अध्यापक/शिक्षक/डाइट संकाय सदस्य/ छात्राध्यापकों के मध्य समन्वय बनाए रखें।

प्रधान पाठकों के लिए निर्देश:–

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दो दिवसीय उन्मुखीकरण में आवश्यक रूप से उपस्थित रहे तथा प्राप्त निर्देशों को नोट करें।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रपत्रों का गंभीरता से अध्ययन करें व अपनी शंकाओं पर चर्चा कर आश्वस्त हो जाएँ।
- छात्राध्यापकों को अध्यापन के लिए कक्षा, कालखण्ड आदि सुनिश्चित कराएँ।
- छात्राध्यापकों के समस्त कार्यों की नियमित देखरेख करें तथा उनके नोट तैयार करते रहें।
- प्रधानपाठक, छात्राध्यापकों के सहयोगी मार्गदर्शक की भूमिका अदा करें तथा डाइट के साथ समन्वय करें।
- छात्राध्यापकों के अध्यापन की समीक्षा के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार समीक्षा बैठक (प्रपत्र क्र. 13) का आयोजन करें।
- छात्रों की प्रगति से संबंधित मूल्यांकन प्रपत्र को भरकर डाइट के पास गोपनीय प्रतिवेदन के रूप में जमा करें।

o शाला के प्रधान पाठक अथवा कक्षा शिक्षक, छात्राध्यापकों का औपचारिक परिचय बच्चों तथा समुदाय से कराएँ। ताकि छात्राध्यापक बच्चों की वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति से अवगत हो सकें। यह सुविधानुसार किया जाए।

o शाला की समस्त समितियों से छात्राध्यापकों को परिचित कराएँ।

परिशिष्ट क्र. 1

समय सारणी

प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों से चर्चा (दो दिवसीय उन्मुखीकरण)

	10:30–11:30	11:30–12:30	12:30–1:30		2:30–4:00	4:00–5:00
प्रथम दिवस	पंजीकरण एवं सामग्री वितरण, परिचय	शाला अनुभव कार्यक्रम से परिच	कार्यशाला / कार्यक्रम का उद्देश्य	भोजन अवकाश 1–30 से 2–30	शाला अनुभव कार्यक्रम में शिक्षकों एवं प्रधान पाठकों की भूमिका (10 दिवसीय एवं 50 दिवसीय) एवं क्रियान्वयन	शाला प्रबंधन एवं संचालन (10 दिवसीय एवं 50 दिवसीय)

द्वि ती य दि व स	छात्राध्यापकों द्वारा **10 दिवसों के शाला अवलोकन कार्यक्रम की कार्य योजना पर निम्नानुसार चर्चा –** (प) शाला व्यवस्था का अवलोकन (पप) बच्चों से बातचीत (पपप) प्रशिक्षार्थियों द्वारा कक्षा में शिक्षकीय कार्यों का अवलोकन (पअ) पालकों से बातचीत (अ) कुछ गाँव वालों से चर्चा छात्राध्या– पकों द्वारा किए जाने वाले 50 दिवसों की शाला शिक्षण अनुभव की कार्य योजना पर चर्चा	**10 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम के समय भरे जाने वाले प्रपत्रों पर चर्चा –** (प) शाला अवलोकन प्रपत्र (पप) कक्षा अवलोकन प्रपत्र (पपप) व्यक्तिगत डायरी (पअ) बच्चों से बातचीत (अ) प्रधानाध्यापक के लिये प्रपत्र (अप) गाँव की सामान्य जानकारी प्रपत्र (अपप) समुदाय के साथ संबंध प्रपत्र (अपपप) शालेय अभिलेख अवलोकन (पग) अन्य प्रपत्र **(सभी प्रपत्र आवश्यक निर्देशों के साथ परिशिष्ट में संलग्न है)**	**50 दिवसीय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम के समय भरे जाने वाले प्रपत्रों पर चर्चा –** (प) कक्षा अवलोकन शिक्षक सहयोगी (पप) टीचर / H.M. प्रपत्र (पपप) डाइट प्रभाग सदस्य के लिये प्रपत्र (पअ) खेल का प्रपत्र (अ) समीक्षा बैठकों का प्रारूप (डाइट) (अप) H.M. / टीचर द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र (अपप) मूल्यांकन हेतु प्रपत्र –(तीन) **(सभी प्रपत्र आवश्यक निर्देशों के साथ परिशिष्ट में संलग्न हैं)**		छात्राध्यापकों द्वारा किए जाने वाले हिन्दी विषय का शिक्षण एवं अवलोकन	छात्राध्यापकों द्वारा किए जाने वाले गणित विषय का शिक्षण एवं अवलोकन मूल्यांकन पर चर्चा –

परिशिष्ट क्रमांक–2

शाला अनुभव कार्यक्रम (प्रथम चरण) की तैयारी हेतु कार्यशाला

स्थान – डाइट अवधि – 10 दिन

समय ⟶ दिन ↓	10:30–12:00	12:00–1:30	1:30 – 2:00	2:00–3:30	3:30–5:30	
पहला	स्कूली जीवन का वह अनुभव जो उन्हें अभी तक याद है उसे सुनाना।	शिक्षक क्यों बनना चाहते है? चर्चा	भोजन अवकाश	1. क्या छात्राध्यापक के लिए स्कूल अनुभव होना क्यों आवश्यक है? इससे आपको क्या मदद मिलेगी? स्कूल अनुभव क्यों? कैसे?	स्कूल में पाठ्यपुस्तक के अलावा कौन–कौन सी पुस्तक पढ़ते थे। छात्रों के विचार सुनकर स्वाध्याय माने क्या स्वाध्याय क्यों? के बारे में चर्चा करना।	बच्चे, खेल और सीखना ध्ययन सामग्री वितरण
दूसरा	1. प्रस्तुतीकरण व चर्चा– बच्चे खेल व सीखना	कक्षा प्रबंधन का ज्ञान		शाला अवलोकन/कक्षा अवलोकन प्रपत्र 1–2 पर बातचीत		"बच्चे कैसे सीखते हैं ? अध्ययन सामग्री वितरण
तीसरा	1.प्रस्तुतीकरण व चर्चा – बच्चे कैसे सीखते हैं?	बच्चे बहुत कुछ जानते हैं पर चर्चा		प्रपत्र 3–4 पर बातचीत बच्चों से बातचीत		स्कूल और समाज अध्ययन सामग्री वितरण
चौथा	– प्रस्तुतीकरण चर्चा– क्या समुदाय के साथ संबंध बनाना जरूरी है।	समुदाय के साथ संबंध पर चर्चा		प्रपत्र 6–7 पर बातचीत समुदाय के साथ बातचीत एवं गाँव की जानकारी		भाषा सीखना माने क्या? अध्ययन सामग्री वितरण
पाँचवाँ	प्रस्तुतीकरण व चर्चा – भाषा सीखने की क्षमता	बच्चों की भाषा और अध्यापक के चुने हुए अंश पर चर्चा		भाषा की पुस्तक में प्राक्कथन को पढ़ना उस पर बातचीत करना		क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है? तथा प्रारम्भिक गणित सीखने सिखाने का एक परिप्रेक्ष्य अध्ययन सामग्री वितरण
छठवाँ	प्रस्तुतीकरण व चर्चा 1. गणित क्यों सीखे?	गणित की पुस्तकों से गतिविधियाँ चुनना, करना।		गणित की पुस्तक के प्राक्कथन को पढ़ना उस पर बातचीत करना		बच्चे क्यों नहीं पढ़ सकते तथा सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ अध्ययन सामग्री वितरण

सातवाँ	प्रस्तुतीकरण चर्चा– अपने सीखने वालों (विद्यार्थियों) पर चर्चा	बच्चों की रुचि व क्षमता पर चर्चा		प्रपत्र 5–8 पर बातचीत व्यक्तिगत सारणी	बच्चे असफल कैसे होते हैं।अध्ययन सामग्री वितरण
आठवाँ	प्रस्तुतीकरण चर्चा–	असफल होने के कारणों पर चर्चा		प्रपत्र 9,10,11 शालेय अभिलेख पर बातचीत	ज्ञान की संरचना तथा गतिविधि पर कुछ बाते
नौवा	दस दिनों तक शाला में क्या करेंगे कार्ययोजना तैयार करना।	गतिविधियों पर कुछ बातें		समूह में चर्चा करना–योजना बनाना	
दसवाँ	कुछ समूहों के द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं शंकाओं का निवारण			डाइट संकाय की अपने समूह के छात्राध्यापकों के साथ चर्चा	

परिशिष्ट क्रमांक–3

अध्ययन सामग्री

अध्ययन सामग्री क्या हो सकती है? इस पर गंभीरता से विचार करें और संदर्भ ग्रंथों का चयन करें। कुछ पुस्तकों (अध्ययन सामग्री) की सूची प्रस्तुत की जा रही है परंतु यह पर्याप्त नहीं है। इसमें अपनी चर्चा के आधार पर अन्य पुस्तकें जोड़ें।

1 ''बच्चे, खेल और सीखना''
2. ''बच्चे कैसे सीखते हैं?''
3. ''स्कूल और समाज''
4. ''भाषा सीखना माने क्या?''
5. ''क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है? तथा प्रारम्भिक गणित सीखने सिखाने का एक परिप्रेक्ष्य''
6. ''बच्चे क्यों नही पढ़ सकते तथा सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ''
7. ''पाठ्यपुस्तकों पर बातें (भाषा व गणित)''
8 ''बच्चे असफल कैसे होते हैं।''
9 ''ज्ञान की संरचना तथा गतिविधि पर कुछ बातें''

संदर्भ पुस्तकें :– गीजू भाई की पुस्तकें, जॉन हॉल्ट की पुस्तकें, चकमक, परख, संदर्भ, शिक्षक दिग्दर्शिका, बाल उपयोगी साहित्यः–

1. तोतोचान
2. शिक्षक (ग्रंथशिल्पी)
3. जॉन हॉल्ट की पुस्तकें
4. समरहील
5. बचपन से पलायन
6. ब्लैक बोर्ड
7. बच्चे की भाषा व अध्यापक – कृष्ण कुमार
8. दिवास्वप्न

टीप :– छात्राध्यापक अन्य संदर्भ ग्रंथों की सूची बनाएँ।

शाला अनुभव कार्यक्रम
मार्गदर्शिका

(द्वितीय वर्ष)

शाला अनुभव कार्यक्रम (द्वितीय वर्ष)

मार्गदर्शिका

1. शाला अनुभव कार्यक्रम से आशय

डी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों तथा शिक्षण कार्य को एक – दूसरे की पृष्ठभूमि में समझेंगे। ये छात्राध्यापक प्रथम वर्ष विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों में शालानुभव का साठ दिवसीय कार्यक्रम पूर्ण कर चुके हैं। द्वितीय वर्ष में अपेक्षा है कि छात्राध्यापक कक्षा में सीखते–सिखाते वक्त नए विचारों का प्रयोग करें तथा प्रथम वर्ष के सैद्धांतिक विषयों में उन्होंने जो सीखा है उसे विद्यालय में बच्चों के साथ व्यवहार में लाकर देखें। उदाहरण के लिए प्रत्येक विषय में अलग–अलग विषय वस्तु/ अवधारणाओं पर काम करने के कुछ संभावित तरीके व गतिविधियां सुझायी गयी हैं आप शाला अनुभव के दौरान अपने इन अनुभवों को लेकर भी काम करें।

2. शाला अनुभव कार्यक्रम के उद्देश्य

(i) छात्राध्यापक पढ़ाने का अनुभव करें व उस पर मनन करने की क्षमता हासिल करें।

(ii) बच्चों के व्यवहार, दृष्टिकोण व रुचियों, क्रिया–कलापों का अवलोकन कर उन्हें समझना।

(iii) बच्चे कई चीजें खुद करके देखते हैं व सीखते हैं बच्चों के स्वतः सीखने की इस प्रवृत्ति को समझना व उनके साथ काम करते वक्त इसे उपयोग में लाना।

(iv) सीखने में बच्चों द्वारा की गयी पहल को महत्व देना।

(v) कक्षा में पढ़ाने के अलावा शिक्षक की क्या–क्या भूमिका होती है उसको समझना जैसे सभा आयोजन में पाठ्य–सहगामी प्रवृत्तियों में समुदाय के साथ कार्य, कक्षा पुस्तकालय इत्यादि।

(vi) अंग्रेजी व पर्यावरण अध्ययन के अध्यापन का अनुभव करना।

(vii) एक छोटा अध्ययन प्रोजेक्ट के रूप में करना जो किसी भी विषय से सम्बन्धित हो।

(vii) शालेय शिक्षण को समुदाय व आसपास के पर्यावरण से जोड़ना।

3. शाला अनुभव कार्यक्रम की रूपरेखा

द्वितीय वर्ष शालानुभव कार्यक्रम 65 (20+30+15) दिनों में सम्पन्न किया जायेगा। कार्यक्रम तीनों चरणों में संचालित किया जायेगा। जिसकी रूपरेखा निम्नानुसार होगी–

सारणी –1

क्रमांक	कार्यक्रम/ गतिविधियाँ	दिवस
1.	अभ्यास हेतु शालाओं का चयन (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा)	02
2.	चयनित शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों का उन्मुखीकरण।	02
प्रथम चरण		
3.	छात्राध्यापकों के लिए शाला अनुभव कार्यक्रम की शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में पांच दिवसीय तैयारी।	05
4.	छात्राध्यापकों द्वारा चयनित शालाओं में बीस दिवसीय शालानुभव।	20
5	बीस दिवसीय शालाअनुभव उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में पांच दिवसीय प्रस्तुतीकरण।	05

द्वितीय चरण

6.	तीस दिवसीय कार्यक्रम हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में दस दिवसीय तैयारी ।	10
7.	छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में तीस –दिवसीय शालानुभव कार्यक्रम।	30
8.	तीस–दिवसीय शाला अनुभव कार्यक्रम के उपरान्त पांच दिवसीय प्रस्तुतिकरण (समस्या समाधान) कार्यक्रम	05

तृतीय चरण

9.	छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में पंद्रह दिवसीय शालाअनुभव कार्यक्रम की गतिविधियों को व्यवस्थित करना, रिपोर्ट लिखना इत्यादि। स्व–मूल्यांकन व रिपोर्ट मूल्यांकन (5 + 10)।	15

उपरोक्त सारणी में दिए गए विभिन्न बिन्दुओं का विवरण इस प्रकार है–

3.1अभ्यास हेतु शालाओं का चयन

(i) शालाओं के चयन की नियमावली प्रथम वर्ष के अनुसार ही रहेगी।

(ii) छात्राध्यापकों को शालाअनुभव कार्यक्रम हेतु उस शाला में न भेजा जाए जिसमें उन्होंने प्रथम वर्ष शालाअनुभव प्राप्त किया था।

(iii) शालाओं का चयन दर्ज संख्या को ध्यान में रखकर 50 तक की दर्ज संख्या में दो समूह, 50 से 100 तक में 3 समूह, तथा 100 से अधिक में 4 समूह भेजने के लिए सूची तैयार कर ली जावे। समूह से आशय ए**क छात्राध्यापक और एक साथी छात्राध्यापक इस प्रकार दो अवलोकनकर्ताओं का एक समूह**। ऐसे विद्यालयों को प्राथमिकता देवे जहाँ छात्राध्यापकों के अधिक समूह भेजे जा सकें।

3.2 चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों का उन्मुखीकरण (दो दिवसीय)

इस कार्यक्रम में चयनित शाला के प्रधानाध्यापक तथा एक शिक्षक प्रतिभागी होंगे। ये स्रोत दल (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य, पी.एस.टी.ई प्रभारी तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के संकाय सदस्य) से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

उन्मुखीकरण कार्यक्रम में स्रोत सदस्यों द्वारा निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत काम किया जाएगा

1. प्रतिभागियों द्वारा कुछ चयनित पठन सामग्री उदाहरण के लिए, गिजु भाई, जॉन होल्ट, तो़तोचान, इत्यादि के कुछ अंशों का वाचन व चर्चा करना ।
2. कुछ नवीन शैक्षणिक गतिविधियाँ जिसमें कि कविताएं, कहानियां, नाटक, पर्यावरण विज्ञान के प्रयोग इत्यादि करना।
3. छात्राध्यापकों द्वारा पिछले वर्ष बनाई गई शालाअनुभव कार्यक्रम की रिपोर्ट का अध्ययन व कुछ छात्राध्यापकों के अनुभव का प्रस्तुतीकरण। (प्रस्तुतीकरण छात्राध्यापकों द्वारा किया जाएगा अतः इस सत्र में समस्त छात्राध्यापक अनिवार्यतः उपस्थित रहेंगें। प्रस्तुतीकरण के दौरान विद्यालय का नाम न बताया जाय)

कार्यशाला के अन्त में एक सत्र शाला अनुभव कार्यक्रम के बारे में रखे जिसमें निम्नांकित सामान्य जानकारीयों के बारे में बात की जाए।

1. शालानुभव कार्यक्रम के उद्देश्य तथा कार्यक्रम का विवरण।
2. प्रधानाध्यापक द्वारा की जाने वाली आवश्यक तैयारी।
   (समय सारणी निर्माण, छात्राध्यापकों हेतु उपस्थिति पंजी, छात्राध्यापकों हेतु कक्षा व विषय निर्धारण तथा अन्य कार्य)

3. छात्राध्यापकों को प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों द्वारा दिये जाने वाले अपेक्षित सहयोग पर चर्चा–

(i) छात्राध्यापकों के लिए एक निश्चित कक्षा एवं उसमें उनके द्वारा चुने गए विषयों के पढ़ने–पढ़ाने को संभव बनाना।

(ii) समुदाय के साथ बातचीत करने व मिलने को संभव बनाना।

(iii) छात्राध्यापकों के अनुभवों पर चर्चा करना व उनकी बच्चों के साथ सक्रिय रूप से भागीदारी बनाने में मदद करना।

(iv) छात्राध्यापकों को स्पष्ट जिम्मेदारी देना व उन्हें स्कूल का हिस्सा समझना।

(v) शाला की समितियों की बैठकों में तैयारी के साथ भागीदारी करवाना।

(vi) उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य छात्राध्यापकों को शाला की वास्तविकता को समझकर कार्य करना है ताकि वे अपने अनुभव को पुख्ता कर सकें।

(vii) छात्राध्यापक को यदि कोई समस्या है तो समाधान हेतु प्रधानाध्यापक से चर्चा करें व स्वयं हल करने का विश्वास उसमें बढ़ाएं।

(viii) इस प्रक्रिया का लक्ष्य छात्राध्यापकों को यह अनुभव करने में में मदद करना है कि शालेय गतिविधियां किस प्रकार संचालित होती हैं एवं इस पूरी प्रक्रिया के दौरान एक अच्छे शिक्षक की क्या भूमिका है?

(ix) प्रत्येक छात्राध्यापक को यह समझने व योजना बनाने में मदद करना है कि शालेय गतिविधियां किस प्रकार संचालित होती हैं एवं इस पूरी प्रक्रिया के दौरान एक अच्छे शिक्षक की क्या भूमिका है?

(x) छात्राध्यापकों का मूल्यांकन, कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप करना।

नोटः– शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि उपरोक्त उन्मुखीकरण में PSTE प्रकोष्ठ के सभी सदस्य अनिवार्य रुप से सहभागिता करें।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की सुविधा हेतु दो दिवसीय उन्मुखीकरण की समय सारणी **परिशिष्ट क्रमांक–1** में दी गई है जिसे आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।

प्रथम चरण

3.3 छात्राध्यापकों के लिए शालानुभव कार्यक्रम की 5 दिवसीय तैयारी

छात्राध्यापकों को 65 दिवसीय शालानुभव कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी (सारणी –1) दी जाए।

इसके पश्चात् छात्राध्यापकों से निम्न बिन्दुओं के बारे में विस्तृत चर्चा की जाय।

1. बच्चों के प्रोफाइल कैसे बनाएं?

   (संलग्न प्रोफाइल पढ़ने को दें व छात्राध्यापकों से चर्चा करें कि उसमें बच्चों

   के बारे में जानने हेतु किन–किन पहलूओं पर ध्यान दिया गया है ?)

2 पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप यथा बाल सभा, बाल मेला, सुबह की सभा इत्यादि में क्या–क्या होना चाहिये ? बच्चों के सीखने–सिखाने में इनकी क्या भूमिका हैं?देखें और अपने कुछ सुझाव दें।

3. शिक्षण योजना पर।

4. शिक्षण अधिगम सामग्री पर।
5. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर।
6. प्रोजेक्ट क्या, क्यों, कैसे?
7. अप्रवेशी एवं अनियमित उपस्थिति वाले छात्रों को शाला वापस लाने के प्रयास पर।
8. समस्त प्रपत्रों पर (प्रपत्र 01 से ...... पर चर्चा)

2. छात्राध्यापकों को निम्न जानकारी दी जाए–

1. छात्राध्यापक निर्धारित समय से 10 मिनट पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा निर्धारित गणवेश में शाला में उपस्थित होंगे।
2. उपस्थिति पंजी में नियमित हस्ताक्षर करेंगे।
3. 20 दिवसीय शालानुभव कार्यक्रम में छात्राध्यापक दो–दो के समूह में एक साथ **पर्यावरण अध्ययन** विषय की किसी एक तथा अंग्रेजी विषय की किसी एक कक्षा के **5 कालखंडों का अवलोकन** करेंगे तथा अवलोकित अनुभव को व्यक्तिगत रूप से लिखेंगे। यह अनुभव मात्र विवरण नहीं हो, टिप्पणी न हो वरन् उनके अनुभव का विश्लेषण हो।
4. इसी 20 दिवसीय शालानुभव के दौरान आस–पास के किन्हीं 2–3 स्कूलों के छात्राध्यापक एक स्कूल में बाल मेला भी आयोजित करेंगे।
5. शाला अनुभव कार्यक्रम (कुल 65 दिन) के दौरान छात्राध्यापक **10 कालखंडों में पर्यावरण अध्ययन** एवं शेष दिवसों में अन्य विषयों (अंग्रेजी, गणित, हिन्दी) का अध्यापन करेंगे।

कुछ प्रथम वर्ष के समान बातें–

6. प्रथम वर्ष के समान इस वर्ष भी शाला में छात्राध्यापक दो–दो के समूह में अध्यापन कार्य करेंगे, प्रथम सदस्य द्वारा जब अध्यापन किया जायेगा तब द्वितीय सदस्य द्वारा अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार की जाएगी। द्वितीय सदस्य द्वारा अध्यापन कार्य करने पर प्रथम सदस्य द्वारा अवलोकन रिपोर्ट बनायी जायेगी। (बच्चों के द्वारा बोले जाने वाली पहली भाषा अथवा उनकी मातृ भाषा)
7. छात्राध्यापक बच्चों की भाषा (पहली मातृभाषा) सीखने का प्रयास करेंगे और प्रतिदिन कम से कम एक कालांश उसी में बातचीत होगी।
8. कक्षा में छात्रों को किसी प्रकार का दंड प्रतारणा नहीं देंगे।
9. शाला में किसी प्रकार की परेशानी हो तो प्रधानाध्यापक शिक्षक से संपर्क करेंगे।
10. छात्रों के संपूर्ण विकास के लिए पालक/समुदाय से संपर्क कर उसका विवरण अपने पास रखेंगे।
11. छात्राध्यापक व्यक्तिगत डायरी नियमित भरेंगे।

3. प्रथम वर्ष के समान ही शालानुभव हेतु जाने से पूर्व छात्राध्यापकों को शालानुभव कार्यक्रम के स्वरूप, उद्देश्य व उसकी भूमिका पर चर्चा एवं छात्राध्यापकों की शंकाओं का निवारण करें तथा उन्हें निम्नांकित जानकारी अनिवार्य रूप से दें–

1. उनके सहयोगी साथी कौन होंगे? (सहयोगी साथी– हर छात्राध्यापिका के साथ एक अन्य छात्राध्यापिका सहयोगी के रूप में होगी। यह दोनों एक–दूसरे की कार्य योजना बनाने में, कक्षा–कक्ष कार्य में सहयोगी होंगे व एक–दूसरे को फीडबैक देंगे। यह साथी हर चरण के लिए अलग–अलग होंगे।)

2. उनके शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक कौन होंगे?
3. उनके सहयोगी साथी, शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक के मोबाईल नम्बर उपलब्ध करायें।
4. उन्हें समस्या निवारण हेतु किससे संपर्क करें, यह बताएं।
5. अवलोकन प्रपत्रों से विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करने के विषय पर चर्चा करें।

3.4 चयनित शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा 20 दिवसीय शाला अनुभव

कार्यक्रम के इस चरण में यह अपेक्षा है कि छात्राध्यापक अध्यापन अनुभव लें, अवलोकन करें, वह स्कूल तथा कक्षा का चयन करें जिसमें उसे आगामी 45 दिनों के शालानुभव का कार्य करना है। उन्हें इस दौरान चुनी हुई कक्षा के प्रत्येक बच्चे का प्रोफाइल तैयार करना है तथा यह निर्धारित करना है कि अगले 45 दिनों के दौरान बच्चों को किन–किन विषयों और उसमें से किन अवधारणाओं पर कार्य करने का प्रयास करेंगे। उन्हें इस दौरान बच्चों को जानना व समझना है, साथ ही उनके सीखने की प्रक्रिया को समझने का प्रयास, प्रथम वर्ष के अनुभव एवं सीखे हुए चीजों का उपयोग भी करना है। बच्चों को किस तरह के कार्य अच्छे लगते हैं, समूह में कार्य कैसे करते हैं, क्या कठिनाइयां आती हैं, बच्चे कितना लिख सकते हैं, किन विषयों पर बोल सकते हैं, उन्हें कितना गणित आता है, आदि–आदि। इन सवालों के उत्तर ढूंढ़ने से उन्हें आगे की योजना बनाने में मदद मिलेगी। उन्हें इस दौरान–

1. पर्यावरण अध्ययन के **पांच कालखण्डों** का अवलोकन कर उसकी कक्षा की रचना को समझना तथा कुछ हिस्सों को स्वयं पढ़ाकर देखना।
2. शाला की सभी गतिविधियों में भागीदारी किन्तु कुछ में जिम्मेदारी। उदाहरण के तौर पर बाल सभा, बाल मेले का आयोजन करना, बाल पुस्तकालय, दीवार,अखबार इत्यादि।
3. शाला व समुदाय के सम्बन्ध को समझना।
4. प्रोजेक्ट हेतु विषय का चयन तथा प्रारूप का निर्माण।
5. एक कक्षा का प्रोफाइल निर्माण (4–5 दिन के अवलोकन व पंजियों के आधार पर।)
6. उसी कक्षा के 5 बच्चों के विस्तृत प्रोफाइल बनाना।

20 दिवसीय शाला अनुभव के बाद अगले 45 दिन शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में कार्य होगा जिसमें पहले 5 दिन 20 दिवसीय शाला अनुभव कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण तथा एक दूसरे के अनुभवों को समझने व उन पर चर्चा का कार्य होगा। उसके पश्चात् अगले 30 दिनों तक शिक्षण कार्य होगा और फिर शाला अनुभव व शिक्षण के आधार पर अगले 10 दिनों में 30 दिवसीय शाला अनुभव कार्यक्रम की तैयारी की जाएगी। 5 दिवसीय प्रस्तुतीकरण व फिर 10 दिवसीय तैयारी के दौरान छात्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले कार्यों का विवरण निम्न है–

3.5 शाला में 20 दिवसीय शिक्षण अनुभव के पश्चात् शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में 5 दिवसीय प्रस्तुतीकरण –

इन पांच दिवसों के दौरान छात्राध्यापक अपने–अपने स्कूल के अनुभवों को एक–दूसरे के साथ बांटेंगे, अपने अनुभवों का विश्लेषण करेंगे तथा आगामी शालानुभव के लिये तैयारी करना भी शुरू कर देंगे।

सभी छात्राध्यापकों को 25–25 के समूह में बांटकर उनके अनुभवों का प्रस्तुतीकरण कराएं। वे अन्य साथियों के साथ किए काम से सम्बन्धित सामग्री को देखेंगे, पढ़ेंगे व उसकी समालोचना करेंगे। इसके लिए के लिए तीन दिन का समय पर्याप्त होगा। प्रस्तुतीकरण में चर्चा के बिन्दु निम्न होंगे–

1. शाला अनुभव सुनाना ।
2. शैक्षिक वातावरण संबंधी।
3. समुदाय संबंधी ।
4. पर्यावरण अध्ययन विषय शिक्षण पर ।
5. कक्षा के अंदर की गतिविधियों पर।
6. छात्र प्रोफाइल का विश्लेषण एवं योजना निर्माण पर।
7. पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों पर (सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेलकूद तथा अन्य)।
8. प्रोजेक्ट पर।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के संकाय सदस्य छात्राध्यापकों के अनुभवों को जानें,उनके कार्यों का विश्लेषण करें तथा प्रस्तुतीकरण के समय छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करें।

द्वितीय चरण

3.6 शाला में 30 दिवसीय शिक्षण अनुभव के पश्चात् शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में 10 दिवसीय तैयारी

इस दौरान 5 दिवसीय प्रस्तुतीकरण में आए मुख्य बिन्दुओं को दोहराया जाएगा तथा पूर्व अनुभवों के आधार पर 30 दिवसीय शालानुभव की तैयारी की जाएगी। इस दौरान छात्राध्यापकों को पर्यावरण एवं अन्य विषयों के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों की जानकारी देकर अच्छे शिक्षक के रुप में तैयार करना है। एक–दूसरे के अनुभवों को समझने का प्रयास होगा। आगे की कार्य की योजना बनेगी।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में 10 कार्य दिवसों में मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य किये जाएँगे–

1. अपनी कक्षा के सभी बच्चों के प्रोफाइल को फिर से पढ़ना व उस पर समग्र समझ बनाना।
2. जिस स्कूल में काम करना है उस स्कूल में जाकर अध्यापकों व बच्चों से बात–चीत करना और यह पता लगाना कि वर्तमान में वे किस अवधारणा पर/विषय पर कक्षा में बच्चों के साथ काम कर रहे हैं।
3. उपरोक्त बातचीत को ध्यान में रखते हुए बच्चों को सिखाने के लिए अवधारणाएं व विषय चुनना।
4. जो भी विषय चुना गया है उससे संबंधित संदर्भ सामग्री पढ़ना। उदाहरण के लिए– यदि आप जोड़ की अवधारणा पर काम करना चाहते हैं तो आप छत्तीसगढ़ एससीईआरटी,

एनसीईआरटी तथा अन्य पाठ्य–पुस्तकों को पढ़ें और देखें कि उनमें जोड़ की अवधारणा पर किस तरह कार्य किया गया है? साथ ही आप प्रथम वर्ष में जोड़ के ऊपर दी गई सामग्री का भी अध्ययन करें।

5. चयनित अवधारणा को लेकर आप पूरे 30 दिन के दौरान कब क्या–क्या काम करेंगे उसकी पूरी योजना बनाना।

6. शिक्षण योजना का अर्थ, यह पाठ योजना से कैसे अलग है, योजनाबद्धता व लचीलेपन को साथ–साथ लेने का क्या अर्थ है, शिक्षण योजना बनाने के लिए विषय व सिखाए जाने वाले बिन्दुओं का चयन कैसे करें (उदाहरण– बच्चों के प्रोफाइल, स्कूल की स्थिति, मैदान आदि संभावनाएं, पाठ्य–पुस्तक व उसका विश्लेषण, स्कूल में शिक्षक संख्या, छात्र संख्या, अनुपस्थिति, बच्चे क्या जानते होंगे क्या नहीं आदि)

7. कक्षा 1 से 5 तक की पर्यावरण अध्ययन तथा अन्य विषयों के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों में उपयोगिता सिद्धान्तों की समझ–

अ. विषयवस्तु व कक्षा संचालन में आए अनुभवों पर चर्चा, कहॉ बच्चों की भागीदारी थी कहाँ नहीं, कठिनाइयाँ क्या थीं, उनका समााधान कैसे हुआ आदि।

ब. प्राथमिक स्तर में पर्यावरण तथा अन्य विषय पढ़ाने के उद्‌देश्य व पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ये उद्‌देश्य किस प्रकार पूरे होते हैं, तथा इन विषयों की महत्वपूर्ण अवधारणाएं। छात्राध्यापकों ने जो हिस्सा पढ़ाने के लिए लिया है उसके क्या उद्देश्य हैं।

8. विस्तृत शिक्षण योजना निर्माण एवं दैनिक शिक्षण योजना पर्यावरण अध्ययन।

9. बुलेटिन बोर्ड/हस्तलिखित पत्रिका के स्वरूप व निर्माण के ढंग पर चर्चा।

10. अपनी टीम के कार्य के आकलन के लिए योजना बनाना।

एससीईआरटी एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अध्यापकों (Mentor) के लिए दिशा निर्देश जारी करेंगे जिससे कि वे छात्राध्यापकों को उचित मदद कर सके। शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य का कार्य है कि वह इन 10 दिन के दौरान छात्राध्यापकों से अन्तःक्रिया करें व उन्हें उचित योजना बनाने में मदद करें। इन्हें छात्राध्यापकों की हर टीम के साथ मिलकर 30 दिवसों में उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य की योजना बनवानी है।

संदर्भ पुस्तकें :– चकमक, परख, शैक्षिक संदर्भ, बुनियादी शिक्षा, खोजबीन, शिक्षक दिग्दर्शिका, बचपन, बालमित्र, बाल साहित्य।

1. अदम्य साहस –डॉ. अब्दुल कलाम
2. शिक्षा – स्वामी विवेकानंद।
3. भारतीय शिक्षा शास्त्री।
4. एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी, एवं न्यूपा की पत्रिकाएँ।

टीप :– छात्राध्यापक अन्य संदर्भ पुस्तकों की सूची बनायें तथा अध्ययन करें।

प्रोजेक्ट कार्य

छात्राध्यापकों को 30 दिवसीय कार्यक्रम के दौरान एक प्रोजेक्ट कार्य भी करना है। इस प्रोजेक्ट की तैयारी भी इन 10 दिनों के दौरान की जाएगी। प्रोजेक्ट कार्य के लिए 30 कालखण्ड के तुल्य समय निर्धारित किया गया है।

प्रोजेक्ट का मतलब है किसी एक विषय/समस्या को चुनकर उस पर गहराई से काम करना जो भी डेटा आपने एकत्रित की है उसको व्यवस्थित करना और फिर रिपोर्ट तैयार करना।

प्रोजेक्ट कार्य का उद्देश्य

पाठ्यक्रम में कई जगहों पर बच्चों के भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन सीखने–सिखाने के बारे में बातचीत की गई है। प्रोजेक्ट रखने का उद्देश्य है कि छात्राध्यापक को बच्चों के साथ अन्तःक्रिया करने और उन्हें गहराई से समझने का मौका मिले। साथ ही साथ समझने का अवसर भी मिले कि बच्चे गणित/भाषा/पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएं कैसे सीखते हैं। वह अपने कार्य को समझ पाएं, विश्लेषित कर पाएं व उसका आकलन कर पाएं।

कैसे करेंगे?

1. सबसे पहले आपको क्षेत्र चुनना पड़ेगा। इससे तात्पर्य यह है कि आपको यह सोचना होगा कि आप क्या पता करना चाहते हैं?

उदाहरण के लिए–

(i) बच्चों को जोड़ सीखने में क्या कठिनाई होती है?

(ii) समुदाय में कौन–कौनसी कारीगरी के कार्य होते हैं और ये कौशल कैसे सीखते हैं?

(iii) कक्षा 3 व 4 के बच्चों की बातचीत को रिकॉर्ड करना और देखना कि उसमें उनकी मातृभाषा की क्या झलक मिलती है।

(iv) लड़कियों की शिक्षा पर कक्षा के छात्र–छात्राओं, अभिभावकों, शिक्षकों तथा स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों के विचारों का संकलन तथा इस आधार पर उस गांव के लड़कियों की शिक्षा प्रोत्साहन की योजना बनाना।

(v) कम से कम 5 पालकों से (महिला व पुरूष से अलग–अलग बातचीत करके) शिक्षा से उनकी अपेक्षा समझना, अपने बच्चों की खास बातें, व कमजोरियों को उनसे समझना।

2. **प्रोजेक्ट प्रस्ताव बनाना–** प्रोजेक्ट के प्रस्ताव में निम्नलिखित बातें शामिल कर सकते हैं।

प्रोजेक्ट की विस्तृत योजना बनाना जिसमें–

(i) प्रोजेक्ट का विषय तथा यह विषय अपने कार्य करने हेतु क्यों चुना उसके बारे में एक संक्षिप्त नोट लिखा जाएगा।

(ii) किन लोगों के साथ बातचीत करेंगे (जैसे– माता–पिता, बच्चे, समुदाय के अन्य व्यक्ति, शिक्षक) क्या बातचीत करेंगे? अथवा स्कूल की किस कक्षा के साथ काम करेंगे, किस विषय पर, बच्चों के साथ कैसे अन्तर्क्रिया करेंगे, क्या गतिविधियां होगी इत्यादि सम्मिलित होगा।

(iii) आप जिन बच्चों/लोगों के साथ काम करेंगे उनकी पृष्ठभूमि– जैसे– उम्र, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य आदि।

(iv) प्रस्ताव/योजना बनाने के बाद उसे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में सभी के सामने प्रस्तुत करें और शिक्षक व साथियों द्वारा दिये गये सुझाव व विचारों को ध्यान में रखकर अंतिम रूप दें।

3. प्रोजेक्ट पर काम करना

(i) इसमें आप अपने प्रोजेक्ट संबंधित सारे कार्यों का ब्योरा नियमित रूप से अपने दैनिक प्रतिवेदन में दर्ज करें। आप द्वारा की गई प्रत्येक गतिविधि तथा अपने सारे अवलोकनों को दैनिक प्रतिवेदन में लिखें। साथ ही विषय के सन्दर्भ में व्यक्तियों के साथ जो भी आपके अनुभव हुए हैं उनको भी दर्ज करें।

(ii) यह भी हो सकता है कि आपके द्वारा की जा रही गतिविधि की दिशा या निष्कर्ष आपकी उम्मीद के अनुरूप नहीं आ रहे हैं। इससे आपको चिंतित नहीं होना है। आपको ईमानदारी से अपने अनुभव/अवलोकन लिखने चाहिए तथा यह समझने की कोशिश करना चाहिए कि वह गतिविधि क्यों असफल रही।

(iii) अगर प्रोजेक्ट करते वक्त बीच में कभी आपको अपने प्रोजेक्ट के उद्देश्य बदलने की जरूरत महसूस हो, तो आप कर सकते हैं साथ ही इसे आप अपनी दैनिक प्रतिवेदन में लिखे। अगले चरण में आपको इससे मदद मिल सकती है।

4. रिपोर्ट तैयार करना

प्रोजेक्ट पूरा हो जाने पर आपको इसकी रिपोर्ट लिखनी होगी जो सरल भाषा में स्पष्ट व सटीक ढंग से हो। रिपोर्ट से यह मालूम हो सके कि आपको प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए किन–किन स्थितियों से जाना पड़ा और कितना श्रम करना पड़ा। रिपोर्ट में निम्नलिखित बातें शामिल करना चाहिए।

(i) प्रोजेक्ट का लक्ष्य/उद्देश्य, उसे चुनने के पीछे कारण, संक्षेप्त में लिखें। प्रोजेक्ट का प्रस्ताव लिखते वक्त आप यह काम कर चुके होंगे पर यहां यह थोड़ी विस्तृत होगी।

(ii) जिन लोगों के साथ काम किया उनके बारे में जानकारी शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि।

(iii) अध्ययन का जो तरीका अपनाया, उसकी संक्षिप्त रूपरेखा। आपके परिणामों के संबंधित सामग्री और आंकड़े जैसे जिन खेलों, टेस्ट, तथ्यों आदि का उपयोग किया हो।

(iv) आपके अवलोकन/परिणामों का विश्लेषण।

(v) कारण सहित आपके निष्कर्ष।

(vi) प्रोजेक्ट स्वरूप कार्य करने के फलस्वरूप आपने संबंधित दिवस में सीखने–सिखाने के बारे में क्या सीखा। रिपोर्ट के साथ उन सभी खेलों/उपकरणों/प्रश्न आदि की प्रतियां लगायें जिनका उपयोग प्रोजेक्ट के दौरान किया हो।

(vii) आपके प्रोजेक्ट की सफलता व आपकी सफलता का आंकलन इस बात पर होगा कि आपने कितनी स्पष्टता व सच्चाई से अपने कार्य का आलोचनात्मक अवलोकन व विश्लेषण किया है। साथ ही आपने अपने अनुभवों का किस प्रकार दस्तावेजीकरण किया है।

(viii) अपने प्रकल्प (Project) में सहायता करने वाले व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करें।

प्रोजेक्ट के संदर्भ में छात्राध्यापक के लिए निर्देश –

(i) प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने से पहले, अपने शिक्षक प्रशिक्षण संस्था शिक्षक को प्रोजेक्ट प्रस्ताव की जानकारी देवें एवं आवश्यकतानुसार चर्चा करें।

(ii) शिक्षक प्रशिक्षण संस्था शिक्षक आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं कि किस तरह का प्रोजेक्ट करें और किस ढंग से आगे बढ़ें इसलिए उनसे सम्पर्क करें।

(iii) प्रोजेक्ट के काम के दौरान आप हर चरण में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था शिक्षक से सलाह–मशविरा कर सकते हैं इसके लिए परस्पर सुविधाजनक समय तय कर लें।

प्रोजेक्ट के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था शिक्षक के लिए निर्देश

(i) छात्राध्यापक के 20 दिवस शाला अनुभव के आधार पर उसे प्रोजेक्ट चुनने एवं आगे बढ़ने में मदद करें।

(ii) प्रोजेक्ट के लिए उपयोगी किताबें, लेख आदि सामग्री सुझाये एवं उपलब्ध करायें।

(iii) प्रोजेक्ट के दौरान छात्राध्यापकों को आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए तैयार रहे। इसके लिए परस्पर सुविधाजनक समय तय कर लें।

(iv) आधा दिन एक छात्राध्यापक कार्य करेगा, दूसरा अवलोकन करेगा और आधा दिन दूसरा कार्य करेगा पहला अवलोकन करेगा। दूसरे दिन के लिए दोनों मिलकर योजना बनायेंगे।

(v) अवलोकनकर्ता के रूप में कक्षा अवलोकन करना एवं कक्षा अवलोकन प्रपत्र भरना। कक्षा अवलोकन का प्रतिवेदन हर रोज तैयार करना।

(vi) स्थानीय खेलों की जानकारी प्राप्त कर बच्चों के साथ खेलना।

(vii) सप्ताह के कार्य पर प्रतिवेदन लिखना।

सहयोगी के शिक्षण अवलोकन के अंतर्गत निम्न गतिविधियां एवं सूचनाएं अपेक्षित हैं–

(i) क्या साथी छात्राध्यापक ने बच्चों से बातचीत की व उनके विचार को सुना?

(ii) क्या छात्राध्यापक ने योजना उसी तरह लागू की जैसे सोचा था।

(iii) कक्षा में क्या महत्वपूर्ण बिन्दु आये ?

(iv) छात्राध्यापक ने किन तरीकों गतिविधियों, क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ाना तय किया था?

(v) यदि योजना में बदलाव किया तो क्या और क्यों करना पड़ा?

(vi) क्या कक्षा अवलोकन के बाद लगता है कि गतिविधियां उपयुक्त थी या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता थीं ?

(vii) सीखने की प्रक्रिया में बच्चों के सीखने की भागीदारी, उस सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में क्या भाषा बच्चों की समझ में आ रही थी।

(viii) छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा का माहौल कैसा था, कितने बच्चे भाग ले रहे थे, बोल रहे थे, कार्य के बारे में आपस में चर्चा कर रहे थे और कितने बच्चे सुन रहे थे।

(ix) शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट्ट का उपयोग हुआ हो तो किस तरह से।

<u>छात्राध्यापकों को 45 दिवसों में उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य/भूमिका से अवगत कराना।</u>

1 शालेय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम (कुल 65 दिवस) की शिक्षण योजना बनाने के उपरान्त आवंटित विद्यालय में प्रत्येक छात्राध्यापक पर्यावरण अध्ययन (10 दिवस अनिवार्यतः) एवं अन्य विषयों का शिक्षण कार्य (शेष दिवसों में) करेगा। यह कार्य छात्राध्यापकों द्वारा पूर्णकालिक शिक्षक के रूप में किया जायेगा। शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षण योजना के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास किया जायेगा। इस हेतु रोज की कक्षा उपरान्त समीक्षा करके दोनों छात्राध्यापक कक्षा की परिस्थिति अनुसार शिक्षण योजना में परिवर्तन भी करेंगे। यहां यह दोहराना उचित होगा कि छात्राध्यापक अपने एक साथी के साथ कार्य करेंगे, उसके द्वारा किये जा रहे शिक्षण कार्य का भी अवलोकन करेंगे। तथा स्वयं भी पढ़ाएंगे जिसका अवलोकन उसका साथी करेगा। इस अवलोकनों के आधार पर अपनी तथा साथी की शिक्षण योजना में बेहतरी के लिए प्रयास करेंगे। हर कक्षा में दोनों छात्राध्यापक साथ मिल कर जायेंगे ताकि आपस में चर्चा कर सकें। जब पहला छात्राध्यापक अध्यापन कार्य करेगा, दूसरा अवलोकन करेगा, जब दूसरा छात्राध्यापक अध्यापन करेगा तब पहला अवलोकन करेगा। समुदाय से संपर्क, पाठ्य सहगामी क्रियायें एवं दूसरे दिन के लिए योजना भी दोनों मिलकर बनायेंगे।

2 इस अवलोकन कार्य के अंतर्गत छात्राध्यापकों द्वारा निम्न गतिविधियाँ एवं सूचनाएँ प्राप्त करना अपेक्षित है–

- क्या साथी छात्राध्यापक ने बच्चों से बातचीत की कि– आज क्या पढ़ेंगे? कैसे काम करेंगे? आदि
- क्या छात्राध्यापक को विषय–वस्तु का पर्याप्त ज्ञान था?
- क्या छात्राध्यापक द्वारा बच्चों के सीखने के स्तर का पता लगाया गया? यदि हॉ तो कैसे?
- किन गतिविधियों, क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ाया गया?
- क्या गतिविधियाँ उपयुक्त थीं या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता है?
- सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी कैसी थी? (कितने बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल थे?)
- सीखने की प्रक्रिया के दौरान वातावरण उपयुक्त रहा अथवा कोई व्यवधान रहा?
- शिक्षक के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया कैसी थी?
- सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षण प्रविधि की उपयुक्तता कैसी थी?
- शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपटट का उपयोग (हुआ किस तरह से?)।
- शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री क्या थी? कैसे उपयोग किया?

- आपके विचार से बच्चों ने कितना सीखा?
- और क्या किया जा सकता था, जिससे कक्षा और बेहतर होती।
- ऐसी स्थिति कितनी बार निर्मित हुई जब बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे? या नहीं समझ पा रहे थे?
- कोई विशेष तथ्य या घटना (उल्लेख करें)
- क्या कठिनाईयां आई और उसे आपने कैसे दूर करने की कोशिश की।

उपरोक्त सभी जानकारियों को एकत्र करने के लिए कक्षा अवलोकन का प्रपत्र 6 का उपयोग करें।

3. सहयोगी के रूप में छात्राध्यापक निम्नबिन्दुओं का ध्यान रखेंगे–

- दोनों एक समूह (टीम) के रूप में कार्य करेंगे।
- सहयोगी, छात्राध्यापक के अध्यापन का ध्यान से अवलोकन करेंगे तथा अपने महत्वपूर्ण सुझाव जैसे – ''बहुत अच्छा लगा'' और कर लेते तो और अच्छा होता'', आदि कक्षा के पश्चात् साथी को बताएंगे। इसमें यह और ऐसा को सटीक स्पष्टता से उदाहरण के साथ लिखना होगा।
- कक्षा में यदि साथी की आवाज धीमी है या उससे श्यामपट्ट पर लिखते समय किसी प्रकार की भाषाई त्रुटि हो गयी हो तो उस सन्दर्भ में अपने साथी दोस्त का ध्यान संयम व इज्जत से आकृष्ट कराएंगे।
- कक्षा अवलोकन की रिपोर्ट दोनों मिलकर बनाएंगें जिसमें अच्छी बातों व कमियों का उल्लेख होगा। इसमें स्वमूल्यांकन पर भी चर्चा की जाएगी। जैसे– पढ़ाने वाला शिक्षक भी लिखे ''हमें ऐसा करते तो और ज्यादा अच्छा होता'' और इससे सीखकर आगे हम क्या बदलाव करेंगे। इस विश्लेषण का पैनापन व सुधार के सुझाव आकलन के प्रमुख आधार होंगे।

4. छात्राध्यापक अपने मूल्यांकन के बिन्दुओं पर समझ बनाएंगे। इस हेतु वे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

5. छात्राध्यापकों को 30 दिवसीय शिक्षण कार्यक्रम के दौरान एक प्रोजेक्ट भी करना होगा। यह कक्षा अध्यापन अथवा समुदाय अध्ययन अथवा उसके साथ कार्य का हो सकता है। प्रोजेक्ट कार्य के लिए 30 कालखण्ड के तुल्य समय निर्धारित किया गया है। प्रोजेक्ट कोई अलग कार्य न होकर छात्राध्यापकों द्वारा दिया जाने वाले विषय शिक्षण अथवा समुदाय को शिक्षा में शामिल करना ही है। जैसे छात्राध्यापक को कक्षा 4 में स्थानीयमान सिखाना है, अथवा कक्षा 2 के बच्चों को पढ़ना–सीखने में मदद करना है अथवा कुछ और विशेष हिस्सा बच्चों को करवाने का प्रयास करना है या फिर यह प्रयास करना है कि अभिभावकों की भूमिका कैसे बढ़ा सकते हैं? छात्राध्यापकों को प्रोजेक्ट के लिए चयनित अवधारणाओं अथवा कौशलों की स्पष्ट रूप से समझना, उसमें बच्चों की समझ को जानना व फिर उन्हें सीखने में मदद करने के लिए पढ़ाना, सम्बंधित काम करवाना, सवाल बनाना व उन पर चर्चा करना आदि के लिए पहले से तैयारी करनी होगी। बच्चों को कैसे पढ़ाना है आदि की रूपरेखा का निर्माण करना

होगा। प्रोजेक्ट के दौरान छात्राध्यापक शिक्षण कार्य के स्वरूप, प्रतिक्रिया व आगे बढ़ने के तरीके को नोट करेंगे। प्रोजेक्ट का लक्ष्य अपने तरीकों को फलीभूत करने का प्रयास करते हुए अवलोकनों को लिखना है व यह योजना बनानी है कि बच्चों ने जो सीखा है उसका आंकलन कैसे होगा।

द. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अध्यापकों (Mentor) के लिए दिशा निर्देश जारी करना–

1. प्रत्येक 10 छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन देने का कार्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के एक शिक्षक प्रशिक्षक का होगा। इनके द्वारा कम से कम 8 बार प्रत्येक प्रशिक्षार्थी समूह का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जावेगा। इस कार्य के लिए निम्नांकित कार्य योजना प्रस्तावित है–

I.	पहली व दूसरी बार अवलोकन	–	20 दिवसीय कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह में ।
II.	तीसरी व चौथी बार अवलोकन	–	30 दिवसीय कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह में।
III.	पांचवी व छठी बार अवलोकन	–	30 दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम सप्ताह में।
IV.	सातवीं व आठवीं बार अवलोकन	–	15 दिवसीय कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह में।

2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक, छात्राध्यापकों को शाला अनुभव कार्यक्रम पर आधारित मूल्यांकन प्रक्रिया को भली–भांति समझा देंगे ताकि छात्राध्यापक शाला अनुभव कार्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि को पूरी गंभीरता व सतर्कता से सम्पन्न कर सके।

3. स्कूल अवलोकन के समय पर्यवेक्षक मुख्य रूप से निम्नांकित बिन्दुओं को देखेंगे–

   - कार्य की प्रगति सिर्फ यह नहीं कि कार्य ठीक से हो रहा है कि नहीं पर यह भी कि ऐसी योजना बन रही है जिसमें बच्चों की भागीदारी की अपेक्षा है, स्पष्ट लिखी जा रही है आदि।
   - प्रतिवेदन लेखन की प्रगति सिर्फ यह नहीं कि प्रतिवेदन लिखे जा रहे हैं या नहीं पर उनकी क्या गुणवत्ता है?
   - स्कूल द्वारा दिया जा रहा सहयोग पर्याप्त है, उसमें कुछ बदलाव की आवश्यकता है, शाला के शिक्षकों की, प्रधान पाठक के क्या फीडबैक है आदि।
   - प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति।
   - शिक्षक के रुप में छात्राध्यापक की क्षमता का आकलन।

4. पर्यवेक्षक के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक अवलोकन के समय शाला में ही छात्राध्यापकों से बात करें, उनके अनुभव, कठिनाइयों आदि को सुनें एवं उचित मार्गदर्शन दें।

5. शालाओं के प्रधान पाठक प्रत्येक छात्राध्यापकों द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण लिखित रूप से रखेंगे जिसकी सहायता से छात्राध्यापकों का मूल्यांकन किया जा सके।

6. छात्राध्यापक प्रधान अध्यापक से अनुशासन संबंधी रिपोर्ट प्राप्त करेंगे, जिसमें उनकी उपस्थिति/अनुपस्थिति, शाला में समय पर उपस्थिति, शाला छोड़ने के समय की जानकारी, कार्य व्यवहार तथा कार्य कुशलता जैसे – कक्षा प्रबंधन, अध्यापन, टी.एल.एम. का उपयोग, बच्चों के साथ खेल, शालेय कार्यो में योगदान आदि का मुख्य रूप से उल्लेख होगा।

7. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक यह सुनिश्चित करें कि शाला के शिक्षक छात्राध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन करेंगे, प्रतिदिन रिपोर्ट भी लिखेंगे तथा छात्राध्यापकों से चर्चा भी करेंगे।

8. निम्न बिंदुओं पर शक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक टीप लिखेंगे :–

- प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति।
- शिक्षक के रूप में छात्राध्यापक की क्षमता का आकलन।
- स्कूल के साथ संवाद की गुणवत्ता व स्कूल से मिल रहा सहयोग।
- प्रोजेक्ट का संचालन उचित प्रकार से हो पा रहा है या नहीं।
- प्रोजेक्ट क्रियान्वयन में आने वाली समस्याएँ।

9. सभी छात्राध्यापकों से Feed Back लेने हेतु शनिवार को शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में मीटिंग बुलायी जाए। ये प्रथम तथा चतुर्थ सप्ताह के शनिवार हो सकते हैं। प्रति तीसरे दिन शाला में छात्राध्यापकों की प्रधान अध्यापक तथा अन्य अध्यापकों के साथ बैठक होगी। इसकी सूचना वे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक को भी देंगे ताकि वे भी उसमें उपस्थित हो सकें। समीक्षा बैठक, सप्ताह के कार्यों की रिपोर्ट के साथ प्रति सप्ताह एक बार आयोजित की जा सकती है। इस तरह की बैठक के दौरान जो चर्चाएँ हुई उसका व्यवस्थित दस्तावेजीकरण भी होना चाहिए।

10. माह में एक बार किसी शैक्षिक विषय पर कोई छात्राध्यापक अपने विचार को 10 से 15 मिनटों में प्रस्तुत करें। उस पर 10 से 15 मिनटों में चर्चा भी हो। छात्राध्यापकों की स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता बढ़ाने के लिए यह जरूरी है। प्रत्येक छात्राध्यापक का सहभाग होने पर जोर दिया जाए।

य मूल्यांकन प्रक्रिया

- 65 दिन बाद शिक्षक प्रशिक्षण संस्था आने पर छात्राध्यापकों को अपने सभी अभिलेख पूर्ण एवं व्यवस्थित करने हेतु एक सप्ताह का समय दिया जाए। तत्पश्चात् आगे उल्लेखित तरीके से उनका समूहवार मूल्यांकन किया जाए।

- मूल्यांकन में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के सभी शिक्षक प्रशिक्षक एवं संबंधित शालाओं के प्रधान पाठक सम्मिलित होंगे। प्रधान अध्यापक को समय एवं तिथि की सूचना देकर मूल्यांकन हेतु आमंत्रित करें।

  - मूल्यांकन छात्रों के कार्य के रिकार्ड, मेन्टर व प्रधान पाठक की रिपोर्ट व छात्र के कार्य के प्रस्तुतीकरण के आधार पर होगा।

3.6 छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में 30 दिवसीय शिक्षण अनुभव में किए जाने वाले कार्य –

- शिक्षण योजना का निर्माण, विश्लेषण, पुनरावलोकन, पुनः निर्माण एवं क्रियान्वयन।
- शिक्षक के रूप में पढ़ाने के अनुभव का प्रतिवेदन लिखना तथा स्वमूल्यांकन प्रपत्र क्रं. 5 को भरना।
- अवलोकनकर्ता के रूप में कक्षा अवलोकन प्रतिवेदन लिखना तथा प्रपत्र क्रं. 6 को भरना।

- प्रोजेक्ट का निर्माण एवं क्रियान्वयन–प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा प्रोजेक्ट कार्य कर रिपोर्ट तैयार करना (प्रपत्र क्रं. ....के अनुसार)।
- बच्चों की प्रोफाइल तैयार करना (प्रपत्र क्रं. 10 के अनुसार) ।
- स्थानीय खेलों की जानकारी प्राप्त कर बच्चों के लिए उनका आयोजन करना तथा स्वयं भी शामिल होना। (8 दिनों के खेल अनुभव को रिपोर्ट के रूप में लिखना)
- सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन कर स्वयं भी सहभागिता करना।
- प्रत्येक तीसरे दिन (सप्ताह में दो बार) स्कूल प्रधान पाठक व शिक्षक से चर्चा करना व शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की साप्ताहिक समीक्षा बैठक चर्चा में शामिल होकर उसका प्रतिवेदन अपने काम के संदर्भ में लिखना।
- शैक्षिक गुणवत्ता के लिए समुदाय से चर्चा कर सहभागिता बढ़ाना व उनके अभिमतों को संकलित व विश्लेषित करना।
- किसी कक्षा के अभिभावकों की बैठक बुलाई जाए। उनमें अभिभावकों का दृष्टिकोण समझने के साथ उनका उद्बोधन करने हेतु छात्राध्यापक/शालाध्यापक /प्रधानाध्यापक अपने विचार अभिभावकों के सामने रखें।

तृतीय चरण

उपरोक्त चरण के मुख्य उद्देश्य हैं–

1. छात्राध्यापक अपने प्रोजेक्ट कार्य का स्व–मूल्यांकन करें व यह समझ पाएं कि उससे शिक्षण के बारे में, बच्चों के सीखने के बारे में उन्होंने क्या–क्या सीखा व अपने कार्य को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं। साथ ही उनके कार्य में सुधार की कहां–कहां गुंजाइश है, उन्हें और क्या–क्या सीखने की जरूरत है।
2. छात्राध्यापक यह समझ पाएं कि अपने कार्य का आंकलन कैसे करते हैं, व साथी को फीडबैक कैसे देते हैं, उसकी मदद कैसे करते हैं व टीम में कैसे काम करते हैं?
3. छात्राध्यापक यह सीख सकें की रिपोर्ट कैसे तैयार करते हैं।
4. बच्चों व स्कूल को समझना तथा बच्चों को सिखाने की चुनौती व आनन्द का अनुभव कर पाना।

इस चरण में तीन कार्य करने हैं–

1. 5 दिवस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था दस्तावेजीकरण व स्व–मूल्यांकन की तैयारी।
2. 5 दिवस स्कूल में छात्राध्याक स्व–मूल्यांकन हेतु कार्य करना।
3. 10 दिवस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में रिपोर्ट तैयार करना।

3.7 शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में 5 दिवस में छात्राध्यापकों द्वारा 30 दिवसीय कार्य का स्व–मूल्यांकन, दस्तावेजीकरण व तैयारी।

इस चरण के उद्देश्य–

- छात्राध्यापक अपने कार्य को व्यवस्थित रूप से संकलित कर पाएं।
- छात्राध्यापक यह समझ पाएं कि स्व–मूल्यांकन क्या होता है तथा स्व–मूल्यांकन क्यों करते हैं ?
- छात्राध्यापक स्व–मूल्यांकन के तरीके खोजें व उसके लिए उपकरण बनाएं।
- छात्राध्यापकों के द्वारा स्व–मूल्यांकन के लिए योजना बनवाना।
- उसके कार्य का मूल्यांकन कैसे होगा उस पर चर्चा व उनकी समझ बनाना।

शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए निर्देश –

(i) छात्राध्यापकों द्वारा 30 दिवस शाला में प्रोजेक्ट कार्य पूर्ण करके वापस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में आने के बाद कागजों को व्यवस्थित कर फाइलों में रखें व प्रोजेक्ट कार्य के अनुभवों को लिखकर प्रस्तुतीकरण तैयार करे।

- इसके बाद प्रत्येक Mentor अपने निर्धारित छात्राध्यापकों के समूह में इस कार्य का प्रस्तुतीकरण करवाएं।
- समूह में जब एक छात्राध्यापक प्रस्तुतीकरण कर रहा हो तब शेष सदस्य (साथी) समालोचनात्मक Feedback दें।
- यह प्रयास करें कि छात्राध्यापक समझें की समालोचनात्मक Feedback कैसी होती है।

छात्राध्यापकों द्वारा प्रस्तुतीकरण के कुछ बिन्दु इस प्रकार से हो सकते हैं–

- प्रोजेक्ट के उद्देश्य
- प्रोजेक्ट की योजना क्या थी? प्रोजेक्ट करने की प्रक्रिया क्या थी?
- प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन के दौरान योजना में क्या कोई बदलाव हुआ।
- प्रोजेक्ट का कितना हिस्सा हो पाया।
- क्या सामग्री का उपयोग हुआ कोई समस्या आई।
- बच्चों ने क्या सीखा? सीखा या नहीं यह कैसे पता किया?

(ii) इसके बाद स्व–मूल्यांकन से संबंधित कुछ अध्ययन सामग्री/बिन्दुओं पर चर्चा करें व करवाएं जैसे–

- जांच पत्र कैसे बनाते हैं/ प्रस्तुतीकरण व उसका क्रियान्वयन
- साक्षात्कार कैसे लेते हैं/सवालों के उदाहरण
- Group task के संबंध में
- Worksheet के संबंध में।

(iii) अगले तीन–चार दिनों में छात्राध्यापकों से स्व–मूल्यांकन हेतु उपकरण बनवाएं। उपकरण किए गए प्रोजेक्ट कार्य पर आधारित हो।

(iv) शेष दो दिनों में छात्राध्यापक, बनाए गए उपकरण का परीक्षण अपने साथियों पर करें व उनसे इस पर फीडबैक व्यवस्थित रूप से लें। (अपने मेंटर वाले समूह में)। व उन्हें अंतिम स्वरूप दें।

(v) उपकरणों का उपयोग किस प्रकार करेंगे, उन्हें कैसे एकत्रित करके व्यवस्थित करना है पर चर्चा।

3.8 छात्राध्यापकों द्वारा शालाओं में 15 दिवसीय शिक्षण अनुभव कार्य

(05 दिवस स्व–मूल्यांकन एवं 10 दिवस रिपोर्ट मूल्यांकन)

(i) कक्षा शिक्षण तथा कक्षा अवलोकन कार्य करना।

(ii) प्रोजेक्ट को पूर्ण कर उसका मूल्यांकन करना।

(iii) अपूर्ण कार्यों को पूर्ण करना।

1. 5 दिवस स्व–मूल्यांकन हेतु स्कूल में कार्य

इस चरण का उद्देश्य

- छात्राध्यापकों को कक्षा में परीक्षा अथवा अन्य कोई जांच के तरीके खोज पाने में समर्थ बनाना।
- छात्राध्यापकों का उपकरण उपयोग सीखना।
- छात्राध्यापकों का आंकड़े एकत्रित करना सीखना।
- प्राप्त आंकड़ों का संकलन करना सीखना।
- इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्राध्यापक अपने बनाए हुए स्व–मूल्यांकन की प्रक्रिया को क्रियान्वित करेंगे। क्रियान्वन के लिए शुरू के एक या दो दिन छात्राध्यापक बच्चों के साथ चर्चा कर सकते हैं। जिससे बच्चे व छात्राध्यापक के बीच संवाद से एक भय मुक्त वातावरण का निर्माण हो सके।

2. 10 दिवस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में रिपोर्ट तैयार करना।

इस चरण के उद्देश्य हैं कि–

- छात्राध्यापकों को आंकड़ों को व्यवस्थित करना सीखना।
- छात्राध्यापकों को आंकड़ों का विश्लेषण सीखना।
- छात्राध्यापकों को आंकड़ों से निष्कर्ष निकालना सीखना।
- छात्राध्यापकों का रिपोर्ट लिखना सीखना।

शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु मूल्यांकन योजना

मूल्यांकनकर्ता एवं आधार सामग्री	निर्धारित अंक
1. **प्रधान अध्यापक द्वारा** छात्राध्यापकों के व्यवहार तथा छात्राध्यापकों के 65 दिवसों के कार्य।	कुल अंक 30
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक द्वारा– छात्राध्यापकों के द्वारा प्रथम 20 दिनों के दौरान किए गए कार्य के प्रस्तुतीकरण पर, 45 दिनों के शिक्षण एवं अन्य कार्य तथा बच्चों के साथ अंतः क्रिया की रिपोर्ट के आधार पर	कुल अंक 20
3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था स्तर पर ▪ प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय शाला अनुभव कार्यक्रम में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण। ▪ अभ्यास शाला में किए गए शिक्षण कार्य, अवलोकन कार्य, प्रोजेक्ट तथा अन्य कार्य	कुल 50 अंक
कुल अंक	**100**

मूल्यांकन कैसे करेंगे?

प्रधान अध्यापक/शिक्षक द्वारा दिये जाने वाले 30 अंक – प्रधान अध्यापक/शिक्षक को शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में बुलाकर उसके द्वारा भरे प्रपत्रों के अनुसार मूल्यांकन हेतु बातचीत/चर्चा करके शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अध्यापकों द्वारा अंक दिये जायेंगे। **प्रधान अध्यापक व शिक्षक निम्न बिन्दुओं पर आंकलन करेंगे–**

9. अध्यापन कार्य।
10. नियमितता।
11. पूर्व तैयारी।
12. तारतम्यतता/क्रमबद्धता।
13. बैठक व्यवस्था की उपयुक्तता।
14. कक्षा के कार्य में छात्र भागीदारी ।
15. कितने बच्चे सीख पा रहे हैं।
16. भाषा का प्रयोग ।
17. बच्चों से बातचीत का तरीका।
18. छात्रों के फीड बैक ।
19. छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण में स्थानीय परिवेश और भाषा का प्रयोग किया जा रहा था या नहीं?
20. छात्राध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण था या नहीं (बच्चे उसकी बात सुन रहे थे या नहीं)?
21. छात्राध्यापक का कक्षा–नियंत्रण एवं कक्षागत व्यवहार।
22. छात्राध्यापक का समुदाय से संबंध ।
23. अनुपस्थित विद्यार्थियों को पुनः शाला में लाने के लिए उसके प्रयास।
24. बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षाकार्य की (नोट बुक या कापियों की) नियमित जांच।

मूल्यांकन पत्रक–1

प्रधानाध्यापक / शिक्षक द्वारा छात्राध्यापक का मूल्यांकन पत्रक (30%)

क्र. सं.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक	छात्राध्यापक							
		अधिकतम 3 अंक	T1	T2	T3	T4	T5	T6	T7	T8
1	छात्राध्यापक कक्षा में समय पर एवं पूरी तैयारी के साथ उपस्थिति ।									
2	छात्राध्यापक द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग व बच्चों के कार्य पर फीडबैक ।									
3	गतिविधियों की उपयुक्तता एवं बैठक व्यवस्था।									
4	बच्चों की समस्याओं के समाधान हेतु पालकों से संपर्क।									
5	छात्राध्यापक का बच्चें के साथ व्यवहार (आत्मीयता का स्तर)।									
6	बच्चों के सीखने में सफलता का स्तर।									
7	दैनिक शिक्षण योजना में आवश्यकतानुसार परितर्वतन (प्रतिदिन की समीक्षा के आधार पर)।									
8	बच्चों को सक्रिय सहभागी बना सकने में सफलता का स्तर।									
9	क्या बच्चे छात्राध्यापक को शिक्षक के रूप में स्वीकार करते थे?									
10.	अन्य गतिविधियों एवं शालेय कार्यों में सहभागिता।									
कुल योग 30										

टीप– प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम 3 अंक निर्धारित हैं। प्रधान पाठक / शिक्षक, छात्राध्यापक के समग्र क्रियाकलापों को देखकर इन क्षेत्रों में मूल्यांकन करेंगे।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर छात्राध्यापक के अध्यापन कार्यों का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जायेगा। आकलन किन बिन्दुओं पर होना है इस बात की समझाइश एवं जानकारी आरंभ से ही व्यापक रूप से देना शुरू करें ताकि पूरे 65 दिनों में छात्राध्यापक इन्हें भली–भाँति समझ सकें। क्योंकि मूल्यांकन का मुख्य उद्‌देश्य छात्राध्यापक का शिक्षण कौशल बढ़ाना ही नहीं, अपितु यह है कि एक नया व्यक्ति, शिक्षक के रूप में स्वयं को कक्षा में भली प्रकार समायोजित कर स्वयं को आत्मविश्वास पूर्वक शिक्षण कार्य के लिए प्रस्तुत कर सके।

अतः आंकलन से संबंधित आवश्यक दिशा–निर्देश छात्राध्यापकों को शुरू से ही दें, लेकिन आकलन इनमें से पाँच या छः गुणों के आधार पर ही करें। आशय यह है कि उपरोक्त बिन्दुओं में से कोई भी पाँच या छः विशेषताओं का छात्राध्यापक के शिक्षण में विकास होना आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक की प्रारंभिक, मध्य और अंतिम अवलोकन रिपोर्ट से भी इस तथ्य की पुष्टि होगी कि 65 दिनों के शाला– अनुभव द्वारा छात्राध्यापक में किन – किन गुणों का विकास हुआ है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक भी अवलोकन प्रपत्र भरेंगे और इसका प्रारूप प्रधानाध्यापक के अवलोकन प्रपत्र के जैसा ही होगा।

B) शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अध्यापक द्वारा छात्राध्यापक का मूल्यांकन पत्रक –

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य द्वारा छात्राध्यापक के क्रियाकलापों का वर्ष भर अवलोकन कर छात्राध्यापक का मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जावेगा –

मूल्यांकन पत्रक–2

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक	छात्राध्यापक की संख्या = 6					
			T1	T2	T3	T4	T5	T6
1	सर्वप्रथम शाला अवलोकन कर छात्राध्यापक द्वारा प्रस्तुत किये प्रतिवेदन के रिपोर्ट के आधार पर।	5						
2	छात्राध्यापक की शिक्षण अभिवृत्ति (व्यवहार) के आधार पर।	5						
3	शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में 10 दिन के दौरान पूर्ण किये गये कार्य के प्रस्तुतीकरण के आधार पर।	5						
4	शाला अवलोकन द्वारा छात्राध्यापक के कार्यो का मूल्यांकन।	5						
योग		20						

हस्ताक्षर — हस्ताक्षर

पी.एस.टी.ई. प्रभारी — प्राचार्य, शिक्षक प्रशिक्षण संस्था

मूल्यांकन पत्रक–3

50% के लिए मूल्यांकन

1. 10 दिन की रिपोर्ट
2. 5 दिन की तैयारी
3. अपने कार्य का प्रस्तुतीकरण
5. सवाल जवाब

अवलोकन प्रपत्र

शाला अनुभव कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक, अभ्यासपरक और अनुभव आधारित बनाने के प्रयास के तहत प्रत्येक स्तर पर हुए अनुभवों एवं क्रिया–कलापों की समुचित जानकारी एवं व्यवस्थित मूल्यांकन की दृष्टि से विभिन्न अवलोकन प्रपत्र विकसित किये गये हैं। जिनमें से कुछ छात्राध्यापको द्वारा, कुछ शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा और कुछ प्रधान पाठक अथवा स्कूल के शिक्षकों द्वारा भरे जायेंगे।

इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि छात्राध्यापकों के अवलोकन स्तर का विस्तार होगा। उनकी दृष्टि तीक्ष्ण और वृहत होगी और वह ऐसी अनेक छोटी–छोटी समस्याओं को भी देखना सीख सकेगें, जिन पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता। यह शिक्षण, शाला और छात्र तीनों के उन्नयन में सहायक होगा।

अवलोकन प्रपत्र निम्नलिखित बिन्दुओं से संबंधित होंगे –

15. शाला का अवलोकन ।
16. कक्षा का अवलोकन।
17. व्यक्तिगत डायरी–(प्रतिदिन स्कूल का कार्य पूरा होने के बाद लिखी जाए)।
18. बच्चों व शिक्षक की आपसी बातचीत एवं व्यवहार।
19. गाँव की (स्थानीय) जानकारी।
20. समुदाय से चर्चा।
21. शालेय अभिलेख।
22. आत्मावलोकन (स्व–मूल्यांकन)।
23. कक्षा अवलोकन का प्रारूप (सहयोगी के रूप में)।
24. प्रधानपाठक / शिक्षक द्वारा अवलोकन प्रपत्र।
25. प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट।
26. स्थानीय खेलों की जानकारी हेतु प्रपत्र।
27. दैनिक शिक्षण योजना का स्वरूप।
28. प्रधान अध्यापक के लिए प्रपत्र (10 दिवसीय)।
29. छात्राध्यापक की विशेषता (जैसे संगीत,कथाकथक अभिनय ,व्यापक चिंतन,संभाषण कौशल,चित्रकला आदि।)

अध्ययन सामग्री

अध्ययन सामग्री क्या हो सकती है? इस पर गंभीरता से विचार करें और संदर्भ ग्रंथों का चयन करें। कुछ पुस्तकों व सम्बंधित लेखों की सूची प्रस्तुत की जा रही है। (अध्ययन सामग्री) की सूची प्रस्तुत की जा रही है परंतु यह पर्याप्त नहीं है। इसमें अपनी चर्चा के आधार पर अन्य पुस्तकें जोडें।

पुस्तक

1. 'बच्चे कैसे सीखते हैं?' — जॉन हॉल्ट
2. 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' — कृष्ण कुमार
3. तोतोचान — तेत्सुको कुरोयानागी
4. महात्मा गांधी एवं विनोबा भावे इनके शिक्षण विषयक विचार।

पत्रिका

1.खोजबीन

2.बुनियादी शिक्षा

लेख (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पुस्तकालय से प्राप्त करें)

'अपने सीखने वालों को जाने'

'पर्यावरण सीखना माने क्या?'

'अंग्रेजी क्यों सीखें?'

'छात्र–शिक्षक सम्बन्ध'

'क्या समुदाय के साथ सम्बन्ध बनाना जरूरी है?'

'कक्षा व्यवस्था कैसी–कैसी?'

'पाठ्यपुस्तकों पर बातें (भाषा व गणित)'

'बच्चे भी बहुत कुछ जानते हैं।'

'बच्चे, खेल और सीखना'

'गतिविधि पर कुछ बातें'

मातृभाषा का अध्ययन

प्रान्त /देश के गौरवशाली इतिहास के पन्ने

उद्योग,कृषि, सामाजिक कार्य,शिक्षा ,साहित्य आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले के चरित्र । संदर्भ एन.बी.टी. के किताब।

प्रपत्र–1

व्यक्तिगत डायरी

द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापक,उनके प्रथम वर्ष के अनुभव के आधार पर शाला को और नजदीक से देखते हुए नियमित रूप से अपने अनुभवों को लिखें। **(20 दिवसीय)**

प्रपत्र–2

बच्चों से बातचीत

शाला लगने से पूर्व, अवकाश में एवं खेल के मैदान में बच्चों से विभिन्न बिंदुओं पर बातचीत की जा सकती है। जैसे–

1. जैसे क्या आपको स्कूल आना अच्छा लगता है, कौन–कौनसे विषय पढ़ते हैं? कौनसा विषय आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इसी तरह आप उनके मनपसंद शिक्षक के बारे में पूछ सकते हैं।
2. क्या शाला गणवेश यूनीफार्म में आना पंसद है ?
3. उनकी मनपसंद पुस्तक कौन सी है? क्यों है ?
4. उनके मित्रों के विषय में पूछ सकते हैं ?
5. उनके मनपसंद खेल के बारे में पूछ सकते हैं ?
6. शाला से उनका घर कितनी दूर है ? वे शाला कैसे आते हैं ?
7. भविष्य में वे क्या–क्या करना चाहते हैं ?
8. प्रधानाध्यापक / अध्यापक की कौन सी बात अच्छी लगती है ?

(20 दिवसीय)

प्रपत्र–3

शाला के प्रधान अध्यापक द्वारा किये गए कार्यों पर छात्राध्यापक की रिपोर्ट

शाला के प्रधान अध्यापक द्वारा किये गए कार्यों पर छात्राध्यापक स्वंय एक रिपोर्ट तैयार करें।

(20 दिवसीय)

प्रपत्र–4

शाला का समुदाय के साथ संबंध

1. विद्यालय का नाम
2. गठित समितियां कौन–कौनसी हैं व क्या–क्या काम करती हैं?

   इनकी बैठक कब–कब होती है? बैठक में किस तरह की बातचीत होती है? (किन्हीं दो में बैठकर देखें) कितने लोग उपस्थित हैं? क्या बैठक समय पर शुरू हुई? बैठक में कितने लोग बोले? क्या चर्चा केन्द्रित थी? बैठक कितने समय चली? क्या कुछ लोग काफी अधिक बोले?
3. अभिभावकों की स्कूल के बारे में राय, शिक्षकों के बारे में राय।

प्रपत्र – 5

स्व–मूल्यांकन प्रारूप (एक शिक्षक के रूप में)

1. छात्राध्यापक का नाम : ....
2. विद्यालय का नाम : ....
3. कक्षा ....विषय..

प्रकरण.. ....

दिनांक .... कुल छात्र संख्या ....

उपस्थिति......................................

क्या कक्षा निम्न बिन्दुओं के योजनानुसार चली। आप बच्चों से भी बातचीत कर सकते हैं कि आपके द्वारा पढ़ाना उनको कैसा लगा, कहां उनको कुछ भी समझ नहीं आया।

- क्या पढ़ाया?
- कहां लगा कि उससे भी बेहतर किया जा सकता था। क्या बेहतर किया जा सकता था?
- क्या बच्चों को कभी मारना या डाटना पड़ा यदि हां तो क्यों?
- यदि आपको ऐसा नहीं करना पड़ा तो बच्चों को कक्षा में कैसे बांधे रखा?
- क्या कक्षा योजना ठीक बनी थी?
- क्या ज्यादातर बच्चे कक्षा में सचेत रूप से भाग ले रहे थे?
- क्या बच्चों को भागीदारी का मौका था?
- क्या बच्चों को कक्षा में मजा आया?
- क्या मैंने अपने अनुभव के बारे में दूसरे साथियों से बातचीत की?
- योजना बनाई? उसमें परिवर्तन क्यों व क्या?
- क्या आपको मजा आया? कारण व उदाहरण के साथ लिखें।
- क्या आपको लगता है कि अधिकांश बच्चे समझ पाएं? क्या आधार है?

प्रपत्र – 6

कक्षा अवलोकन का प्रारूप (सहयोगी के रूप में)

छात्राध्यापक का नाम ....

विद्यालय का नाम ....

कक्षा.........................विषय ....प्रकरण...................................दिनांक.......................

- सहयोगी छात्राध्यापक को आपके द्वारा कक्षा अवलोकन उपरान्त क्या सुझाव दिए गए।
- सुझाव देने के क्या कारण थे।
- सुझाव के आधार पर सहयोगी के शिक्षण में हुए परिवर्तन।
- सहयोगी छात्राध्यापक को आपके द्वारा क्या–क्या सहयोग दिया गया।

प्रपत्र–7

शिक्षक / प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र

छात्राध्यापक का नाम .... विद्यालय का नाम..................................

कक्षा ....अध्यापन विषय.. दिनांक ....

1. क्या छात्राध्यापक शाला में समय पर उपस्थित होते थे?
2. क्या छात्राध्यापक कक्षा में पूर्व तैयारी के साथ आते थे ?
3. क्या उनकी पूर्व तैयारी अध्यापन के अनुकूल थी?
4. क्या अध्यापन कार्य दैनिक अध्यापन योजना के अनुरूप था? या नहीं ।
5. वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था?
6. शिक्षक ने छात्राध्यापक को कौन–कौन से सुझाव दिए?
7. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी?
8. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था?
9. शिक्षण प्रक्रिया हेतु प्रयुक्त TLM की उपयुक्तता क्या थी?
10. छात्राध्यापक द्वारा सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने हेतु कौन सी
11. गतिविधियां प्रयुक्त की गयी?
12. क्या प्रयुक्त भाषा कक्षा के बच्चों के स्तर के अनुसार थी?
13. क्या शिक्षण विधि बच्चों के स्तर के अनुरूप थी?
14. क्या छात्राध्यापक द्वारा छात्रों के दैनिक जीवन से विषय वस्तु को सम्बन्धित करके पढ़ाने की कोशिश की गई?
15. समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था?
16. अनुशासन एवं निर्देशों के पालन में सजगता।
17. शाला संचालन में सहयोग।
18. पाठों का शिक्षण कार्य।
19. अन्य क्रियाकलापों में सहभागिता।
20. समग्र अभिमत –

    - बच्चों की समझ
    - आत्म विश्वास
    - अभिव्यक्ति कौशल
    - संप्रेषण कौशल
    - समस्या समाधान कौशल आदि।

प्रपत्र – 8

प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट

छात्राध्यापक का नामः– ....

1. छात्राध्यापक को हुई कठिनाई के किन बिंदुओं पर प्रधानाध्यापक से सुझाव प्राप्त हुए।
2. छात्राध्यापक को प्रधानाध्यापक से किन बिंदुओं पर प्रशंसा प्राप्त हुई।
3. आपसी चर्चा द्वारा कौन से नए विचार उत्पन्न हुए ।
4. समीक्षा बैठक का परिणाम।
5. अगली समीक्षा बैठक की चर्चा के बिंदु।

प्रपत्र – 9

दैनिक शिक्षण योजना का स्वरूप

शाला का नामः ....

प्रशिक्षार्थी का नाम ....

कक्षा .... विषय ....

शिक्षण योजना क्र.	दिनांक	पाठ का नाम	क्या सिखायेंगे (कौशल जो विकसित किये जायेंगे / उद्देश्य)	कैसे सिखायेगें (गतिविधि / शिक्षण विधि)	सहायक सामग्री जो उपयोग करेंगे	बच्चों ने क्या सीखा	कितने बच्चों ने सीखा	कठिनाई	अगले दिन पाठयोजा में क्या परिवर्तन होगा।

प्रपत्र – 10

बच्चों के प्रोफाइल हेतु प्रारूप

(1) बच्चे का नामः................................ (2) पिता का नाम ....

(3) माता का नामः................................ (4) जन्मतिथि ....

(5) भाई / बहन की जानकारी–

भाई की संख्या .... बहन की संख्या ....

बच्चे का भाई बहनों में क्रमांक ....

भाई एवं बहनों की शैक्षणिक स्थिति ....

(6) पिता की जानकारी – शिक्षा – ....

व्यवसाय – ....

(7) माता की जानकारी – शिक्षा – ....

व्यवसाय – ....

(8) ग्राम का नाम ....

(9) एकल / संयुक्त परिवार (पिता के स्तर पर) –

(10) उपस्थिति नियमित / अनियमित ।

(11) कक्षोन्नति में रुकावट हुई हो तो उल्लेख करें – ....

(12) बच्चे की शारीरिक समस्या (यदि हो तो) – ....

(13) बच्चे के घर से शाला की दूरी (लगभग) ....

शाला की दूरी अधिक हो तो आवागमन का साधन ....

(14) बच्चे की शैक्षिक विकास हेतु शाला के अलावा पालक के द्वारा की गई अन्य व्यवस्था

हाँ तो उल्लेख करें – ....

(15) बच्चे को शाला में पढ़ने आना कैसा लगता है ....

(16) बच्चा आगे चलकर क्या बनना चाहता है ....

(17) बच्चे का शौक (Hobby) -

(18) बच्चे के कितने मित्र हैं – शाला में .... शाला के बाहर ....

(19) बच्चे को कौन सा विषय सर्वाधिक अच्छा लगता है – भाषा / गणित / पर्यावरण / अंग्रेजी

(20) खेलकूद / सांस्कृतिक एवं अन्य पाठ्यसामग्री क्रियाकलाप में भाग लेता है अथवा नहीं।

....

प्रपत्र – 11

<u>हस्तलिखित पत्रिका</u>

(1) प्रशिक्षार्थी का नाम : ....

(2) शाला का नाम : ....

(3) पत्रिका हेतु बच्चों को दिए गए मार्गदर्शन –

1. कहानी लिखना : ....

2. कविता लिखना : ....

3. कहानी संग्रह : ....

4. कविता संग्रह : ....

5. विज्ञान संबंधी जानकारी का संग्रह : ....

6. पर्यावरण संबंधी जानकारी का संग्रह : ....

7. विभिन्न पशु–पक्षी, स्थानों के चित्रों का संग्रह : ....

8. अ. पुस्तक परीक्षण।

9. अन्य : ....

(4) बिंदु क्रमांक 3 के अनुसार संग्रहित सामग्री की छायाप्रति करके पुस्तक का आकार दिया गया अथवा नहीं ....

(5) पुस्तक का आकार देने हेतु क्या किया गया ....

(6) किस प्रकार की सामग्री का संग्रह पर्याप्त हो पाया ....

(7) किस प्रकार की सामग्री का संग्रह अपर्याप्त है ....

(8) किस प्रकार की सामग्री संग्रहित नहीं हो पाई ....

(9) निर्मित हस्तलिखित पत्रिका से बच्चों को कौन–कौन से लाभ प्राप्त होगें? (कम से कम 10 बिंदुओं में लिखें) ....

....

(10) पत्रिका के संबंध मे पालकों से प्राप्त अभिमत ....

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

प्रोजेक्ट हेतु प्रपत्र 12

(1) छात्राध्यापक का नाम : ....

(2) शाला का नाम : ....

(3) कक्षा : .... (4) छात्र संख्या : .... (5) विषय ....

(6) प्रकरण : ....

(7) भूमिका/प्रस्तावना..

(8) प्रकरण के चुनाव का कारण/आवश्यकता : ....

(9) उद्‌देश्य ....

(10) क्रियान्वयन की विधि (संक्षेप में)...

(11) अवलोकन तथा आंकडों का एकत्रीकरण...

(12) आंकडों का विश्लेषण ....

- गणना व व्याख्या

(13) संभावित अनुवर्ती कार्यवाही

.(14) प्रोजेक्ट पूरा करने में किस–किस का सहयोग लिया गया ।

....

(15) प्रोजेक्ट के परिणाम ....(14) प्रोजेक्ट के पूर्ण होने के उपरांत आने वाले परिवर्तन–.......................... (15) इस प्रोजेक्ट से आपने क्या–क्या सीखा (विस्तृत रूप से लिखें) ....

प्रपत्र 13

पाठ्य सहगामी क्रिया

(1) छात्राध्यापक का नाम : ....
(2) शाला का नाम : ....
(3) शाला के कुल विद्यार्थियों की संख्या :
छात्र : .... छात्रा : .... योग ....
(4) पूर्व में सांस्कृतिक, साहित्यिक,खेलकूद से संबंधित विद्यार्थियों की सूची (क्षेत्रवार) बनाने हेतु आपके द्वारा किया गया कार्य ....
....
(5) बिंदु क्रमांक (4) से प्राप्त जानकारी

1. सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र .... छात्रा .... योग ....
2. साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र .... छात्रा ....योग ....
3. खेलकूद कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र .... छात्रा .... योग ....

(6) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य (विस्तृत विवरण देवें ....

(7) साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य (विस्तृत विवरण देवें)

(8) खेलकूद में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य (विस्तृत विवरण देवें)

(9) बिंदु क्रमांक 6, 7 व 8 में आपने किस किसका सहयोग लिया ?

(10) बिंदु क्रमांक 6, 7, 8 के अंतर्गत किए गए कार्यो के पश्चात् रुचि लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या –

1. सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ....छात्रा .... योग ....
2. साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ....छात्रा .... योग ....
3. खेलकूद कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ....छात्रा .... योग ....

(11) आपके द्वारा शाला में कौन–कौन से कार्यक्रम आयोजित किए गए है ?

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम ....
2. साहित्यिक कार्यक्रम ....
3. खेलकूद संबंधी ....

(12) विभिन्न कार्यक्रमों में बच्चों को भाग लेने हेतु आपके द्वारा दिये गए प्रयासों के संबंध में :–

1. विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया ....
   ....
2. शाला के शिक्षकों/साथी प्रशिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया ....
   ....

(13) आगामी वर्ष यदि आपको इसी प्रकार का कार्य सौंपा जाए तो आप किन–किन बिंदुओं पर विशेष ध्यान देगें।

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के लिए निर्देश :–

- छात्राध्यापकों का समूह बनाते समय पुरूष एवं महिला छात्राध्यापकों का पृथक–पृथक समूह बनाया जा सकता है।
- पर्यवेक्षक एक दिन में 2 छात्रों का अवलोकन करने के पश्चात् मूल्यांकन करे।
- पहला अवलोकन शाला अनुभव कार्यक्रम के पहले पॉच दिनों के अंदर हो जाना चाहिए।
- दूसरा अवलोकन बीच के दिनों में हो ।
- तीसरा अवलोकन अंतिम पॉच दिनों में कराया जाए।
- पर्यवेक्षक–शाला में ही एक स्थान पर बैठ कर छात्राध्यापकों से बात करें उनके अनुभव, कठिनाईयों आदि को सुने एवं उचित मार्गदर्शन दें। यहां शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक की दो भूमिकाएँ है।

1. वह शिक्षक भी है

2. समन्वयक भी।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक बार–बार छात्राध्यापकों को यह स्मरण कराता रहे कि वह अपना तथा अपने साथी की अवलोकन रिपोर्ट वास्तविकता पर आधारित ही बनाये। किसी भी गुण या दोष का उल्लेख करने में संकोच न करे। क्योंकि अभी वह शिक्षक नहीं है, और उससे त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। इन त्रुटियों से उसके अंक कम नहीं होंगे बल्कि सुधार करने में मदद मिलेगी।

- उसी शाला का चयन करें, जहां उपरोक्त बैठक हेतु उचित स्थान आसानी से मिल जाए।
- पर्यवेक्षक एवं छात्राध्यापक बैठक की जानकारी भी प्रपत्र में भरें।
- 50 दिन के बीच किसी भी पूर्व निर्धारित शनिवार को सभी छात्राध्यापकों को शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में बुलाएं एवं उनके अनुभवों एवं परेशानियों को सुन कर सही मार्गदर्शन करें।
- 50 दिनों के शाला अनुभव के बाद संबंधित शालाओं के प्रधानपाठक अपने भरे हुए अवलोकन प्रपत्रों को लेकर निर्धारित तिथि में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था कार्यालय आएंगे। इन प्रपत्रों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक की सलाह के आधार पर 30% अंकों में से छात्राध्यापकों का मूल्यांकन किया जायेगा।
- कक्षा 1 से 5वीं तक की पुस्तकों के कम से कम 30 सेट छात्राध्यापकों के लिए उपलब्ध कराया जाये तथा छात्रों का समूह बनाकर उन्हें पाठ्यपुस्तकें पढ़ने का निर्देश दिया जाय। छात्राध्यापक पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करें–

A. इन पाठों से बच्चे क्या सीखेंगे?

B. आप इस पाठ को कैसे सिखायेंगे?

- दैनिक शिक्षण योजना के प्रारूप की जानकारी देकर कम से कम 5 शिक्षण योजनाओं की तैयारी करवायें।
- तत्पश्चात् कक्षा में अभ्यास कराएँ एवं उसमें गुणात्मक सुधार के लिए कक्षा में समीक्षा करें।
- शिक्षण योजना के आधार पर कौन सी दक्षताएँ विकसित हो सकती है उसकी समझ विकसित करने में मदद करें। **(दैनिक शिक्षण योजना)**
- सीखने की प्रक्रिया बढ़ाने के लिए पुस्तकालय से कुछ पुस्तकों का चयन कर उन्हें छात्राध्यापकों हेतु पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया जायेगा एवं उन पर चर्चा करवायी जायेगी। विषयों की प्रकृति से सम्बंधित आवश्यक संदर्भ सामग्री भी पढ़ने के लिए दी जाएगी।

  शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा नियमित शाला अवलोकन के लिए टीम बनाकर उन्हें कार्य सौपना एवं मार्गदर्शन के लिए आदेश प्रदान करना।

- अवलोकन द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन का अध्ययन, विश्लेषण शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के PSTE प्रभाग द्वारा किया जायेगा।
- छात्राध्यापक एवं प्रधान पाठक/शिक्षक के बीच समीक्षा बैठकों की रिपोर्ट का अवलोकन शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के व्याख्याता द्वारा किया जावेगा।

दो दिवसीय बैठक की तैयारी के लिये शिक्षक प्रशिक्षण संस्था को निर्देश

15 जुलाई तक प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापक एवं उसके एक सहयोगी शिक्षक का दो दिवसीय बैठक आयोजित करेगी। इसमें शालेय शिक्षण योजना संबंधी निम्न बिन्दु होंगेः–

- शालेय शिक्षण योजना से परिचय कराना एवं उद्देश्य बताना।
- प्रधानपाठकों की भूमिका एवं क्रियान्वयन स्पष्ट करना।
- कक्षाध्यापक की भूमिका एवं क्रियान्वयन
- छात्राध्यापक को बालक को समझने में मदद संबंधी निर्देश
- पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप संबंधी अभिलेख
- सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग एवं रख–रखाव
- पर्यावरण एवं अंग्रेजी शिक्षण अवलोकन के संबंध में निर्देश
- शिक्षण अनुभव में छात्राध्यापक एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के बीच समन्वय की भूमिका को स्पष्ट करना।
- छात्राध्यापक के समग्र कार्यो का मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन निर्धारित प्रपत्र में अंकों/ग्रेडेशन सहित भर कर भेजना।
- छात्राध्यापक द्वारा पालकों/समुदाय से जुड़ाव संबंधी अभिमत

30 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की गतिविधियों हेतु निर्देश :–

30 दिन में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक अकादमिक सदस्य द्वारा निम्नांकित बातें सिखायी जायेगी :–

- संदर्भग्रंथों का चयन कर पुस्तकालय से प्राप्त करना तथा उनके संदर्भित अंशों को छात्रों को पढ़ने हेतु उपलब्ध कराना एवं उन पर आपस में चर्चा करवाना।
- उनके द्वारा पढ़े गये प्रमुख अंशों पर समीक्षात्मक चर्चा कक्षा में करना।
- पर्यावरण एवं अंग्रेजी सीखने की विधियों के बारे में कक्षा में चर्चा करना।
- समग्र शिक्षण योजना एवं दैनिक डायरी भरने के लिये पर्याप्त निर्देश देना।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था अकादमिक सदस्य द्वारा शिक्षण योजना अभ्यास शाला में प्रदर्शित कर छात्राध्यापकों को व्यावहारिक जानकारी देना एवं सुझावात्मक समीक्षा करना।
- सहायक शिक्षक सामग्री का संग्रह/चुनाव/निर्माण के बारे में पर्याप्त रूप से समझाना।
- सीखने की प्रक्रिया के बारे में समझ बनाना, इस संबंध में अनुभव बताना तथा उनके शालेय अनुभवों को सुनना।
- बालमनोविज्ञान की सामान्य जानकारी देना।
- छात्राध्यापक द्वारा दैनिक शिक्षण योजना अभ्यास के लिये जो पर्यावरण एवं अंग्रेजी समूह बनाये गये है उनके कौशलों की पहचान करना एवं अभ्यास के तौर पर कक्षा में उनका अध्यापन प्रदर्शन कराना।

50 दिनों के शिक्षण अनुभव कार्यक्रम हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के लिए निर्देश :–

- आबंटित शाला का 50 दिन के शिक्षण अवलोकन में से प्रथम सप्ताह में कम से कम एक बार अवलोकन पूरा करके PSTE प्रभारी के पास रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था सदस्यों द्वारा कम से कम प्रत्येक छात्राध्यापक के कक्षा शिक्षण का कम से कम 3 बार या संभव हो तो इससे अधिक बार अवलोकन अवश्य किया जावेगा। अवलोकन के दौरान पूरे दिवस उसके अध्यापन कार्य को देखकर मार्गदर्शन दिया जावे तथा साप्ताहिक रिपोर्ट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था प्राचार्य को प्रस्तुत किया की जाएगी।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के सदस्यों द्वारा समग्र शिक्षण योजना समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर सभी छात्राध्यापकों से समग्र रिपोर्ट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में जमा कराया जावेगा।
- समग्र प्रपत्र और रिपोर्ट्स शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा मानीटरिंग, कक्षा शिक्षक/प्रधानपाठक के अभिमत व छात्राध्यापक में हुए शिक्षण कौशल के विकास के आधार पर अंत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के द्वारा छात्राध्यापकों का 100 अंकों में मूल्यांकन किया जाये।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य के लिए निर्देश :–

1. प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि शालेय शिक्षण योजना कार्यक्रम निर्धारित समयानुसार सुचारू रूप से संचालित हो रहे हों।
2. बैठक/प्रपत्र आदि के लिए बजट व्यवस्था सुनिश्चित कर लेवे।
3. PSTE Cell के लिए 1+6 सदस्य (1 प्रभारी+6 विषय अकादमिक सदस्य) सुनिश्चित कर लिया जावे।
4. प्रत्येक चरण के दौरान प्राचार्य द्वारा कम से कम 5 विभिन्न शालाओं का अवलोकन अवश्य किया जावे तथा अपना प्रतिवेदन PSTE के साथ साथ उचित माध्यम से SCERT शिक्षक शिक्षा प्रभाग को भी प्रेषित किया जाये।
5. स्टाफ सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित की जाये। तथा शिक्षण योजना/पाठ्येत्तर क्रियाकलापों एवं अन्य गतिविधियों में भी शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के समस्त अकादमिक सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करावे।
6. विद्यालय के प्रधान अध्यापक/शिक्षक/शिक्षक प्रशिक्षण संस्था अकादमिक सदस्य/ छात्राध्यापकों के मध्य समन्वय बनाये रखें।

प्रधान पाठकों के लिए निर्देशः–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा दो दिवसीय उन्मुखीकरण बैठक में आवश्यक रूप से उपस्थित रहे तथा प्राप्त निर्देशों को नोट करें।
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रपत्रों का गंभीरता से अध्ययन करें व अपनी शंकाओं पर चर्चा कर आश्वस्त हो जावें और अपनी समझ बढ़ाने का प्रयास करें।
3. छात्राध्यापकों को कक्षा अध्यापन के लिए स्थान, सामग्री आदि सुनिश्चित करावे।
4. छात्राध्यापकों के समस्त कार्यों का नियमित देखरेख करें तथा उसके नोट तैयार करते रहें।
5. प्रधानपाठक छात्राध्यापक के सहयोगी मार्गदर्शक की भूमिका अदा करे तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के साथ समन्वय करें।
6. छात्राध्यापकों के अध्यापन की समीक्षा के लिए सप्ताह में कम से कम 3 बार समीक्षा बैठकों का आयोजन करे।
7. छात्राध्यापक द्वारा छात्रों की प्रगति से संबंधित मूल्यांकन प्रपत्र को भरकर शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पास गोपनीय प्रतिवेदन के रूप में जमा करें।

विद्यालय में बहुकक्षा शिक्षण की स्थिति है तो पहले जानकारी प्राप्त करके एवं छात्राध्यापकों का बड़ा समूह भेजकर वहाँ दो छात्राध्यापकों को एक कक्षा पढ़ाने के अवसर प्रदान करें। एक छात्राध्यापक दिवस के प्रथम प्रहर में तथा दूसरा द्वितीय प्रहर में अध्यापन कार्य करें। इस दौरान जो छात्राध्यापक अध्यापन नहीं कर रहा होगा वह दूसरे छात्राध्यापक के अध्यापन का अवलोकन कर प्रपत्र तैयार करेगा। उस कालखण्ड में शाला द्वारा नियुक्त कक्षा शिक्षक भी छात्राध्यापक का अवलोकन करेगा। अवलोकन के बिन्दु निम्नांकित होंगे–

(i) शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों के समझ के स्तर की थी या नहीं?

(ii) कक्षा शिक्षण हेतु गतिविधियों का प्रयोग किया गया? वे कितने उपयोगी थे?

(iii) कक्षा स्तर के अनुकूल अध्यापन कार्य था या नहीं?

(iv) बच्चों की सहभागिता का स्तर कैसा था?

(v) क्या स्थानीय वातावरण को शामिल कर अध्यापन कार्य को बढ़ावा दिया गया था?

(vi) किस प्रकार की सहायक सामग्री का उपयोग किया गया? वह विषयानुरूप एवं उपयोगी थी या नहीं ?

8. कक्षा 1 से 5वीं तक की पुस्तकों के कम से कम 30 सेट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में रखना एवं छात्राध्यापकों को उपलब्ध कराना।

9. दैनिक शिक्षण योजना के प्रारूप की जानकारी देकर कम से कम 5 शिक्षण योजनाओं की तैयारी करके, कक्षा में अभ्यास कराना एवं उसमें सुधार के लिए कक्षा में समीक्षा कराना। कौन सी दक्षताएं विकसित हुई उसका अभ्यास कराकर समझ विकसित करना।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा नियमित शाला अवलोकन के लिए टीम बनाकर उन्हें कार्य सौपना एवं मार्गदर्शन के लिए आदेश प्रदान करना।

10. पाठ्यक्रम को समझने के लिए छात्रों को समूह बनाकर उनमें पाठ्यपुस्तकें प्रदान कर पाठ पढ़ने का निर्देश देना तथा उनसे चर्चा कराना–

A. इन पाठों से बच्चे क्या सीखेगे?
B. आप इस पाठ को कैसे सिखायेंगे?
C. बच्चों एवं स्कूल की समझ के लिए बातचीत करना।
(दैनिक शिक्षण योजना का प्रारूप संलग्न)

विद्यालय की समस्त पंजियों एवं शालेय अभिलेखों का अवलोकन

छात्राध्यापकों को करावें।

5. शाला के प्रधान पाठक अथवा कक्षा शिक्षक छात्राध्यापकों का औपचारिक परिचय करावें।

6. विद्यार्थियों एवं उनके पालकों का परिचय भी छात्राध्यापकों से करावें। ताकि छात्राध्यापक विद्यार्थियों की वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति से अवगत हो सकें। यह सुविधानुसार किया जाये।

7. शाला की समस्त समितियों से छात्राध्यापकों को परिचित करावें।

8. उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण में गुणवत्ता किस प्रकार से लायी जावे इसकी समझ छात्राध्यापक में लाने का प्रयास किया जाय।

खेल की रिपोर्ट को छात्राध्यापक भरेंगे। इसके द्वारा छात्राध्यापक द्वारा कक्षा में स्थानीय खेल खिलवाये जायेगें जिसके द्वारा छात्रों को माहौल मिल सकेगा तथा छात्राध्यापक एवं बच्चों को परस्पर एक–दूसरे को समझने में मदद मिलेगी।

<u>छात्राध्यापकों की शाला शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिर्पोट</u>

इस प्रपत्र को प्रधानाध्यापक द्वारा भरा जावेगा। इस प्रपत्र का उद्देश्य छात्राध्यापक की शिक्षण प्रक्रिया एवं उसकी अन्य गतिविधियों तथा कार्यशैली का अवलोकन करना है।

छात्राध्यापक का नामः–

अध्यापित कक्षा का नाम–

छात्राध्यापक की कक्षा के बच्चों से समायोजन की क्षमता–

छात्राध्यापक की कक्षा अध्यापन का तरीका, –

प्रयुक्त गतिविधियॉं–

TLM –

छात्रों की रूचि एवं सीखने में उत्तरोतर क्या प्रगति हुई?–

क्या बच्चे छात्राध्यापक की शिक्षण प्रक्रिया से संतुष्ट हैं?

क्या छात्राध्यापक के अन्य शिक्षकों, बच्चों, पालकों (बच्चों के माता–पिता)

गांव वाले के साथ व्यवहार सौहार्द्रपूर्ण है?

छात्राध्यापक द्वारा शाला की अन्य गतिविधियों में सहभागिता कैसी रही?

छात्राध्यापक के लिए प्रधानाध्यापक का अभिमत–

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर **प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर**

Appendix

बच्चों के प्रोफाइल के कुछ उदाहरण

प्रोफाइल & 1

सामान्य व्यवहार

छात्र ने विद्यालय की दिनचर्या में अपने को ढ़ालने में कुछ समय लिया। कुछ प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन से उसने कार्य एवं मनोरंजन में आरामदायक सामंजस्य बिठा लिया। अपने व्यक्तिगत काम में वह व्यवस्थित है एवं अपनी चीज़ों को ठीक तरीके से रख सकता है। अपने समूह के साथ उसका बर्ताव मित्रतापूर्ण है। वह अपने से बड़ो के साथ संवाद कर सकता है। विद्यालय में दिये जाने वाले मध्यान्ह भोजन को वह पसंद करने लगा है। परन्तु मेज़ पर थोड़ा अव्यवस्थित है। सामान्यतः उसका स्वास्थ्य अच्छा रहा है।

छात्र को स्कूल की संस्कृति व नई कक्षा दोनों में शामिल होने में समय लगा है। शुरू में उसे कहना के साथियों के साथ मिलने –जुलने में दिक्कत थी किन्तु इसमें काफी सुधार हुआ है। छात्र को विज्ञान से बहुत अच्छा लगता है और कीड़ें–मकौड़े उसे बहुत आकर्षक लगते हैं। वह हर प्रकार के जीवित प्राणियों व पौधों का ध्यान रखता है। पढ़ने–लिखने के अलावा वह नृत्य व मृदंगम बजाना सीख रहा है। खेल दिवस को उसने ऊंची कूद, क्रिकेट गेंद फेंकना और सुरंग में गेंद ले जाने में भाग लिया। नये जाने वाले छात्रों के कार्यक्रम में उसने एक समूह माना गया।

हिन्दी नाटक में वह सांसद बना और अपने विज्ञान शिक्षण के प्रोजेक्ट में उसने सहपाठियों को तारों के बारे में बताया। छात्र को अपनी कमजोरियों की कुछ समझ है, वह जानता है कि उसे अपनी लिखाई सुधारनी है और कार्य की गति बढ़ानी है। हालांकि उसकी अपने नियमों की सामान्यतः समझ बहुत ही अच्छी है, उसे अपनी लिखित जवाबों को सुधारा है। इसमें हस्त लिखाई, प्रस्तुतीकरण व सामग्री में जुड़ाव व बारीकियां दिखानी चाहिए।

प्रोफाइल – 2

विषय : गणित कक्षा 6–ए

शेखर का दिमाग तेज़ है और वह दिए गए सभी कार्यों को कर पाता है। वह ज्यादातर सवालों को दिमाग में करता है और जवाब पर पहुंचने के लिए अलग–अलग तरीके खोजने की कोशिश करता है। परन्तु इसमें उसे बहुत समय लग जाता है और फलस्वरूप वह दिए गए कार्य को निर्धारित समय पर नहीं कर पाता। वह सवाल करते समय, सवाल के steps नहीं लिखता है और इससे यह समझने में मुश्किल होती है कि वह उस जवाब पर कैसे पहुंचा है। शेखर को अपने काम में अब और ज्यादा केन्द्रित होना पड़ेगा और सवाल के steps (चरणों) को भी साफ लिखावट में लिखना पड़ेगा। उसको अपने काम के प्रस्तुतीकरण को भी बेहतर करने की जरूरत है।

संख्या ज्ञान		जैमिती	
संख्या के गुण	C	नैतिक आकृतियां बनाना।	A
भिन्न संख्याओं का जोड़ और घटाना	C	चांदा के साथ कोणों को बनाना और नापना	A
भिन्न संख्याओं का गुणा	C	सामान्य क्षमताएं	
दशमलव भिन्न संख्याओं का जोड़ और घटाना	C	नए विचारों को समझ पाना	C
दशमलव भिन्न संख्याओं का गुणा और भाग	C	काम का प्रस्तुतिकरण	A

C . बिल्कुल ठीक से समझना

A . पर्याप्त है।

S . सहयोग की जरूरत है।

R . मदद की जरूरत है।

प्रोफाइल – 3

विषय : सामाजिक विज्ञान कक्षा 6–ए

अमन इस विषय का एक अच्छा विद्यार्थी है। वह विषयवस्तु के बारे में बहुत उचित सवाल पूछता है और कक्षा में बात की जा रही अवधारणाओं के बारे में उसकी समझ अच्छी है।

चीन के बारे में सीखते समय, उसने घटनाओं के क्रम के बीच के जुड़ावों, भूत और वर्तमान के बीच के रिश्तों और चीन की संस्कृति और भारत जैसे अन्य संस्कृतियों के बीच की समानताओं और असमानताओं को, जल्दी ही पकड़ लिया। वह कक्षा की चर्चाओं में अपने विचारों और मतों को देते हुए बहुत सक्रिय भागीदारी निभाता है। किन्तु उसकी लिखने और बोलने की क्षमताओं में बहुत अंतर है। यहां तक की बहुत बार कहने पर भी उसने अपने दिए गए ज्यादातर कार्यों को समय पर पूरा नहीं किया है।

उसे अपने लिखित कार्य करते समय अपनी लिखावट, प्रस्तुतीकरण, जवाबों को लिखने के तरीके और विशेषकर अपनी काम करने की गति पर ध्यान देने की जरूरत है। उसने मानचित्र पर जगहों को ढूंढ़ना सीखा है और उसे इसका अभ्यास करना चाहिए।

उसे विश्व की अलग–अलग संस्कृतियों और सभ्यताओं की किताबें पढ़नी चाहिए।

प्रोफाइल – 5

विषय : गणित कक्षा 6–ए

तुलिका कुछ खोई–खोई रहने वाली बालिका है जो कुछ हद तक अपनी दुनिया में रहती है। कई मौकों पर वह जोश में होती है और रूचि से चर्चाओं में भाग लेती है परन्तु कई बार वह ख्यालों में खोई हुई प्रतीत हुई है और इसलिए उसने कक्षा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा खो दिया है। वह काम को पूरा करने में धीमी है। इसका लिखा हुआ काम साफ नहीं होता है और उसकी लिखाई भी अब तक संतुलित नहीं हुई है। वह कभी–कभी अपनी किताबें भी कक्षा में लाना भूल जाती है।

इसकी अवधारणात्मक क्षमता अच्छी है और उसमें सवाल हल करने की विलक्षण क्षमता है। वह अक्सर सवालों को अपने ढंग से हल तो कर लेती है किन्तु उसे कैसे किया यह नहीं बता पाती। यह मोटेतौर पर इसलिए है कि वह अपने विचारों को लिखने में आलम करती है। छात्रा को अपने प्रस्ततीकरण पर कार्य करने की आवश्यकता है, सफाई के स्तर पर और क्रमबद्धता के स्तर पर। इससे उसे विषय में मज़ा आएगा और वह आगे अच्छा कर पाएंगी।

प्रोफाइल – 6

Class - I

विषय			
English	Reading		
	Recitation		प्रगति अच्छी हो रही है।
	Understanding		
	Oral Work		Small sentences पढ़ लेता है।
	Hand writing		
	Spelling		
हिन्दी	अक्षर ज्ञान		
	पठन		प्रगति अच्छी हो रही है।
	सस्वर वाचन		
	मौखिक अभिव्यक्ति		मौखिक अभिव्यक्ति बहुत अच्छी है।
	लेख		लिखने में अभ्यास की आवश्यकता है।
गणित	गिनती (मौखिक)		
	अंकों की पहचान		प्रगति अच्छी है।
	जोड़		जोड़ व घटाने के सवाल कर लेता है।
	घटाना		
	गुणा		
	भाग		
New Maths			
	साधारण ज्ञान		
	सामाजिक ज्ञान		
	चित्रकला		चित्राकंन अच्छा है।
	दस्तकारी		
	संगीत		रुचि बढ़ने लगी है।
	नृत्य		
	खेल		
	स्वास्थ्य		

प्रोफाइल – 7

नाम :

कक्षा : 1

शारीरिक विकास : अच्छा हो रहा है।

बौद्विक विकास : अच्छा हो रहा है।

(अ) भाषा का विकास : शब्द भण्डार बढ़ रहा है।

(ब) आत्मसात करने की क्षमता : अच्छी है।

(स) अक्षर ज्ञान हिन्दी : वर्णमाला की पहचान है लिख लेता है।

अंग्रेजी : Capital & Small letters की पहचान है। लिख लेता है।

(द) अंक ज्ञान : 1 से 50 तक अंक ज्ञान है लिख लेता है।

इन्द्रिय विकास के साधन : रंगों व आकारों का ज्ञान हो रहा है।

जीवनोपयोगी प्रवृत्तियां

(अ) कहानी : सुनने में रुचि है।

(ब)चित्रकला : रंगों का चयन अच्छा है।

(स) संगीत, नृत्य : गाना गाने लगा है।

(द) हस्त कौशल : अच्छा है।

अभिनय : अच्छा है।

भावनात्मक विकास : आत्मविश्वासी बालक है।

सामाजिक विकास : सबके साथ मिलजुल कर रहने व खेलने लगा है।

अनुशासन : अच्छा है।

खेल : खिलौनों से खेलना अधिक पसंद है।

विशेष : जिज्ञासु बालक हैं।

प्रोफाइल – 8

नाम :

कक्षा : 1

शारीरिक विकास : अच्छा हो रहा है।

बौद्विक विकास : अच्छा हो रहा है।

(अ) भाषा का विकास : शब्द भण्डार बढ़ रहा है। लगभग 100 नये शब्दों की ज्ञान में वृद्धि हुई है।

(ब)आत्मसात करने की क्षमता : अच्छी है।

(स) अक्षर ज्ञान हिन्दी : वर्णमाला की पहचान है। बिना मात्रा के शब्द लिख व पढ़ लेता है।

अंग्रेजी : Capital & Small letters की पहचान है। लिख लेता है।

(द) अंक ज्ञान : 1 से 100 तक अंकों का मौखिक व लिखित ज्ञान है।

इन्द्रिय विकास के साधन : रूचिशील है।

जीवनोपयोगी प्रवृत्तियां

(अ) कहानी : सुनाने में रुचि है। चित्र पुस्तिकाएं पढ़ने में रुचि है।

(ब)चित्रकला : रंगों का चयन अच्छा है।

(स) संगीत, नृत्य : रुचि बढ़ रही है।

(द) हस्त कौशल : अच्छा है।

अभिनय : अच्छा है।

भावनात्मक विकास : व्यवस्थाप्रिय बालक है।

सामाजिक विकास : सहयोगी बालक है।

अनुशासन : अच्छा है।

खेल : खिलौनों से खेलना अधिक पसंद है।

विशेष : बालक को कक्षा 1 सीनियर में चढ़ाया गया है।

प्रोफाइल – 9

नाम :

जन्म दिनांक : 30 दिसम्बर, 2006

कक्षा : *playgroup*

शारीरिक विकास : बच्ची का Mascular Control अच्छा है। बच्ची सक्रियता का स्तर सराहनीय है। बच्ची विद्यालय में साफ–सुथरी आती है।

व्यक्तित्व सम्बन्धी विकास : बच्ची समूह में मिलजुल कर कार्य करती है। अपनी सभी चीज़ों को दूसरों के साथ करने लगी है। बच्ची हर कार्य को पूरे आत्मविश्वास के साथ करती है।

भाषा विकास : बच्ची की भाषा पूर्ण स्पष्ट तथा प्रवाहयुक्त है। अपनी हर बात को अच्छी तरह, अभिव्यकित कर देती है। शिक्षक के निर्देशों को सुनकर कार्य करती है।

मानसिक विकास : रंगों की की पहचान बहुत अच्छी है। आकारों की पहचान भी प्रशंसनीय है। छोटा–बड़ा, कम–ज्यादा आदि चीज़ों को क्रमबद्धता के साथ जमाना जानती है।

सृजनात्मकता का विकास : बच्ची की कहानी सुनने में बहुत रूचि है, कहानी को बहुत उत्सुकता के साथ सुनाती है। किसी भी बात को अच्छी तरह से प्रस्तुत करती है। खेल, कला, नृत्य तथा अन्य गतिविधियों में भी अत्यधिक भाग लेती है।

विशेष : बच्ची स्वभाव से चंचल तथा हँसमुख प्रवृत्ति की है। मोन्टेसरी एप्रेटस से खेलने में रूचि रखती है। चित्र बनाने तथा रंग भरने में अत्यधिक रूचि है।

July to Sept.

बालक प्रारम्भ से रोता था। उसमें वस्तु व्यवस्थित जगह पर रखने का प्रयास करता था। पंक्ति में चलना, गोले में बैठना, अपनी बारी का इंतजार करना, अभिवादन करने का प्रयास करता था। फिसल पट्टी, साईकिल चलाना, झूला–झूलना, रेत में खेलना, कविता, कहानी सुनने में रूचि लेना, खरगोश देखना, अपने दोस्तों से बातचीत करने का प्रयास। गट्टा पेटी जमाना आदि। व्यवस्था प्रिय बालक है।

October to Dec.

अपनी वस्तु व्यवस्थित जगह पर रखना। चित्र में रंग भरना – रंग की पहचान हो रही। अपनी बात अच्छी तरह से व्यण्क्त करता है। कुछ हिन्दी व अंग्रेजी के वर्ण पहचानने लगा है। मौखिक गिनती बोलने लगा है कुछ अंक पहचानने लगा है। तिलियों की पेटी, लम्बी सीढ़ी, गुलाबी मीनार आदि को व्यवस्थित जमाना। कक्षा कार्य में रूचि लेता है। भिण्डी के ठप्पे अंगुली से बिन्दी, ग्लेज़ पेपर की कटींग से चिपकाने का कार्य आदि में रूचि लेना।

Jan. to April

बालक workbook में कार्य करने लगा। अंकों की पहचान, वर्ण की हिन्दी व English में हो रही है। कुछ वर्ण लिखता भी है। कक्षा के सभी कार्यों में रूचि लेता है।

❁❄❁